महर्षि दयानन्द सरस्वती की
उत्तराधिकारिणी परोपकारिणी सभा
का मुख पत्र

**वर्ष** : ५९ **अंक** : १९

दयानन्दाब्द: १९३

विक्रम संवत्: आश्विन शुक्ल २०७४

कलि संवत्: ५११८

सृष्टि संवत्: १,९६,०८,५३,११८

**सम्पादक**

डॉ. दिनेशचन्द्र शर्मा

**प्रकाशक**-परोपकारिणी सभा,
केसरगंज, अजमेर- ३०५००१
दूरभाष: ०१४५-२४६०१६४

**मुद्रक**-श्री मोहनलाल तँवर
वैदिक यन्त्रालय, अजमेर।
दूरभाष : ०१४५-२४६०८३१

**परोपकारी का शुल्क**

**भारत में**

**वार्षिक**-२०० रु., **द्विवार्षिक**-३९० रु.,
**त्रिवार्षिक**-५८० रु.,
**आजीवन** (१५ वर्ष)-२००० रु.।
**एक प्रति** - १५/- रु.

**विदेश में**

**वार्षिक**-५० यू.के. पाउण्ड/८० यू.एस.डॉलर
**द्विवार्षिक**-९५ पा./१५२ डॉ.,
**त्रिवार्षिक**-१४० पा./२२५ डॉ.,
**आजीवन** (१५वर्ष)-५००पा./८०० डॉ.
**एक प्रति** - ३ पाउण्ड
**एक प्रति** - ४ डॉलर

**वैदिक पुस्तकालय** : ०१४५-२४६०१२०
**ऋषि उद्यान** : ०१४५-२६२१२७०

ओ३म्

*विद्याविलासमनसो धृतशीलशिक्षा:,*
*सत्यव्रता रहितमानमलापहारा:।*
*संसारदु:खदलनेन सुभूषिता ये,*
*धन्या नरा विहितकर्म परोपकारा:।।*

RNI. No. ३९५९ / ५९

# परोपकारी

## अक्टूबर प्रथम २०१७

## अनुक्रम


| | | |
|---|---|---|
| ०१. कालजयी आचार्य धर्मवीर | सम्पादकीय | ०४ |
| ०२. ईश्वर का जन्म | डॉ. धर्मवीर | ०६ |
| ०३. कुछ तड़प-कुछ झड़प | प्रा. राजेन्द्र 'जिज्ञासु' | ११ |
| ०४. दयानन्द-दर्शन | पं. उदयवीर शास्त्री | १५ |
| ०५. स्वामी दयानन्द और आर्यसमाज | महात्मा गाँधी | २० |
| ०६. आर्यसमाज और महात्मा गाँधी | पं. चमूपति एम.ए. | २१ |
| ०७. वैदिक पुस्तकालय के नये संस्करण | | २९ |
| ०८. लोकोत्तर धर्मवीर-६ | तपेन्द्र वेदालंकार | ३० |
| ०९. वेद गोष्ठी-२०१७ के लिए निर्धारित विषय | | ३३ |
| १०. शङ्का - समाधान - ९ | डॉ. वेदपाल | ३६ |
| ११. ऋषि मेला - २०१७ कार्यक्रम | | ३९ |
| १२. संस्था-समाचार | | ४० |
| १३. आर्यजगत् के समाचार | | ४१ |


www.paropkarinisabha.com
email : psabhaa@gmail.com
- उपनिषद्, दर्शन, प्रवचन आदि सुनने हेतु बटन दबाएँ -
www.paropkarinisabha.com → Daily Pravachan

*लेख में प्रकट किए विचारों के लिए सम्पादक उत्तरदायी नहीं है। किसी भी विवाद की परिस्थिति में न्यायक्षेत्र अजमेर ही होगा।*

सम्पादकीय

# कालजयी आचार्य धर्मवीर

एक वर्ष पूर्व इसी माह में महर्षि दयानन्द के प्रखर अनुयायी, विचारशिल्पी, वैदिक साधना के पथिक, अदम्य उत्साह से ऋषि के सिद्धान्तों को समर्पित आचार्य धर्मवीर जी हमें छोड़ कर चले गये। विगत एक वर्ष में सभा ने आचार्य धर्मवीर जी द्वारा निर्मित परम्पराओं का पालन करने में यथासामर्थ्य प्रयास किया है, लेकिन आचार्य धर्मवीर जी का अभाव सालता रहा। हाँ, यह अवश्य हुआ कि पदे-पदे उनके कथन, लेखन, हास्य और वैदिक परम्परा के विरुद्ध उनका तीव्र प्रहार हमें निरन्तर संबल देता रहा। जो अपेक्षा सभा को थी और जिन प्रकल्पों को उन्होंने इस वर्ष में पूरा करने का संकल्प लिया वे अपनी पूर्ण क्षमता के साथ यद्यपि पूर्ण आकार नहीं ले सके, लेकिन उन्होंने जो आधारभूमि तैयार की और जिस अध्यवसाय के साथ उन्होंने निरभिमानी होकर सभा को आर्यजगत में एक उच्च स्थान दिलाने का महनीय कार्य किया, उसके कारण सभा को विशेष उपक्रम नहीं करना पड़ा।

आचार्य धर्मवीर जी स्वयं में एक संस्था थे। आर्यधर्मानुयायी, विद्याचरणसम्पन्न, उनका व्यक्तित्व स्वतः निर्मित रहा जिसके कारण वे मानवीय संवेदनाओं के विशिष्ट पारखी बने थे। सत्य और व्यवहार में अद्‌भुत समन्वय उनकी प्रखर मेधा का ही परिणाम था। उन्होंने वैदिक चिन्तन के प्रति अद्वितीय जिजीविषा के साथ सभा के प्रति जो मिथकीय अवधारणा थी उसको तिरोहित ही नहीं किया, अपितु घात-प्रतिघातों के बीच सभा को महर्षि दयानन्द द्वारा निर्दिष्ट उद्देश्यों पर चलाते हुए धर्म-प्रचार के उच्च आसन पर प्रतिष्ठित किया और सबसे महत्वपूर्ण तथ्य यह है कि आर्यजगत में आचार्य धर्मवीर जी और परोपकारिणी सभा की पहचान एक-दूसरे से होने लगी। आचार्य धर्मवीर जी की प्रेरणा थी कि सभा को आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर बनाया जाए तथा अधुनातन वैज्ञानिक विधि के आधार पर और तकनीकी ज्ञान के द्वारा वैदिक साहित्य का प्रचार और प्रसार, महर्षि दयानन्द द्वारा लिखित मूल ग्रन्थों का डिजिटलाइजेशन, वैदिक पुस्तकालय का कम्प्यूटरीकरण तथा परोपकारी पत्रिका का कम्प्यूटरीकरण किया जाए। उन्हीं की प्रेरणा से वैदिक पुस्तकालय के एवं अन्य ग्रन्थों के प्रकाशन कार्य का भी कम्प्यूटरीकरण प्रस्तावित था जो अभी किया जाना शेष है।

यह सत्य है कि कोई भी व्यक्तित्व किसी अन्य व्यक्तित्व का प्रतिमूर्त नहीं हो सकता, लेकिन यह भी उतना ही सत्य है कि श्रद्धास्पद आचार्य धर्मवीर जी ने जिस दूरदर्शिता के आधार पर सभा के कार्यों को सम्पूर्ण भारत में ही नहीं, अपितु विश्वव्यापी आर्यजगत् में पहुँचाने का विशिष्ट कार्य किया वह उन जैसे धुरंधर विद्वानों के द्वारा ही सम्भव हो सकता था। उनका वह कथन कि, महर्षि दयानन्द द्वारा जो रेखा खींची गई है उसी रेखा के हम अनुयायी हैं और यदि हमें कहीं समझने में कठिनाई है तो हम उसका परिष्कार करें, क्योंकि मानव-उत्थान तथा सार्वभौम वैदिक सिद्धान्तों के प्रति महर्षि दयानन्द के विचारों का प्रचार और प्रसार ही मानव जाति को कल्याण की ओर उत्प्रेरित कर सकता है। आचार्यप्रवर वैदिक मनीषा के अद्वितीय व्याख्याकार थे। पाणिनि, पतंजलि, जैमिनि, वेदव्यास, गौतम, भर्तृहरि, यास्क इत्यादि के अनेकशः उदाहरण उनकी वाणी से पदे-पदे स्वाभाविक रूप से प्रस्फुटित होते रहते थे। वे ऐसे शब्दशिल्पी थे कि उनके द्वारा सम्पादित **परोपकारी** पत्रिका जन-जन में अत्यन्त लोकप्रिय हुई। उन्होंने किसी ग्रन्थ का यद्यपि भाष्य नहीं किया, परन्तु उन ग्रन्थों की टिप्पणियाँ और उनमें प्रतिपादित विचारों को प्रस्तुत करने की उनकी मौलिकता अद्वितीय रही है। अनेक भ्रान्तियों के निराकरणार्थ उनके पुष्कल प्रयास हमारे लिए हमेशा प्रेरणा के स्रोत इस वर्ष में बने रहे।

आचार्यप्रवर ने जिस प्रकार परम्पराओं की आधारशिला रखी है उसके द्वारा इन आर्य विचारों को सहेज कर और जन-जन तक पहुँचाने की उनकी साध को पूरा करना शेष है। कार्य के प्रति समग्र दृष्टि और मतभेदों के बीच भी परस्पर सामंजस्य बनाए रखने की, सभी को एकसूत्र में आबद्ध करने की उनकी प्रखर बुद्धि ने मानव कल्याण के विभिन्न लक्ष्यों को पूरा करने का अभिनव प्रयास किया है।

उनके सान्निध्य में रहकर अनेक छात्रों, ऋषिभक्तों ने अपने जीवन के मार्ग को प्रशस्त किया है और इस विगत वर्ष में अनेक व्यक्ति, जो भले ही आर्यसमाजी नहीं थे तथापि आचार्य धर्मवीर जी के सम्पर्क में वे रहे थे, उनसे मिलने पर उनका एक ही प्रश्न होता था कि एक शून्य और एक अभाव का हम अनुभव कर रहे हैं, भविष्य में क्या होगा? इत्यादि। दक्षिण की यात्रा के समय सभा के मंत्री श्रीमान् ओम् मुनि जी ने जब अवगत कराया कि आचार्य धर्मवीर जी की दक्षिण यात्रा के समय जो उत्साह और आह्लाद जनमानस में होता था आज सब कुछ होने के बावजूद एक शून्य स्पष्ट दृष्टिगोचर हुआ और आर्यजनों की आँखें नम हो गईं।

हमारा संकल्प है कि हम आचार्य धर्मवीर जी के जीवन और आचरण दोनों से ही प्रेरणा लेंगे और निरन्तर उनके उस स्वप्न को जो महर्षि के सिद्धान्तों, प्राचीन वैदिक साहित्य के प्रकाशन, विद्वत् जगत् में वैदिक सिद्धान्तों के प्रति अध्ययन-अध्यापन और उन सिद्धान्तों के प्रचार-प्रसार की अभिनव योजना को सफलीभूत करने में वचनबद्ध हो सकने का प्रयास करेंगे।

आचार्य धर्मवीर जी की विनम्रता, उनका सबसे बड़ा आदर्श था। उन्होंने सभा के कार्य करते हुए कभी सहयोगियों से अनियंत्रित भाषा में संवाद नहीं किया और न ही अपने से आयु में बड़े आचार्य, संन्यासी या सभा के अधिकारियों से ही उन्होंने इस रूप में व्यवहार किया। विगत एक वर्ष में उनके द्वारा लिए गए निर्णय के अनुसार यद्यपि भवनों का निर्माण हुआ, लेकिन हर बार जब चर्चा हुई तो उनकी प्रसन्नता और अट्टहास का अभाव सालता रहा। व्यक्तिगत जीवन का संघर्ष उनके लक्ष्यों में कभी बाधा नहीं बना अपितु निरन्तर वैदिक विचारों का प्रचार और प्रसार तथा सहयोगियों के प्रति उनका सहयोग करने का विचार विगत वर्ष में कितनी ही बार भावविह्वल कर गया।

उनका सान्निध्य, दिशा-निर्देश, जीवन-व्यवहार, परिहास, महर्षि दयानन्द के प्रति समर्पण, धवल चरित्र की विनयशीलता, परिष्कृत और चुनौतीपूर्ण भाषा में सत्य लेखन इत्यादि के प्रति हम संकल्पबद्ध होते हैं। प्रभु हमें उन्हीं की भांति महर्षि दयानन्द का अनुयायी बनाने का सामर्थ्य प्रदान करते रहें।

इन पंक्तियों के लेखक को व्यक्तिगत रूप से महती हानि का भान तब होता है जब वेद-महर्षि के विरुद्ध लेखन या आचरण समाज एवं राष्ट्र में व्यवहार दिखता है और आचार्य जैसी सशक्त लेखनी और वाक् शक्ति का अभाव सम्मुख होता है। व्यापक सामयिक घटनाओं या स्थितियों पर महर्षि और आर्यसमाज का सशक्त दृष्टिकोण प्रस्तुत कर देना उनकी विशेषता थी।

एक व्यक्तिगत हानि यह भी है कि उनसे सुदीर्घकालीन परिचय एवं संबंधों के क्रम में मेरे परिवारिजन सदैव उनके आगमन की प्रतीक्षा करते थे। ऐसा कोई उनका आगमन नहीं रहा जब मैंने और मेरे परिवार ने उनसे सदाचारपरक, व्यावहारिक और धार्मिक शिक्षा न प्राप्त की हो। सम्भवतः ऐसा हर उस परिवार के साथ होगा जो आचार्य प्रवर के संपर्क में रहा होगा। स्वयं तपस्यापूर्वक विविध विधाओं को आत्मसात् कर उन्होंने अपने आचार्यत्व को सिद्ध किया था। उनके गुणानुवाद से हम उनके आचरण को अपने जीवन में उतारने का प्रयास करें तो, यही उनके प्रति सच्ची श्रद्धांजलि होगी। वास्तव में वे देव-पुरुष थे-

**आचिनोति हि शास्त्रार्थमाचारे स्थापयति।**
**स्वयमाचरते यस्मादाचार्यः परिकीर्त्यते।।**

**- दिनेश**

---

ईश्वर का आश्रय न करके कोई भी मनुष्य प्रजा की रक्षा नहीं कर सकता। जैसे ईश्वर सनातन न्याय का आश्रय करके सब जीवों को सुख देता है, वैसे ही राजा को भी चाहिये कि प्रजा को अपनी न्याय-व्यवस्था से सुख देवे।

**-महर्षि दयानन्द, यजुर्वेद, भावार्थ ७.३९**

जब तक सब की रक्षा करने वाला धार्मिक राजा वा आप्त विद्वान् न हो तब तक विद्या और मोक्ष के साधनों को निर्विघ्नता से पाने के योग्य कोई भी मनुष्य नहीं होता है और न मोक्षसुख से अधिक कोई सुख है।

**-महर्षि दयानन्द, यजुर्वेद, भावार्थ ८.५२**

# ईश्वर का जन्म

**प्रवचनकर्त्ता- आचार्य ( डॉ. ) धर्मवीर**

*आचार्य जी एक दार्शनिक थे-यह एक सर्वविदित तथ्य है, इसी कारण उनकी लेखनी और वाणी दोनों ही किसी भी विषय को तीर की भाँति बेध देती थी। इसी दार्शनिकता के आधार पर वह प्राय: कहते थे कि 'ईश्वर भी जन्म लेता है'। नहीं! नहीं!! आप गलत समझ रहे हैं, वह किसी प्राणी शरीर में जन्म नहीं लेता अपितु सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड ही उसका शरीर है। जैसे जड़ शरीर की गतिविधि को देखकर जीवात्मा के अस्तित्व का निश्चय होता है, वैसे इस ब्रह्माण्ड की गतिविधियों को देखकर इसमें व्याप्त परमेश्वर का भी निश्चय होता है। ईश्वर-सिद्धि के इस नये दार्शनिक सिद्धान्त का पाठक रसास्वादन करें।* - **सम्पादक**

एक साधक की शंका है कि आपने तो ईश्वर को जन्म लेने वाला बता दिया, वेद तो ऐसा नहीं कहता। पर वेद ही ऐसा कह रहा है, मैं क्या करूँ? जिस मन्त्र की मैंने चर्चा की थी, उसमें एक बात कही थी-'**प्रजापतिश्चरति गर्भे अन्तर्जायमानो बहुधा विजायते**' और भी कई स्थानों पर वेद कहता है कि संसार के रूप में वह ईश्वर प्रकट हो रहा है। बात केवल समझने की है और झगड़ा इतना सा रहता है कि हमारे यहाँ वेद का ज्ञान और अधिकार दोनों देते हैं पर वेद की भाषा आती नहीं है। समस्या यह है कि भाषा को हम जानते नहीं हैं, जानने का मौका नहीं मिला। उसमें आपकी कोई गलती नहीं है। अन्तर भाषा के न आने से पड़ता है।

जब आप कहते हैं कि जीव जन्म लेता है तो यह एक तरह का झूठ है। क्योंकि जीव तो स्वरूप से अपरिवर्तनीय है, अनादि है, एकरूप है, नित्य, शुद्ध, बुद्ध, मुक्त है। इसलिये जन्म उसका होता ही नहीं है। जन्म उसके द्वारा शरीर का होता है। शरीर तो भौतिक है तो जीवात्मा ने जन्म लिया क्या? मतलब शरीर के माध्यम से जीवात्मा प्रकट हुआ, पता चला, पहचाना गया। यही बात परमेश्वर के बारे में लागू करके देख लो। जिन तरीकों से, जिन नियमों से, जिन कारणों से आप इस जीवन को इस शरीर के अन्दर पहचानते हो, उन्हीं नियमों से संसार में ईश्वर को पहचाना जा सकता है। यह शरीर जैसे उस आत्मा की पहचान है, वैसे ही संसार परमात्मा की पहचान है। आत्मा का शरीर सीमित है, क्योंकि आत्मा सीमित है और परमेश्वर का शरीर यह संसार असीमित है और वह स्वयं इससे भी अधिक असीमित है। इसलिये मैंने आपसे कहा कि ''परमात्मा'' जन्म लेता है। यह बात ठीक है, कब? जब सृष्टि निराकार से साकार बनती है। आदमी मर जाता है, कब? जब जीवात्मा शरीर से पृथक् होता है। परमात्मा संसार से पृथक् तो हो नहीं सकता। वह मूर्त और अमूर्त होता रहता है। जब सृष्टि अपने कारण दशा से कार्यरूप में आती है तब आप उसी को सृष्टि की उत्पत्ति कहते हो, जन्म कहते हो। यहाँ तो शरीर का जन्म हुआ, वहाँ सृष्टि का जन्म हुआ। जब इस शरीर से जीवात्मा को पहचाना गया तो सृष्टि से परमात्मा को क्यों नहीं पहचाना जायेगा? इस बात को आप यजुर्वेद के ३१वें अध्याय के पहले मन्त्र से समझो। '**सहस्त्रशीर्षा पुरुषः सहस्त्राक्षः सहस्त्रपात्। स भूमिं सर्वतः स्पृत्वात्यतिष्ठद्दशाङ्गुलम्।।**' वह पुरुष है, वह हजारों आँखों वाला है। ऋषि दयानन्द इसका अर्थ करते हैं, जिसमें हजारों व्यक्ति इन आँखों से उसे देख रहे हैं। किसे देख रहे हैं? दुनिया ही दिखेगी। उसके अन्दर जो नियम है, व्यवस्था है, वो भी तो दिखाई देगी। इस दृष्टि से वहाँ तुलनात्मक रूप से बात कही गई है। हम एक सन्दर्भ को शत-प्रतिशत दूसरे संदर्भ में घटाने की इच्छा रखते हैं। यह हमारा, मनुष्य का स्वभाव होता है। समझने के लिये आप न्याय पढ़ते हो या कोई अन्य दर्शन पढ़ते हो। दृष्टान्त और दार्ष्टान्त में समग्रता नहीं होती। आंशिकता होती है। वेद मन्त्र में इस समस्या का हल बड़ा अच्छा है।-

**एषो ह देवः प्रदिशोऽनु सर्वाः**
**पूर्वो ह जातः सऽउ गर्भेऽअन्तः।**

**सऽएव जातः स जनिष्यमाणः**
**प्रत्यङ् जनास्तिष्ठति सर्वतोमुखः।।**

**'एषो ह देवः प्रदिशोऽनु सर्वाः'** ये देव है, जो सब दिशाओं में व्याप्त है। **पूर्वो ह जातः सऽउ गर्भेऽअन्तः** वो पैदा भी हो गया है, वो गर्भ में भी है। **'सऽएव जातः स जनिष्यमाणः'** वो उत्पन्न हुआ है, हो भी रहा है। **'प्रत्यङ् जनास्तिष्ठति सर्वतोमुख'** अरे वो तो सामने भी खड़ा है। अब क्या कहोगे कि ये सब गलत है? ये सब एक-दूसरे का उल्टा है? ऐसा नहीं है। ये कहने का एक प्रकार है। होता क्या है कि जब आप अपनी भाषा में बोलते हो तब आपको गलती नहीं लगती है पर जब आप अनुवाद की भाषा में बोलते हो तो गलत लगता है। आप अपने बेटे को कहते हो- ''गधा कहीं का'' तो बेटा उलटकर यह नहीं कहता है कि मैं आदमी हूँ। मान लेता है कि कुछ 'गधापन' हो रहा है। लेकिन आप इसको अनुवाद करके बोलोगे तो कोई भी कहेगा, आप गधा क्यों कह रहे हो? यह तो मनुष्य है। यह और कोई समस्या नहीं है, यह समस्या है भाषा पर अधिकार न होना, भाषा का प्रयोग नहीं आना। भाषा का जब किसी को प्रयोग आता है तो वो क्या प्रयोग करता है, यह प्रश्न ही नहीं होता। समझ में क्या आता है, यह मुख्य होता है। आप हिन्दी में कुछ भी उल्टा-सीधा बोलते हैं, लेकिन समझने वाला आपकी बात को बिलकुल ठीक समझता है। क्यों? क्योंकि दोनों का भाषा पर समान अधिकार है। उसे कौन सी शक्ति से आप समझ रहे हैं, वह एक लम्बा विषय है।

यहाँ पर मूल समस्या समझने की है। प्रायः लोग कम बुद्धि के कारण, विचार न करने के कारण या बताये न जाने के कारण एक दृष्टान्त को सब जगह घटाना चाहते हैं। वो ये जानते हैं कि हाथ से काम किया जाता है, आँख से देखा जाता है, कान से सुना जाता है, पैर से चला जाता है। इसके अतिरिक्त उनको कुछ पता नहीं। चलने की बात आयेगी तो पैर की याद आयेगी, देखने की बात आयेगी तो आँख की याद आयेगी, सुनने की बात आयेगी तो कान की याद आयेगी, अर्थात् इन्द्रियों की बात होगी। जब हम ये सोचते हैं कि भगवान् देखता, सुनता, कुछ करता होगा तो हमको लगता है कि ये इन्द्रियाँ भगवान् को कहाँ लगती होंगी? हमको लगता है कि कोई दूर की बात है तो टेलिफोन निकाला और सुन लिया। पता लगा कि इससे सुना जाता है। हम सोचते हैं कि भगवान् भी कुछ ऐसा ही करता होगा!

हमारे मन में करना, चलना, देखना इन्द्रियों का काम है-यह हमारी धारणा है। हमको ऐसा लगता है कि पैर चलते हैं। प्रयोग भी हम भाषा में ऐसे ही करते हैं कि पैर चलते हैं। हमको प्रयोग में ऐसा ही लगता है कि आँखें देखती हैं। ये मानकर चलते हैं कि करने वाले हाथ हैं, देखने वाली ये आँख है, चलने वाले पैर हैं। हमारे मन में एक निश्चय बना हुआ है। अब ये निश्चय टूटे कैसे? बहुत आसानी से। चीज सामने पड़ी है और आपको दिखाई नहीं दे रही है। तब कोई पूछता है कि आपने इसको देखा क्या? बोले, था तो सही पर ध्यान नहीं गया, जबकि चीज भी थी, आँख भी ठीक-ठाक थी, खुली थी, दिन का प्रकाश था। मतलब देखने का काम आँख से हुआ क्या? यदि आँख से होता तो ध्यान का झगड़ा क्यों पड़ता? जो कुछ आँख के सामने आता है, वो मालूम हो जाना चाहिये, पर ऐसा तो नहीं होता। कैमरे के सामने जो आ जाये उन सबका चित्र वो ले लेता है क्या? नहीं! तो वैसे ही आँख के सामने जो भी आ जायेगा, उसका चित्र ले लेगी-ऐसा नहीं है। ये चित्र ले तो सकती है, इसमें चित्र आता भी है, लेकिन तब आता है जब मन चाहता है। मन उसको कहता है कि हाँ ये देखना है तो वो देखती है और मन कहे कि नहीं देखना है या मन उससे जुड़ा ही नहीं है तो नहीं देखती है। देखने पर भी नहीं देखती। इसका पहला निराकरण है कि आँख देखती है ये दिमाग से निकाल दो। आँख नहीं देखती। यदि आँख देखती तो बिना मन के भी उसे देखना आना चाहिये। आँख नहीं देखती, इसका दूसरा प्रमाण है- यदि आँख देखती ही है तो मुर्दा क्यों नहीं देखता? आँख तो पूरी है और इसका प्रमाण है कि आप शव में से आँख को निकाल लेते हो और दूसरे के आँख की जगह पर लगा देते हो और उससे उसको दिखाई देने लगता है। अर्थात् आँख में तो कोई गड़बड़ थी नहीं और यदि आँख ही देखती होती तो फिर उसे पहले आदमी का दिखाई देगा अथवा इस आदमी का दिखाई देगा? आजकल तो किसी की भी

आँख किसी को भी लग जाती है। देखने वाला जैसा है वैसा ही दिखाई देगा। इस चश्मे से कोई भी देख लो। दिखाई वही देगा जो देखने वाला देखेगा। चश्मे का अपना कोई कार्य है क्या कि मैं इसको देखूँगा, इसको नहीं देखूँगा, ये अच्छा लगेगा ये बुरा लगेगा-ऐसा होता ही नहीं है तो वैसे ही आँख द्रष्टा नहीं है साधन है,अन्तर इतना ही है कि भगवान् की बनाई हुई ऐनक को आँख कहते हो और काँच की ऐनक को आप आदमी का बनाया हुआ चश्मा कहते हो। इससे अधिक कुछ भी अन्तर नहीं है। इसका मतलब हुआ कि देखना क्रिया आँख की नहीं है। तो देखने की ताकत फिर किसकी है? आप मन में जाओ, बुद्धि में जाओ और अन्तस् में- आत्मा में जाओगे तो देखना कि ये सामर्थ्य आत्मा में है।

आँख के बाहर की चीज आँख से देखी तो फिर आँख के भीतर की चीज देखी जायेगी कि नहीं देखी जायेगी? यदि आप ये मानोगे कि आँख के बिना नहीं देखी जायेगी तो भीतर का कुछ भी नहीं दिखना चाहिये। लेकिन ऐसा तो नहीं है, वो दिखता है। कब दिखता है? जब वो अपने को देखता है। क्योंकि दृष्टि का सामर्थ्य तो उसी में है, वहीं पर है, इसलिये न देखने का प्रश्न ही नहीं पैदा होता।

हमको लगता है कि इतनी बड़ी दुनिया को भगवान् कैसे देख रहा होगा? ऐसा लगता है कि सूरज जैसी एक आँख होगी, लेकिन उससे तो पूरी दुनिया दिखाई ही नहीं देगी। कुछ और बड़ी-बड़ी आँख लगानी पड़ेगी तो शायद दुनिया दिख जाये। तो भी मुश्किल है। तो फिर ईश्वर को कैसे दिखेगा? दिखेगा, क्योंकि दिखाई देना देखने के सामर्थ्य से सम्भव है और दिखने का सामर्थ्य जैसे जीवात्मा में है वैसे ही परमात्मा में भी है। जीवात्मा क्योंकि एकदेशी है, अणु है, एक स्थान पर है, इसलिये दूर देखने के लिये साधनों की सुविधा चाहिये। लेकिन मान लो कि मेरी आँख ठीक है तो मुझे चश्मे की क्या जरूरत? लेकिन मुझे कभी दूर का नहीं दिखता, कभी नजदीक का नहीं दिखता, कभी मोटा नहीं दिखता, कभी पतला नहीं दिखता तो मैं मशीन लगा लेता हूँ। मुझे इस उपकरण की, इस साधन की, इस मशीन की आवश्यकता तब पड़ी, जब मेरे पास देखने की कुछ कमी थी, देखने के लिये मुझसे एक वस्तु कुछ दूर थी, बीच में कोई बाधा थी-इसलिये साधन की आवश्यकता होगी। न बीच में बाधा है, न दूरी है, न सामर्थ्य में कमी है तो साधन की आवश्यकता नहीं रहेगी। मेरे में और ईश्वर में यही अन्तर है कि मैं एक जगह से देखता हूँ, वह देखने का सामर्थ्य सब जगह रखता है। एक बार एक व्यक्ति ने मुझसे पूछा कि काम हाथ से करते हैं और भगवान् के हाथ हैं नहीं तो काम कैसे करेगा? मैंने कहा कि पक्की बात है कि हाथ से काम करते हैं, मगर हाथ के बिना काम न होता हो तो हम मान लेंगे कि केवल हाथ से ही काम होता है। लेकिन हाथ के बिना भी काम होता है, तब क्या कहोगे? इसका मतलब है कि हाथ से भी काम होता है और हाथ के बिना भी काम होता है। अब यह सोचना पड़ेगा कि कब हाथ की जरूरत पड़ती है और कब बिना हाथ के काम चल सकता है। इसको कैसे सोचेंगे? उस व्यक्ति से मैंने कहा कि चलो आप कहते हो कि हाथ के बिना काम नहीं होता, क्योंकि कोई चीज पकड़नी है तो मैं हाथ से पकड़ता हूँ, लेकिन जब मैं हाथ को उठाकर इधर से इधर रखता हूँ तब भी तो मेरी 'रखना' क्रिया हो रही है। तब इस हाथ को मैं किस हाथ से उठाता हूँ? या मैं जब चलता हूँ तो क्या पैरों को हाथ से उठाकर रखता हूँ? इसका मतलब पैर भी उठ जाते हैं, हाथ भी उठ जाते हैं। आँखों की पलकें क्या मेरे हाथ से उठती हैं? नहीं ना। इसका मतलब क्रिया का सम्बन्ध अकेले हाथ से नहीं है, सामर्थ्य से है। वह सामर्थ्य जिस भी साधन में चला जाएगा, वह साधन वैसा काम करेगा। हाथ में चला गया, हाथ की तरह करेगा। आँख में चला गया, आँख की तरह करेगा। पैर में चला गया तो पैर की तरह करेगा। क्रिया हाथ विशेष से जुड़ी हुई नहीं है, वह सामर्थ्य से जुड़ी हुई है और यह सामर्थ्य परमेश्वर में है।

नियन्त्रण उस पर होता है जो उसकी सीमा में हो। आप कहते हो कि हमारा बच्चा आजकल हॉस्टल में रहता है, दूर रहता है। पता नहीं क्या करता है, ठीक करता है, या गलत करता है, दु:ख में है या सुख में है। क्यों नहीं पता है? इसलिये नहीं पता है, क्योंकि वो मेरे से दूर है, मेरी

**शेष भाग पृष्ठ संख्या ४२ पर.....**

## (परोपकारिणी सभा द्वारा संचालित)

# योग–साधना शिविर

### दिनांक : ८ से १५ अक्टूबर २०१७

आज समाज के अनेक क्षेत्रों में अनेक प्रकार से लोग साधना के लिए प्रयासरत हो रहे हैं। अनेक प्रशिक्षकों द्वारा इस विषयक ज्ञान–विज्ञान भी प्रदान किया जा रहा है। फिर भी साधकों को साधना की सन्तुष्टिदायक स्थिति प्राप्त नहीं हो पा रही है। इसका कारण है कि साधना के विषय **साध्य, साधन, साधक व अन्य साधकों–बाधकों** के ज्ञान का वैदिक परम्परा से दूर होना। इस योग–साधना शिविर में इन्हीं विषयों का वैदिक–दर्शनों के द्वारा ज्ञान करवाया जायेगा, उससे सम्बन्धित जिज्ञासाओं का समाधान व आत्मनिरीक्षण के द्वारा अपनी उन्नति का मापदण्ड बताया जायेगा। यह शिविर अवश्य ही आपकी साधना की उन्नति में विशेष साधन बनेगा, जिससे कि मानव जीवन के मुख्य व चरम लक्ष्य की प्राप्ति उत्तरोत्तर काल में आप अपने निकट अनुभव करने लगेंगे।

### प्रार्थियों हेतु नियम व अनुशासन

१. प्रत्येक प्रार्थी के लिए पूर्ण मौन अनिवार्य होगा।

२. शिविर के काल में किसी साधक के द्वारा नियम व अनुशासन भंग करने पर उसे शिविर के मध्य में ही शिविर छोड़ने के लिए बाध्य किया जा सकता है।

३. पूरे शिविर में साधक के द्वारा किसी भी माध्यम से बाह्य–सम्पर्क करना निषिद्ध रहेगा।

४. शिविर काल में किसी भी साधक को ऋषि उद्यान परिसर से बाहर जाने की अनुमति नहीं होगी।

५. साधकों की मूलभूत आवश्यकताओं की पूर्ति ऋषि–उद्यान परिसर में ही की जायेगी।

६. बाह्य–वृत्ति उत्पादक साधनों जैसे– समाचार–पत्र पढ़ना, आकाशवाणी श्रवण व दूरदर्शन देखने आदि पर पूर्ण प्रतिबन्ध रहेगा।

७. किसी प्रकार का शारीरिक रोग यथा– खाँसी, जुकाम अथवा अन्य कोई ध्वनि उत्पादक रोग वाले को प्रवेश नहीं दिया जायेगा।

८. बच्चों को साथ लाये जाने पर प्रार्थी को शिविर में प्रवेश नहीं दिया जाएगा।

९. किसी भी मादक द्रव्य, चाय–कॉफी आदि का सेवन निषिद्ध होगा।

१०. शिविर के प्रारम्भ दिन से लेकर समापन–सत्र पर्यन्त पूर्ण रूप से शिविर में भाग लेना अनिवार्य होगा।

११. नियम व अनुशासन के पालन को आवेदन में ही लिखित स्वीकार करना होगा।

उपरिलिखित किसी भी नियम व अनुशासन का पालन करने में असमर्थ व अयोग्य प्रार्थी को शिविर में प्रवेश नहीं दिया जायेगा।

**प्रार्थियों के लिए सूचनाएँ**–मन्त्री परोपकारिणी सभा, केसरगंज, अजमेर (राज.) से संपर्क कर शिविर से पूर्व शुल्क जमा करवा कर अपने नाम का पंजीयन करा लें। शिविर में माता–बहिनें भी भाग ले सकती हैं। पुरुषों एवं महिलाओं के आवास की सामूहिक व्यवस्था पृथक्–पृथक् की जाती है। पृथक् कक्ष चाहने वालों को अतिरिक्त शुल्क १००० से २००० रु. देय होता है। पृथक् कक्ष की व्यवस्था पूर्व सूचना व उपलब्धता के अनुसार की जाती है।

ऋषि उद्यान में दरी, गद्दे, तकिए एवं बर्तन उपलब्ध हैं, शेष दैनिक उपयोग की वस्तुएँ यथा मंजन, ब्रश, साबुन, तेल, दवाएँ, बिछाने-ओढ़ने की चादरें, लिखने के लिए संचिका (नोटबुक), लेखनी, करदीप (टार्च) आदि को साधक अपने साथ लाएँ। वस्त्र सादगी एवं शिष्टाचार के अनुकूल हों, आभूषणों एवं सुगन्धित द्रव्यों का उपयोग न हो। आपके पास योगदर्शन हो तो साथ लाएँ। सतर्कता की दृष्टि से कीमती वस्तुएँ साथ न लायें। यदि आपको कोई संक्रामक रोग, तेज खांसी, दमा, मिर्गी आदि मानसिक रोग, वायु विकार या अन्य गंभीर रोग हो, तो कृपया शिविर में आना स्थगित रखें। यदि अपने कार्य स्वयं न कर सकते हों तो सहायक साथ में लायें। अजमेर या निकटवर्ती स्थल (पुष्कर) देखना चाहें, तो शिविर से पूर्व या पश्चात् अतिरिक्त समय निकाल कर आयें। लौटने का रेल-आरक्षण शिविर में आने से पूर्व करवा लें। अजमेर पहुँचने की सूचना घर पर देनी हो तो शिविर स्थल में प्रवेश से पहले दे देवें। खाने पीने की वस्तुएँ साथ न लावें।

यह शिविर परोपकारिणी सभा, अजमेर के सौजन्य से आयोजित किया जा रहा है। शिविर शुल्क १००० रु. मात्र जमा करना होगा। शिविर में भाग लेने वालों को शिविर के प्रारंभ दिनांक को सायं चार बजे तक शिविर स्थल ऋषि उद्यान, पुष्कर मार्ग, अजमेर में पहुँच जाना आवश्यक है क्योंकि इसी दिन शाम को शिविर के अनुशासन एवं विभिन्न व्यवस्थाओं संबन्धी महत्त्वपूर्ण सूचनाएँ दी जाएँगी। शिविर का समापन अन्तिम दिन दोपहर एक बजे तक होगा। शिविर समाप्ति से पूर्व जाने की अनुमति नहीं दी जायेगी।

शिविर से आपका जीवन श्रेष्ठतर व पवित्रतर बने, इन्हीं शुभकामनाओं के साथ।

मन्त्री, परोपकारिणी सभा, केसरगंज, अजमेर दूरभाष : ०१४५-२४६०१६४

: मार्ग :

**ऋषि उद्यान शिविर स्थल पर पहुंचने के लिए फॉयसागर की ओर जाने वाली सिटी बस या ऑटो-रिक्शा, रेलवे स्टेशन व बस स्टेण्ड से ( वाया-आगरा गेट/फव्वारा चौराहा ) सर्वदा सुलभ रहते हैं।**

email:psabhaa@gmail.com **-संयोजक**

## लेखकों से निवेदन

परोपकारी में उन लेखों, कविताओं, रचनाओं को स्थान दिया जाता है, जो **मौलिक व अप्रकाशित** हों। अत: सभी लेखकों से निवेदन है कि वे अपनी उन्हीं रचनाओं को भेजें जो मौलिक व अप्रकाशित हों।

अनेक लेखक मौलिक व अप्रकाशित रचना तो भेजते हैं, किन्तु उसे एक साथ **अनेक पत्रिकाओं को भेजते हैं।** अत: लेखकों से यह भी निवेदन है कि वे कृपया परोपकारी को वे ही रचना भेजें, जो अन्य पत्रिकाओं के लिए न भेजी हों। परोपकारी में छपने के बाद यदि अन्यत्र भेजना चाहें तो यह उनकी इच्छा पर निर्भर करता है।

कृपया लेख के अन्त में अपना **पूरा पता व चल-दूरभाष संख्या अवश्य लिखें।** लेख के स्वीकृत-अस्वीकृत होने की सूचना चल-दूरभाष पर संक्षिप्त संदेश द्वारा प्रेषित कर दी जायेगी। **परोपकारिणी सभा द्वारा रचनाओं के लिए किसी प्रकार का भुगतान नहीं किया जाता है।**

रचयिता अपनी रचना की एक प्रति कृपया अपने पास रखकर भेजें, क्योंकि **अस्वीकृत रचनायें डाक द्वारा लौटाई नहीं जाती हैं।** स्वीकृत रचना परोपकारी के किसी आगामी अङ्क में देखी जा सकती है। रचना के प्रकाशन में छ: माह या अधिक समय भी लग सकता है, अत: कृपया तब तक रचना को अन्यत्र न भेजें। **-संपादक**

# कुछ तड़प-कुछ झड़प

**प्रा. राजेन्द्र 'जिज्ञासु'**

**अविस्मरणीय दक्षिण-भारत यात्रा**- स्वामी श्रद्धानन्द संन्यास-दीक्षा शताब्दी वर्ष में परोपकारिणी सभा की ओर से दक्षिण भारत की यात्रा से हम लौट आयें हैं। इस पर परोपकारी में एक पृथक् लेखमाला दी जा रही है। हम अजमेर से छः व्यक्ति चले थे। हैदराबाद से बीदर तक आर्यवीर रणवीर तथा अकोला के परमोत्साही आर्य युवक भी हमारे साथ जुड़ गये। यह यात्रा आर्यसमाज के इतिहास में अविस्मरणीय रहेगी। अविश्वास, विवाद, द्वेष-कलेश के इस युग में दक्षिण के आर्य बन्धुओं ने हमें अपने प्यार से लाद दिया। व्यक्तिगत रूप में भी मैं इस प्यार और सत्कार को पाकर स्वयं को केरल, कर्नाटक, हैदराबाद के आर्यों और सम्पूर्ण आर्यसमाज का ऋणी मानता हूँ। इन्दौर के आर्यों का उत्साह, स्नेह, सौजन्य भी हम नहीं भूल सकते।

यह कोई पिकनिक (विलास-यात्रा) नहीं थी। यह धर्म-प्रचार यात्रा थी। यहाँ से हम छः वरिष्ठ नागरिक (वृद्ध) निकले। सब सकुशल लौटे। यात्रा में किसी को खांसी, जुकाम, पेट-दर्द, अपचता, खट्टे डकार तक की शिकायत नहीं हुई। यह आर्य जीवन-पद्धति का ही चमत्कार जानें। यदि किसी को कहीं कुछ हो जाता तो मुझे तथा श्री ओम् मुनि जी को बहुत कुछ सुनना पड़ता।

**जीवन के लक्षण**-निराश करने वाले और दिल तोड़ने वाले दृश्य तो सारे देश में और आर्य समाज में सर्वत्र देखे जा सकते हैं। हमने कर्नाटक तथा केरल में आशावाद का संचार करने वाले जीवन के लक्षण देखे। १२२ वें वर्ष में चल रहे विश्व के सबसे वयोवृद्ध वैदिक विद्वान् श्रद्धेय पं. सुधाकर जी के दर्शन करके हम सब धन्य-धन्य हो गये। **वह ऋषि मेला पर पधार रहे हैं।**

निज़ाम उस्मान पर बम फेंकने वाले क्रान्तिवीर नारायण राव जी पवार की वृद्ध पत्नी तथा परिवार ने **ऋषि मेला पर आना स्वीकार कर लिया है।** यह हमारी यात्रा की एक स्मरणीय उपलब्धि है। मुझे सर्वत्र मेरे युवा प्रेमी मिलते रहे, यह एक आनन्ददायक दृश्य रहा। मुस्लिम परिवार में जन्मा एक सुयोग्य शाकाहारी जिज्ञासु जब मुझे मिलने आया तो उसे अपने मध्य पाकर यात्री दल गद्गद् हो गया। वह भी ऋषि मेला पर आ रहा है।

**हैदराबाद शास्त्रार्थ**-हैदराबाद सभा ने पं. नरेन्द्र भवन में हमारा तो सत्कार किया ही, हमने भी क्रान्तिवीर नारायण पवार तथा आर्य नेता स्वर्गीय श्री गंगाराम जी के परिवारों का भी सभा की ओर से सत्कार किया। हैदराबाद-शास्त्रार्थ में आर्यसमाज की धूम मचाने वाले दो युवकों में से एक श्री राहुल आर्य का हैदराबाद में सम्मान किया।

यह हैदराबाद शास्त्रार्थ क्या था? कैसे हुआ? इसका संक्षेप से ही यहाँ उल्लेख होगा। हैदराबाद में भी आर्य इसे नहीं जानते थे। पुस्तक मेले में कोई पुस्तक लेने व धर्मप्रचार के लिये ये पहुँच गये। वहाँ युवा मौलवी एक पुस्तिका बाँटकर प्रचार कर रहे थे। पुस्तक में यह लिखा था कि वेदों में तथा हिन्दुओं के पौराणिक साहित्य में हज़रत मुहम्मद के आगमन की भविष्यवाणी है। इस युग में मुक्तिदाता पैगम्बर मुहम्मद है। हिन्दू पुरुष-स्त्रियाँ यह पुस्तिका भी लेते जाते और प्रचार भी सुनते थे। **इन दोनों आर्यवीरों ने उनके प्रचार को सुनकर उनको शास्त्रार्थ की चुनौती दे डाली। उनके कथन को झुठलाकर यह कहा कि अल्लाह ने ऋषि दयानन्द का गुणकीर्तन करते हुये कुरान उतारा है।**

यह सुनकर वे चौंके। उन्हें यह भ्रम था कि उर्दू तक न जानने वाले ये युवक अरबी के कुरान का प्रमाण क्या देंगे। उन्होंने कहा, ''कुरान में कहीं भी स्वामी दयानन्द का नाम नहीं।''

इन्होंने कहा, लाओ कुरान हम दिखाते हैं। हिन्दी कुरान इन्हें दिया गया और कहा दिखाओ कहाँ पर यह लिखा है? इन्होंने कहा, आप ही पहली आयत पढ़िये। उन्होंने आयत पढ़ी। दोनों ने कहा इसके अर्थ भी पढ़ो। अर्थ पढ़े गये। दोनों आर्यवीरों ने **मेरी पुस्तक 'कुरान सत्यार्थ प्रकाश के आलोक' में पढ़ रखी थी।** डंके की चोट से कहा रहमान व रहीम शब्दों का स्पष्ट अर्थ दयावान्

दयानन्द है। कुरान में अल्लाह प्रत्येक सूरत के आरम्भ में दयानन्द, दयानन्द जपता हुआ कुरान को उतार रहा है। भीड़ इकट्ठी होने लगी। उन्हें कोई उत्तर नहीं सूझ रहा था। पिण्ड छुड़ाना कठिन हो गया। आप यहाँ से जाओ। अरे भाई जाओ। हमारी जान छोड़ो। आप आर्यसमाजी हैं। हमारा काम मत बिगाड़ो। आप जाओ। हाथ जोड़कर इनसे जान छुड़ाई। **पं. नरेन्द्र जी के मानस पुत्र पं. लेखराम की विजय पताका फहराकर वहाँ से लौटे।** इस शास्त्रार्थ का कुछ अंश पहले भी परोपकारी में छपा था। ऐसे सहस्त्रों आर्यवीर होंगे तो धर्म-रक्षा, जाति-रक्षा होगी।

**आर्यसमाज के लिये यह गौरव का विषय है**- परोपकारिणी सभा ही नहीं सम्पूर्ण आर्यसमाज के लिये यह समाचार अत्यन्त आनन्ददायक व गौरव का विषय है कि परोपकारी के सम्पादक और सभा के संयुक्त मन्त्री श्री डॉ. दिनेश जी को एक विश्वविद्यालय ने एक ऊँचे पद को ग्रहण करने का प्रस्ताव भेजा। आपने दृढ़तापूर्वक उनका यह प्रस्ताव (offer) अस्वीकार करते हुये यह कहा, ''मैं अब किसी मनुष्य या संस्था की नौकरी नहीं करूँगा।'' आर्य समाज के पास डॉ. दिनेश जी की कोटि के बीस-तीस विद्वान् विचारक भी नहीं है। पं. धर्मदेव जी, पं. गंगाप्रसाद जी उपाध्याय, स्वामी सत्यप्रकाश जी का स्थान लेने वाले विचारकों का अभाव आज खलता है। डॉ. दिनेश जी, डॉ. हरिश्चन्द्र जी (ह्यूस्टन) सरीखे न्यून अति न्यून २५-३० समर्पित पूर्णकालिक सेवक ही मिशन की रक्षा कर सकते हैं। डॉ. दिनेश जी के इस निर्णय पर हम किसे बधाई दें? हम एक-एक ऋषि भक्त को इसके लिये बधाई भेंट करते हैं। धर्मवीर जी आज होते तो उन्हें इससे कितना आनन्द होता!

**श्रीमती ज्योत्स्ना जी की सेवायें**- दक्षिण भारत की यात्रा में सर्वत्र आर्य पुरुषों ने, विचारशील युवकों व युवतियों ने श्री धर्मवीर जी की चर्चा छेड़कर हमसे श्रीमती ज्योत्स्ना जी के कुशल-क्षेम के समाचार भी पूछे। हमारे बहुत से पाठक यह नहीं जानते कि दक्षिण भारत की प्रचार यात्राओं में ज्योत्स्ना जी भी केरल जैसे दूरस्थ प्रदेश में धर्मवीर जी के साथ जाती रहीं हैं। वह सैर-सपाटे व भ्रमणार्थ नहीं जातीं रहीं। आपने वेद-प्रचार में सक्रिय योगदान दिया। एक बार केरल में मेरी एक पुस्तक के मलयालम अनुवाद का विमोचन किया गया। उसका विषय वेद था। शंकराचार्य की भूमि में कोई महिला वेद पढ़े या सुने- सुनावे! ऐसा पोंगापंथी कहाँ सह सकते हैं। धर्मवीर जी ने अपने स्वाभाविक साहस का परिचय देते हुए विमोचन से पूर्व ज्योत्स्ना जी को वेद मन्त्रों का पाठ करने को कहा । वहाँ उपस्थित नर-नारी मुग्ध हो गये। विरोध किसने करना था। श्री आचार्य राजेश जी ने भी कालीकट में ज्योत्स्ना जी के बारे में मुझ से पूछा। मैंने उन्हें बताया कि वह सभा की न्यासी हैं **और अपना पूरा समय सभा को देती हैं।** उन्हें मिलने के इच्छुक (देवियाँ या आर्य पुरुष) प्रातः व सायं समय उनको ऋषिउद्यान में मिल सकते हैं। दिन को वह प्रतिदिन सभा कार्यालय आकर सभा के कई कार्यों में सहयोग करती हैं।

**हैदराबाद के आर्य बलिदानी तथा मुक्ति संग्राम**- दक्षिण भारत की इस यात्रा में इस बार भी वहाँ के युवकों, बलिदानी आर्य परिवारों तथा मेरे कई प्रेमियों ने एक बार फिर से अपनी यह माँग दुहराई कि मैं दक्षिण के आर्य बलिदानियों तथा हैदराबाद के मुक्ति संग्राम पर एक नया ग्रन्थ लिखूँ, जिसमें मेरी एतद्विषयक नवीनतम (Lateat) खोज आ जाये। हैदराबाद से ट्रेन छूटने तक आर्यवीर यह माँग करते रहे। उनका आग्रह था कि जाते ही इस ग्रन्थ का लेखन आरम्भ हो जाये। इस यात्रा में मैंने अनुभव किया कि मेरे शरीर में नई स्फूर्ति आई है। शरीर को नवीन ऊर्जा मिली है। सो इस माँग को ईश्वरेच्छा मानकर कह दिया कि स्वामी श्रद्धानन्द जी पर अपने ग्रन्थ को प्रेस में भेजते ही इसका लेखन कार्य आरम्भ हो जायेगा। उसमें आप लोग नये-नये प्रमाण तथा दस्तावेजों के फोटो देखेंगे। प्रत्येक नये स्थान पर मैं अपनी नई-नई खोज (जो किसी ने कभी न सुनी और न पढ़ी) का अपने व्याख्यानों में परिचय देता रहा। इस यात्रा में एक हैदराबादी लीडर की कुछ वर्ष पूर्व लिखी गई एक पुस्तक किसी ने पकड़ा दी। इसमें हैदराबादी प्रजा के संघर्ष का इतिहास दिया है। इसे किसने छपवाया? यह तो पता नहीं चला, परन्तु लेखक कांग्रेस नेता था।

इसे पढ़कर मेरे कलेजे पर गहरी चोट लगी। मुझे पूज्य स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी के एक लेख की याद आ

गई। स्वामी जी ने आर्यों को चेताया था कि अपने संघर्ष का, बलिदानों का, देन का प्रामाणिक इतिहास लिखो। **अन्य-अन्य संस्थायें तुम्हारे शहीदों का, वीरों का इतिहास मिटा देंगी या अवमूल्यन करेंगी।** पूज्य पं. नरेन्द्र जी ने बहुत कुछ किया। मैंने भी गाँव-गाँव जाकर, दस्तावेज़ खोज कर जी भरकर लिखा, परन्तु आर्यसमाज में ही कुछ सज्जन और कुछ सेठ बिना सोचे-विचारे इतिहास प्रदूषण में योगदान कर रहे हैं। कुछ नामों को, सन् संवत् को देने का नाम शोध नहीं। आर्यसमाज के बलिदानों की, योगदान की विलक्षणता का अवमूल्यन करने पर तुले कुछ भाई विरोधियों को व अन्य संस्थाओं को आर्यसमाज के साथ मुक्ति संग्राम में बराबर खड़ा करके हुपला के वीर भीमराव, माता गोदावरी, कृष्ण राव, गोविन्द राव के जीवित जलाये जाने की आर्यों की अद्‌भुत शूरता का अपमान करने पर तुले हैं। ऐसे धर्म निरपेक्षता की डुगडुगी बजाकर स्कॉलर बनने वाले **जीवित जलाये गये किसी नमाज़ी का या कांग्रेसी का नाम अब तक तो बता नहीं सके।**

**कहीं आर्य समाज की चर्चा नहीं**- जो पुस्तक मुझे दी गई है उसमें तो आर्यसमाज का नाम तक नहीं। केवल एक आर्यसमाज की शोक सभा का तथा एक गोविन्द आर्य का उल्लेख है। यह भी अस्पष्ट। पं. विनायक राव जी, पं. नरेन्द्र जी, श्याम भाई, श्री वेद प्रकाश, श्री धर्म प्रकाश, श्री शिवचन्द्र, पं. गोपाल देव कल्याणी, गंगाराम जी, नारायण राव जी आदि किसी का नाम तक उसमें नहीं। महात्मा नारायण स्वामी, श्री स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी, हैदराबाद के प्रथम हिन्दी साप्ताहिक के सम्पादक पं. त्रिलोकचन्द्र जी का नाम कहीं नहीं। आर्यों के एक भी संघर्ष, गुलबर्गा हत्याकाण्ड और आर्य सत्याग्रह पर एक भी शब्द नहीं।

आर्यों, निज़ाम को महिमा मण्डित करने वाली एक पुस्तक भारत सरकार ने छपवा दी है। मज़लिसे इत्तहादुलमुस्लमीन (कांग्रेस की सगी बहिन) ने कासिम रिज़्वी का गुणगान और हैदराबाद के भारत में विलय पर एक पुस्तक छपवाकर देशद्रोह की सारी सीमा ही पार कर दी है। मैं किसी को दोष क्या दूँ? आर्यो! अब बताओ क्या ऐसे सब तत्त्वों की भी अपनी ग्रन्थ में पोल खोलूँ या चुप बैठा जाये? मैं अपने ग्रन्थ में ऐसे साहित्य के कुछ घातक पृष्ठों के फोटो भी दूँगा। मैंने जिस पुस्तक की ऊपर चर्चा की है उसमें खिलाफ़त आन्दोलन व मौलाना मुहम्मद अली का गुणगान तो है, परन्तु पं. नरेन्द्र जी के कालेपानी मन्नानूर में बन्दी बनाने का संकेत तक नहीं। हैदराबाद के किसी भी आर्य को इस घातक पोथी का पता तक नहीं चला। इस पुस्तक में कहीं-कहीं मुसलमानों की अलगाववादी, भारत विरोधी नीतियों व कुचालों का भी अच्छा परिचय दिया है।

जब तक मेरे शरीर में गर्मी व गति है। प्राणों में प्राण है जीवन के अन्तिम श्वास तक यह लेखनी चलती रहेगी।

**कुछ तड़प-कुछ झड़प के बारे**- मुझे सन्तोष है कि इन्दौर से लेकर कालीकट तक पूरी यात्रा में एक-एक ने कहा कि मैं सबसे पहले परोपकारी में तड़प झड़प को पढ़ता हूँ। इसमें नई-नई ठोस जानकारी मिलती है।

**इस प्रीत पै वारी, मैं मीत पै वारी, दिलजीत पै वारी**

**स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी-एक प्रश्न**- दक्षिण की यात्रा में दो स्थानों पर स्वामीजी महाराज के बारे में एक प्रश्न मुझ से पूछा गया। मैंने कहा, कई बार कर्नाटक, केरल की प्रचार यात्राओं पर आये। आपने चार बार केरल, कर्नाटक और कन्याकुमारी तक भारत की पैदल यात्रायें की। यह सुनकर सब चकित रह गये। चार बार पैदल केरल पधारे! मैंने कहा, ''जी हाँ!'' और बाद में रेल आदि से भी आते रहे। दुर्भाग्य से हमने अपने बड़ों को जाना-पहचाना ही नहीं। आर्यो! अब तो चेतो।

---

इस बात का निश्चय है कि ब्रह्मचर्य्य, उत्तम शिक्षा, विद्या, शरीर और आत्मा का बल, आरोग्य, पुरुषार्थ, ऐश्वर्य, सज्जनों का संग, आलस्य का त्याग, यम-नियम और उत्तम सहाय्य के विना किसी मनुष्य से गृहाश्रम धारा जा नहीं सकता। - **महर्षि दयानन्द, यजुर्वेद, भावार्थ ८.३१**

जो विद्या की वृद्धि के लिए पठन-पाठन रूप यज्ञ कर्म्म करने वाला मनुष्य है वह अपने यज्ञ के अनुष्ठान से सब की पुष्टि तथा संतोष करने वाला होता है इससे ऐसा प्रयत्न सब मनुष्यों को करना उचित है।

**-महर्षि दयानन्द, यजुर्वेद, भावार्थ ७.२७**

# परोपकारिणी सभा, अजमेर के तत्त्वावधान में
# १३४ वाँ ऋषि बलिदान समारोह
## दिनांक २७, २८, २९ अक्टूबर २०१७, शुक्र, शनि, रविवार

महापुरुषों का यज्ञमय जीवन हमको प्रत्येक कदम पर प्रेरणा व मार्गदर्शन देता रहता है, जिस कारण हम उनके ऋणी हो जाते हैं। इस ऋण से मुक्त होने का एक ही उपाय है- महापुरुषों की विचारधारा का यथासामर्थ्य प्रचार-प्रसार। विराट व्यक्तित्त्व महर्षि दयानन्द की समग्र मानव जाति ऋणी है। इस ऋण को चुकाने का स्वर्ण-अवसर ऋषि के १३४वें बलिदान वर्ष के उपलक्ष्य में हमको प्राप्त हुआ है। इस अवसर पर परोपकारिणी सभा भव्य समारोह का आयोजन करने जा रही है।

**ऋग्वेद पारायण यज्ञ**- 'ऋग्वेद पारायण यज्ञ' की पूर्णाहुति बलिदान समारोह के अन्तिम दिन २९ अक्टूबर को प्रातः १० बजे होगी। यज्ञ के ब्रह्मा **श्री सत्यानन्द वेदवागीश** होंगे। यह यज्ञ ऋषि-उद्यान अजमेर की यज्ञशाला में सम्पन्न होगा।

**वेदगोष्ठी** - प्रतिवर्ष की परम्परा के अनुसार इस वर्ष भी अन्तर्राष्ट्रीय दयानन्द वेदपीठ दिल्ली एवं अनुसन्धान केन्द्र परोपकारिणी सभा के संयुक्त प्रयास से वेदगोष्ठी का आयोजन किया जायेगा। इस गोष्ठी में देश के विविध विद्वान् अपने शोधपूर्ण मौलिक विचार प्रस्तुत करेंगे। इस वर्ष वेदगोष्ठी का विचारणीय बिन्दु है- **वेदों में शिक्षा के सिद्धान्त।** जो विद्वान् गोष्ठी में शोधपत्र प्रेषित करना चाहते हैं, वे १५ अक्टूबर तक सभा के पते पर प्रेषित करवा देवें। २७, २८, २९ अक्टूबर को ऋषि बलिदान समारोह के कार्यक्रमों के साथ-साथ वेदगोष्ठी भी चलती रहेगी। ऋषि-भक्त इसे सुनने का लाभ उठा सकते हैं।

**चतुर्वेद कण्ठस्थीकरण वेद प्रतियोगिता**- प्रतिवर्ष आयोजित की जाने वाली इस प्रतियोगिता में २१ वर्ष तक के छात्र भाग ले सकते हैं। किसी भी वेद को आद्योपान्त स्मरण करके इस प्रतियोगिता में भाग लिया जा सकता है। जो छात्र जिस वेद पर गत वर्षों में पारितोषिक ग्रहण कर चुके हैं, वे उस वेद से अतिरिक्त वेद स्मरण करके भाग ले सकते हैं। २७ अक्टूबर को परीक्षा एवं २८ अक्टूबर को पुरस्कार-वितरण का कार्यक्रम होगा। जो छात्र इस प्रतियोगिता में भाग लेना चाहते हैं, वे अपने-अपने गुरुकुलों, आश्रमों, संस्थानों से आचार्य द्वारा अधिकृत पत्रक पर २-छायाचित्र सहित अपना परिचय १५ अक्टूबर, २०१७ तक आचार्य महर्षि दयानन्द आर्ष गुरुकुल, ऋषि उद्यान, अजमेर के पते पर भेज दें।

**सम्मान** - प्रतिवर्ष विशिष्ट वैदिक विद्वान्, विदुषियों एवं कार्यकर्त्ताओं को इस समारोह में सम्मानित किया जाता है। इस वर्ष भी सम्मान -समारोह होगा। जिसमें अनेक विद्वान्-विदुषियों एवं कार्यकर्त्ताओं को सम्मानित किया जायेगा।

अक्टूबर के आरम्भ में अजमेर में हलकी ठंड होने लगती हैं, ऋषि उद्यान खुले में होने से सर्दी का प्रभाव कुछ अधिक रहेगा। रात्रि में कम्बल ओढ़ने जैसी ठण्ड रहेगी। जो समूह में रहना चाहते हैं उनकी निवास व्यवस्था ऋषि उद्यान में होगी और जो अपने निवास की व्यवस्था होटल-धर्मशाला में करवाना चाहते हैं, कृपया वे सभा कार्यालय से पूर्व सम्पर्क कर अग्रिम राशि जमा करवा कर कमरा आरक्षित करवा लें। सभी से विशेष निवेदन है कि अपने आने की सूचना कम से कम एक सप्ताह पूर्व दे देवें, जिससे संख्या का अनुमान होकर तद्नुसार व्यवस्था की जा सके। सभी से निवेदन है कि १३४वें बलिदान समारोह में अपने परिवार व समाज के सभी कार्यकत्ताओं सहित पधार कर महर्षि को हार्दिक श्रद्धांजलि प्रदान करें, महर्षि दयानन्द के स्वप्न को साकार करने हेतु प्रेरणा उत्साह प्राप्त कर प्रचार-प्रसार को एक नई चेतना प्रदान करें।

**ऋषि मेले में आमन्त्रित विद्वान् एवं विशिष्ट अतिथि**- प्रो. राजेन्द्र जिज्ञासु-अबोहर, श्री सुरेश अग्रवाल-प्रधान सार्वदेशिक सभा, आचार्य विजयपाल-झज्जर, श्री सोमपाल शास्त्री- पूर्व केन्द्रीय कृषि मन्त्री, श्री सज्जनसिंह कोठारी-लोकायुक्त जयपुर, श्री विजयसिंह भाटी-जोधपुर, श्री विनय आर्य-मन्त्री दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, श्री इन्द्रजित् देव-यमुनानगर, डॉ. प्रशस्यमित्र शास्त्री- रायबरेली, डॉ. रघुवीर वेदालंकार-दिल्ली, स्वामी ऋतस्पति-होशंगाबाद, डॉ. ब्रह्ममुनि-महाराष्ट्र, डॉ. वेदपाल-बड़ौत, आचार्या सूर्या देवी- शिवगंज, डॉ. विक्रम कुमार 'विवेकी'-चण्डीगढ़, श्री तपेन्द्र वेदालंकार-(रि. आई.ए.एस.) जयपुर, आचार्य विरजानन्द दैवकरणि-झज्जर, श्री कन्हैयालाल आर्य-गुरुग्राम, डॉ. वेदप्रकाश 'विद्यार्थी'-दिल्ली, डॉ. रामचन्द्र-कुरुक्षेत्र, श्री दीनदयाल गुप्त-कोलकाता, श्री शत्रुघ्न आर्य-राँची, डॉ. जगदेव-रोहतक, डॉ. रमेशचन्द्र 'जीवन'- चण्डीगढ़, डॉ. वीरेन्द्र अलंकार-चण्डीगढ़, डॉ. ज्ञानप्रकाश-गुरुकुल काँगड़ी, डॉ. रूपकिशोर-गुरुकुल काँगड़ी, डॉ. सोमदेव 'शतांशु'-गुरुकुल काँगड़ी, डॉ. राजेन्द्र विद्यालंकार-कुरुक्षेत्र, डॉ. विनय विद्यालंकार-हल्द्वानी, डॉ. कृष्णपाल सिंह-जयपुर, श्री रामपाल-आर्य प्रतिनिधि सभा प्रधान, श्री सत्यानन्द आर्य- दिल्ली, श्री जगदीश शर्मा-जयपुर, श्री शिवकुमार चौधरी-इन्दौर, श्री जयदेव आर्य-राजकोट, श्री ठा. विक्रमसिंह-दिल्ली, डॉ. उदयन- तेलंगाना, श्री प्रकाश आर्य-महू, श्री सत्यपाल पथिक, प. भूपेन्द्र सिंह आदि।

इस समारोह हेतु आपका आर्थिक सहयोग आयकर की धारा '८०-जी' के अन्तर्गत दिए गये प्रावधान के अनुरूप कर मुक्त होगा। विदेश में निवास कर रहे धर्मप्रेमी सज्जन स्वदेश में होने वाले इस समारोह हेतु मुक्त हस्त से दान देकर देश का गौरव बढ़ाएँ। सभा को भारतीय शासन द्वारा विदेशों से दानस्वरूप दी गई राशि को प्राप्त करने की छूट प्राप्त है। आपका सहयोग ही हमारा सम्बल है। शुभकामनाओं सहित।

| गजानन्द आर्य | डॉ. सुरेन्द्र कुमार | ओम मुनि |
|---|---|---|
| संरक्षक | कार्यकारी प्रधान | मन्त्री |

ऐतिहासिक कलम....

# दयानन्द-दर्शन

आचार्य उदयवीर शास्त्री

**पिछले अंक का शेष भाग.....**

ऋषि ने स्वयं इस सन्दर्भ का अर्थ इस प्रकार किया है-

''अनादि नित्यस्वरूप सत्त्व, रजस् और तमोगुणों की एकावस्थारूप प्रकृति से उत्पन्न जो परमसूक्ष्म पृथक्-पृथक् तत्त्वावयव विद्यमान हैं उन्हीं का प्रथम ही जो संयोग का आरम्भ है, संयोग विशेषों से अवस्थान्तर दूसरी अवस्था को सूक्ष्म स्थूल बनते-बनाते विचित्र रूप बनी है इसी से यह संसर्ग होने से सृष्टि कहाती है।''

इस सन्दर्भ से स्पष्ट होता है, सत्त्व-रजस्-तमस् की साम्यावस्थारूप नित्य प्रकृति को ऋषि समस्त जड़-जगत् का मूल उपादान कारण मानता है। प्रकृति से रचना प्रारम्भ होने पर परिणाम होते-होते किसी एक स्तर पर परमसूक्ष्म कण के रूप में पृथिवी आदि परमाणु उत्पन्न होते अथवा उभर आते हैं। इन्हीं परमाणुओं का परस्पर संयोग होकर स्थूल पृथिवी आदि तत्त्व प्रकाश में आ जाते हैं।

**सांख्य-योग** में इन सूक्ष्म पृथिवी आदि कणों (परमाणुओं) का पारिभाषिक नाम **'विशेष'** है। इन्हीं विशेषों को मूल मानकर कणाद ने अपने शास्त्र का आरम्भ किया। इसी कारण शास्त्र का नाम **'वैशेषिक'** हुआ। **'विशेषमधिकृत्य प्रवर्त्तते शास्त्रं वैशेषिकम्।'** इस प्रकार आधिभौतिक जगद्रचना की पूर्ण प्रक्रिया का विवरण वैशेषिक और सांख्य मिलकर करते हैं। इनमें विरोध की संभावना भी नहीं है।

**न्याय-दर्शन** मुख्य रूप से केवल उन प्रमाणों का वर्णन करता है, जिनके सहयोग से आधिभौतिक आदि समस्त तत्त्वों का ऊहापोहपूर्वक यथायथ विवरण प्रस्तुत किया जाता है। प्रमाण के लक्ष्य-निर्देश की भावना से न्याय में केवल एकमात्र प्रमेय आत्म-तत्त्व का विवेचन है तथा उसी से सम्बद्ध शरीर, इन्द्रिय आदि का। शेष समस्त दर्शन प्रमाणों के दोषरहित स्वरूप का विवरण प्रस्तुत करने में पूरा हुआ है।

**योग-दर्शन** सांख्य के एक अङ्ग को पूरा करता है। सांख्य में तत्त्वों का विवेचन इस प्रयोजन से हुआ है कि प्रकृति और पुरुष (जड़-चेतन) के पारस्परिक भेद के साक्षात्कार का मार्ग खुल सके। उस भेद का साक्षात्कार करने की पूर्ण पद्धति को यह दर्शन प्रस्तुत करता है। इस प्रकार जड़-चेतन भेद के साक्षात्कार ज्ञान की योग प्रतिपाद्य इन प्रक्रियाओं के मुख्य साधनभूत मन अथवा अन्त:करण की जिन विविध अवस्थाओं के विश्लेषण का योग में वर्णन किया गया है, वह मनोविज्ञान की विभिन्न दिशाओं का एक केन्द्रभूत आधार है। समाज की समस्त गतिविधियों की डोर इसी के हाथ में रहती है। इसका किसी भी शास्त्र से विरोध कैसे संभव है?

**मीमांसा-दर्शन** कर्त्तव्य-अकर्त्तव्यों का विश्लेषणात्मक विवेचन प्रस्तुत करता है। समाज के लिये उन अनुष्ठानों का वर्णन करता है, जो वर्त्तमान में उसके अभ्युदय और मृत्यु के अनन्तर कल्याण के साधन हैं। यह उन मनोदशाओं का प्रदीप है, जो अन्तर्निविष्ट रहती हुई समाज को विविध प्रकार के खेल खिलाया करती हैं। कोई ऐसा दर्शन नहीं, जो इसका विरोध करे। यह सभी को मान्य है।

**वेदान्त-दर्शन** समस्त विश्व के संचालक, नियन्ता चेतन तत्त्व का विवरण प्रस्तुत करता है। जगत् के कर्त्ता-धर्त्ता-संहर्त्ता के रूप में प्रत्येक शास्त्र ने इसे स्वीकार किया है। कोई इसका प्रतिषेध नहीं करता। वेदान्त का तात्पर्य केवल ब्रह्म के अस्तित्व एवं शुद्ध स्वरूप को उपपादन करने में है, अन्य तत्त्वों के प्रतिषेध में नहीं।

इस प्रकार सृष्टि-प्रक्रिया में अपेक्षित तत्त्वों का इन सभी दर्शनों में उपपादन हुआ। एक दर्शन का कोई एक विषय मुख्य प्रतिपाद्य है, अन्य प्रासङ्गिक हैं, जिनका अन्य दर्शनों में मुख्यतया प्रतिपादन हुआ है। इनमें विरोध की भावना न होकर अपेक्षित अङ्ग को पूर्ण करना मात्र ध्येय रहता है। इनमें आंशिक प्रक्रिया भेद भले हो, जो आवश्यक है। इस दृष्टि से निम्नलिखित विषयों पर संक्षिप्त विचार प्रस्तुत किया जाता है। प्राय: इन्हीं को विरोध के रूप में

मुख्यतया प्रस्तुत किया जाता है। वे विषय हैं-वेद-प्रामाण्य, ईश्वर का अस्तित्व, प्रमाणवाद, सत्कार्य-असत्कार्यवाद।

**वेद-प्रामाण्य** छहों दर्शनों में वेद के प्रति अत्यन्त आदरपूर्ण भावना प्रकट की गई है। कोई दर्शन ऐसा नहीं जहाँ वेद का निर्भ्रान्त प्रामाण्य स्वीकार न किया गया हो। 'स्वत:प्रामाण्य' और 'परत:प्रामाण्य' इन पदों की व्याख्या में भले ही प्रक्रिया का अन्तर हो, पर वेद के प्रामाण्य के लिये अन्य किसी के सहयोग या सहारे की अपेक्षा है- यह किसी को अभिमत नहीं है। किसी सिद्धान्त को वेद के आधार पर प्रकट कर देने पर वह उसका परिनिष्ठित स्तर मान लिया जाता है। विस्तार-भय से इस विषय के दर्शनसूत्रों का यहाँ उल्लेख नहीं किया गया।

**ईश्वर का अस्तित्व**-इसको सभी दर्शनों ने स्वीकार किया है। इस विषय में सबसे अधिक डिण्डिम घोष सांख्यदर्शन के लिये किया जाता है। ऐसा कहने वालों का विचार है कि ईश्वर का अस्तित्व जगत् के निर्माण व नियन्त्रण की दृष्टि से माना जाता है। पर सांख्य इस दिशा में प्रकृति को स्वतन्त्र मानकर ईश्वर की उपेक्षा कर देता है।

इस विषय में पहली बात है-कपिल के किसी सूत्र या कथन से यह स्पष्ट नहीं होता कि प्रकृति स्वतन्त्र है। सांख्य षडध्यायी और तत्त्वसमास सूत्रों में कोई ऐसा पद नहीं जो उक्त अर्थ को प्रकट करता हो। कतिपय व्याख्याकारों ने सांख्य-सिद्धान्त का उल्लेख करते हुए लिखा है कि सांख्य में प्रकृति को स्वतन्त्र माना गया है। यदि उनका 'स्वतन्त्र' पद से यह अभिप्राय है कि जगद्रचना में प्रकृति चेतन की अपेक्षा नहीं रखती, ईश्वर-चेतन की प्रेरणा के बिना ही जगद्रचना किया करती है, तो यही कहना होगा कि उन विद्वानों को कपिल सिद्धान्त समझने में भ्रम हुआ है।

यदि 'स्वतन्त्र' पद का यह तात्पर्य समझा जाता है कि प्रकृति उपादान कारण की सीमा में अन्य किसी के अस्तित्व को सहन नहीं करती, केवल मात्र वही उपादान तत्त्व है, इतने अंश में उसका और कोई सहयोगी नहीं, इसी दृष्टि से उसे 'स्वतन्त्र' कहा गया है, तो यह ठीक है। कपिल ने जगत् के उपादानरूप में प्रकृति के अतिरिक्त अन्य किसी तत्त्व को स्वीकार नहीं किया। फलत: ईश्वर चेतन की प्रेरणा के बिना स्वत: प्रकृति जगत् का निर्माण करती रहती है और यही उसकी स्वतन्त्रता है, यह कपिल सिद्धान्त प्रकट करना सर्वथा निराधार है। आचार्य वार्षगण्य का ऐसा सिद्धान्त रहा है, कपिल का नहीं।

सांख्यदर्शन के 'ईश्वरासिद्धे:' सूत्र में उपादानभूत ईश्वर को असिद्ध बताया गया है, ईश्वर के अस्तित्व को नहीं नकारा गया। ऋषि दयानन्द ने सत्यार्थप्रकाश सप्तम समुल्लास के ईश्वर-प्रकरण में सूत्र का यही अर्थ बताया है। कपिल ने स्वयं सांख्यसूत्र (३/५६,५७) में ईश्वर को स्पष्ट ही जगत्कर्त्ता लिखा है। इसी प्रसंग में ऋषि दयानन्द ने सांख्य का एक और सूत्र (५/८) उद्धृत कर उसका अर्थ किया है-''इसलिये परमेश्वर जगत् का उपादान कारण नहीं, किन्तु निमित्त कारण है। कपिल के समान अन्य भी सब दर्शनकारों ने ईश्वर के अस्तित्व को पूर्णरूप से स्वीकार किया है।''

**प्रमाण**-प्रमाण से अर्थ की सिद्धि होती है, इस मूल सिद्धान्त के स्वीकार करने से प्रमाण के अस्तित्व में किसी को नकार नहीं। परन्तु प्रमाणों की संख्या में विरोध का उद्भावन किया जाता है। विभिन्न दर्शनों में एक से लेकर आठ प्रमाण तक माने गये हैं। चार्वाक दर्शन में केवल एक प्रत्यक्ष प्रमाण स्वीकार्य है। वैशेषिक और बौद्ध दर्शन में प्रत्यक्ष और अनुमान दो प्रमाण हैं। सांख्य-योग में शब्द प्रमाण को पूर्वोक्त दो में जोड़कर तीन प्रमाण माने हैं। न्यायदर्शन में उपमान को जोड़कर चार संख्या बताई। मीमांसा और वेदान्त में इनके अतिरिक्त अर्थापत्ति और अनुपलब्धि ये दो प्रमाण और बताकर छ: माने गये। कुछ प्राचीन नैयायिक तथा पुराण ऐतिह्य और सम्भव ये दो अधिक बताकर आठ प्रमाण मानते हैं।

इस विषय में यह निश्चित मत है कि वस्तु-सिद्धि में किसी भी उपयुक्त प्रकार को अस्वीकार नहीं किया जाता, फिर प्रवक्ता और बोद्धारूप में अनेक प्रकार के अधिकारी होते हैं। उनके स्तर एवं परिस्थिति के अनुसार वस्तु तत्त्व को स्पष्ट करने के लिये तदुपयोगी प्रक्रियाओं को मान लिया जाता है, यद्यपि वे प्रकार अधिक व्यवस्थित प्रक्रियाओं के अन्तर्गत ही होते हैं। इसलिये जिन दर्शनों में प्रमाणों की संख्या न्यून मानी गई है, वे भी शेष को प्रमाण माने जाने का विरोध नहीं करते। उनका कहना है कि इनको अतिरिक्त

प्रमाण मानने की आवश्यकता नहीं। वैसे यदि उनका उपयोग कहीं अपेक्षित है, तो इसमें उन्हें कोई आपत्ति न होगी।

ऋषि दयानन्द ने अपने ग्रन्थों में जहाँ-तहाँ आठ प्रमाणों का उल्लेख कर इसी अर्थ को स्पष्ट किया है। फलतः इस विषय के आधार पर भी जो परस्पर विरोध की भावना प्रकट की जाती है, उसे निराधार ही समझना चाहिये।

**सत्कार्य-असत्कार्यवाद**-यह वाद वस्तुओं के कार्य-कारणभाव पर आश्रित है। जो वस्तु कार्य है, उसका उपादान कारण कोई अवश्य होगा। कार्य वह वस्तु है, जो अपने कारणों से उत्पन्न होती या जनी जाती है। प्रश्न यह है-वह वस्तु जो अपने कारणों से जनी गई है, उस जन्म से पहले भी वह अपने उपादान कारण में है, या नहीं? ''है'' यह सत्कार्य सिद्धान्त है। इसका अभिप्राय है, प्रत्येक कार्यवस्तु अपने जन्म से पहले भी अपने उपादान कारणों में विद्यमान रहती है। ''नहीं'' यह असत्कार्यवाद है। अर्थात् कोई भी कार्य अपनी उत्पत्ति से पूर्व अपना अस्तित्व नहीं रखता। स्पष्ट ही ये वाद परस्पर विरुद्ध प्रतीत होते हैं।

**असत्कार्यवाद** का तर्क है-यदि बुने जाने से पहले ही कपड़ा धागों में विद्यमान है, तो फिर बुने जाने की आवश्यकता क्या है? तथा जो काम कपड़े से लिया जाता है, वह धागों से ले लेना चाहिये। पर व्यवहार में ऐसा संभव नहीं, धागों को बिना बुने काम नहीं चलता, और कपड़े का काम भी धागों से नहीं लिया जाता। स्पष्ट है, बुने जाने से पहले कपड़ा नहीं था, बुने जाने पर बना। इसलिये उत्पत्ति से पूर्व कार्य को असत् माना जाना युक्त एवं व्यवहार के अनुकूल है।

इस पर सत्कार्यवाद का तर्क आगे आता है-यदि धागों में कपड़ा नहीं है, तो जैसे धागों में नहीं है, वैसे मट्टी के डलों में भी नहीं है। धागों और डलों में कपड़े का समान रूप से अभाव है। तो जैसे धागों से कपड़ा उत्पन्न होता है, वैसे डलों से क्यों नहीं होता? यदि डलों से नहीं होता, तो धागों से भी नहीं होना चाहिये। पर व्यवहार में ऐसा नहीं देखा जाता। हम जानते और देखते हैं, कपड़ा धागों से बनता है, डलों से नहीं। स्पष्ट है कि जहाँ जो वस्तु है, वहीं से निकलेगी। इससे धागों में कपड़े की विद्यमानता जानी जाती है। फलतः अपने प्रकट होने से पहले भी कार्य कारण में विद्यमान रहता है।

**असत्कार्यवाद** का यहाँ कहना है-यदि कार्य की सत्ता पहले से है, तो उसके लिये प्रयत्न क्यों किया जाता है? सत्कार्यवाद का उत्तर है-कारणों में छिपे हुए (अन्तर्हित) कार्य को प्रकट करने के लिये प्रयत्न किया जाता है, परन्तु असत्कार्यवाद इसका क्या समाधान करता है? कि कपड़ा बनाने के लिये धागों का ही क्यों संग्रह किया जाता है, डलों का क्यों नहीं? तथा घड़ा बनाने के लिये डलों का ही क्यों संग्रह किया जाता है, धागों का क्यों नहीं? जबकि दोनों जगह कार्यों का अभाव समान रूप से विद्यमान रहता है। इस संघर्ष का समाधान **महर्षि गौतम** ने **न्यायदर्शन** के एक सूत्र (४/१/५०) द्वारा किया-

''**बुद्धिसिद्धन्तु तदसत्।**''

वह कार्य जो उत्पत्ति से पूर्व असत् कहा जाता है, वस्तुतः उसका अस्तित्व बुद्धिसिद्ध रहता है। इसका अभिप्राय है-एक व्यवस्था देखी जाती है कि नियत कारणों से ही कोई कार्य-विशेष उत्पन्न होता है। प्रत्येक कार्य प्रत्येक कारण से उत्पन्न नहीं होता। इससे यह परिणाम निकलता है कि कार्य का निर्माता अपनी बुद्धि द्वारा इस स्थिति को जानता है कि इन कारणों से अमुक कार्य उभर सकता या उत्पन्न हो सकता है। कार्य की आकृति लम्बाई, चौड़ाई, गोलाई, छोटाई, बड़ाई आदि प्रत्येक स्वरूप का उसे ज्ञान है कि इस कारण से मैंने इस-इस प्रकार का कार्य बनाना या प्रकट करना है। वह उस कार्य के नियत स्वरूप को उन कारणों में अन्तर्हित जानता है। कारणों में छिपा हुआ कार्य का स्वरूप उसे अभिव्यक्त है, उसी नियत धारणा के साथ वह प्रयत्न करता है और जोड़-तोड़ तथा काट-छांट कर उसी धारणा के अनुसार कार्य प्रकट में आ जाता है। यदि ऐसा न हो, तो कभी कोई नियत अवयव-सन्निवेश का कार्य उभार में नहीं आ सकता। फिर तो '**नारदं कुर्वाणो वानरं चकार**' वाली कहावत ही सामने आयेगी।

कार्य-कारण की इस परिस्थिति को गम्भीरता से समझने पर यह परिणाम स्पष्ट होता है कि गौतम के विचार के अनुसार भी कारण में कार्य का अस्तित्व 'स्व' रूप से तो नहीं, पर निर्मातृबुद्धि द्वारा उसकी रूप-रेखा का निश्चय

कारणों के रूप में अवश्य रहता है। यदि यह वर्णन यथार्थ है तो विरोध की परिस्थिति यहाँ आकर अपना दम तोड़ जाती है। **सत्कार्यवाद** में भी कार्य के प्रकट होने से पहले कार्य के अभिव्यक्त 'स्व' रूप के अस्तित्व को स्वीकार नहीं किया जाता, प्रत्युत अनभिव्यक्त कार्यरूप ही कारणरूप में अन्तर्हित माना जाता है। इस प्रकार वस्तु तत्त्व के वर्णन करने की रीति में भले ही कुछ अन्तर हो, पर मन्तव्य अर्थ लगभग एक स्तर पर आ जाता है।

अन्य भी अनेक दार्शनिक विषयों व सिद्धान्तों पर प्रकाश डालकर महर्षि दयानन्द ने उनकी यथार्थ दिशा को समझने का प्रयास किया है। जीवात्मा-परमात्मा का भेद, जगत् के उपादान और निमित्त कारणों का एक न होना, सांख्य की प्रकृति और वैशेषिक के परमाणु का जगत्सर्ग की प्रक्रिया में स्थान, मोक्ष से पुनरावर्त्तन आदि ऐसे ही सिद्धान्त हैं।

महर्षि प्रदर्शित दार्शनिक विचारों की छाया में दर्शन शास्त्र का अध्ययन, वैदिक दर्शनों के तथाकथित विरोध की भावना को परास्त कर उनके पारस्परिक सहयोग की भावना को उभारता है। इसी रूप में इन छः वैदिक दर्शनों के व्याख्यान 'दयानन्द दर्शन' है। इस नाम से किसी अतिरिक्त दर्शन की कल्पना ऋषि के साथ अन्याय होगा। ऋषि ने इन्हीं दर्शनों को प्रमाण मान अपनी रचनाओं में स्थान-स्थान पर उल्लिखित किया है, पर उन्हीं सिद्धान्तों के साथ, जो ऋषि ने इन दर्शनों के आधार पर प्रकट किये हैं।

## अतिथि-यज्ञ के होताओं से अनुरोध

अतिथि-यज्ञ के होताओं से उनकी वैवाहिक वर्षगाँठ अथवा जन्मदिन व विभिन्न अवसरों पर ५१०० रु. प्रतिवर्ष सभा को प्राप्त होते रहते हैं। जो महानुभाव संकल्प के साथ इस पुनीत कार्य से जुड़े हुए हैं, उनसे हमारा अनुरोध है कि वे अपनी राशि भेजते समय **जन्मतिथि/ वैवाहिक वर्षगाँठ आदि व दूरभाष संख्या** सूचित करना न भूलें। साथ ही यह भी अवश्य सूचित करा देवें कि पहले से भिजवा रहे हैं अथवा नया शुरू किया है। आप अपनी राशि सभा के बैंक खाते में नकद अथवा चैक द्वारा जमा करा सकते हैं।

## ऋषि मेला २०१७ हेतु स्टॉल आवंटन

प्रति वर्ष की भांति इस वर्ष ऋषि मेला २७, २८, २९ अक्टूबर शुक्र, शनि, रविवार २०१७ को ऋषि उद्यान में आयोजित होगा। उसमें आर्य जगत् का साहित्य, हवन सामग्री, अन्यान्य सामग्री की स्टॉल लगती हैं। प्रति स्टॉल किराया १००० रु. निर्धारित है। जिसकी राशि पहले जमा होगी उसी क्रम से स्टॉल का आवंटन होगा। जिन महानुभावों को जितनी स्टॉल की आवश्यकता है, उसी अनुरूप राशि बैंक ड्राफ्ट द्वारा या नकद जमा करावें।

**स्टॉल सुविधाः**- कारपेट, दो टेबल, दो कुर्सी, २ ट्यूब लाइट प्रति स्टॉल। **स्टॉल साइज**- ७.५×१५ फीट।

**ध्यातव्य**- **१.** स्टॉल में रखी टेबल, कुर्सी आदि पूर्व निर्धारित सामग्री को इधर-उधर या अन्य स्टॉल में न बदलें। **२.** अतिरिक्त सामग्री की आवश्यकता हो तो टैन्ट हाउस के कर्मचारी से सम्पर्क कर प्राप्त करें तथा निर्धारित राशि तुरन्त भुगतान करें। **३.** बिस्तर, रजाई, चादर, तकिया को टेन्ट हाउस कर्मचारी से प्राप्त कर निर्धारित राशि जमा करा दें। **४.** स्टॉल व्यवस्थापक से स्टॉल संख्या, राशि की रसीद दिखाकर प्राप्त करें। बिना पूर्व अनुमति के स्टॉल में सामान न रखें, न अधिकृत करें। **५.** आपके सक्रिय सहयोग व अनुशासन की अपेक्षा है। अनियमितता को स्थान न देवें। ६. अपना मोबाइल (चलभाष) नवम्बर देना अति आवश्यक है। ७. आप अपना स्थाई पता अवश्य देवें। ८. स्टॉल में आप पुस्तकें/दवाइयाँ/अन्य सामग्री का उल्लेख अवश्य करें। ९. स्टॉल आवंटन हेतु अग्रिम राशि जमा करावें, अन्यथा विचार सम्भव नहीं होगा। १०. एक पासपोर्ट फोटो भिजवावें, जो परिचय पत्र के साथ अंकित हो। उसमें स्टॉल आवंटन संख्या भी अंकित किया जाएगा। ११. स्टॉल आवंटन की सूचना निर्धारित अवधि में दी जायेगी। **नोटः**- किसी प्रकार का अवैदिक साहित्य एवं सामग्री न हो अन्यथा उचित कार्यवाही सम्भव होगी।

## परोपकारी के सुधी पाठकों के लिए आवश्यक सूचना

परोपकारी शुल्क भेजते समय नये या पुराने ग्राहक के उल्लेख के साथ-साथ ग्राहक संख्या अवश्य लिखें, अन्यथा शुल्क जमा करने में कठिनाई आती है। फलस्वरूप पाठकों के पास पत्रिका नहीं पहुँच पाती है। ऐसे ही अपना नाम हटवाते व जुड़वाते समय दूरभाष संख्या सहित अपना पूरा विवरण लिखकर भेजें। ई.एम.ओ. के द्वारा शुल्क भेजने वाले ग्राहक भी सन्देश के साथ अपनी ग्राहक संख्या सहित पूरा विवरण भेजें। परोपकारी पत्रिका कार्यालय से निरन्तर भेजी जाती है, फिर भी जिन लोगों के पास पत्रिका का कोई अंक प्राप्त ना हुआ हो तो कृपया पत्र या दूरभाष द्वारा हमें सूचित करें, ताकि हम वह अंक पुनः भेज सकें, साथ ही अपने डाकघर में इसकी जाँच आदि भी करें।

## धनराशि भेजने हेतु सूचना

परोपकारिणी सभा महर्षि दयानन्द सरस्वती द्वारा स्थापित सभा है एवं उनके कार्यों को आगे बढ़ाने के लिय कृत संकल्प है। सभा द्वारा ऋषि के स्वनानुरूप गुरुकुल, संन्यास एवं वानप्रस्थाश्रम, ध्यान शिविर, वैदिक साहित्य का प्रकाशन, देश में प्रचार, परोपकारी पत्रिका के माध्यम से जन जागरण, भव्य अतिथिशाला, भोजनशाला आदि अनेक प्रकल्पों का संचालन हो रहा है। ये सभी कार्य आर्यजनों के सात्विक दान से ही होते हैं। अतः दानी महानुभावों से निवेदन है कि वेद, ईश्वर, दयानन्द के इस कार्य में अपना सहयोग अवश्य प्रदान करें।

चैक, ड्राफ्ट, धनादेश (मनीआर्डर) द्वारा राशि भेजने वाले उन पर '**परोपकारिणी सभा**' अवश्य लिख दें। दानी महानुभाव ऑनलाइन भी राशि जमा करवा सकते हैं। भारतीय स्टेट बैंक में एक सहस्र तक की राशि जमा कराने वाले **२५ रु. बैंक सेवा शुल्क के रूप में अतिरिक्त** जमा करवाने की कृपा करें। कृपया, राशि निम्नांकित बैंकों में ऑनलाइन भिजवाकर, जमा कराई गई स्लिप के साथ उद्देश्य लिखकर सभा कार्यालय को सूचित करवाने का कष्ट करें।

**खाताधारक का नाम - परोपकारिणी सभा, अजमेर (PAROPKARINI SABHA AJMER)**

**१. बैंक बचत खाता (Savings) संख्या-091104000057530 बैंक का नाम-आई.डी.बी.आई. बैंक, पावर हाउस के सामने, जयपुर रोड, अजमेर।**
**IFSC - IBKL0000091**

**२. बैंक बचत खाता (Savings) संख्या - 10158172715 बैंक का नाम - भारतीय स्टेट बैंक, डिग्गी बाजार, अजमेर।**
**IFSC - SBIN0007959**

जैसे वेद के वेत्ता विद्वान् लोग वेदानुकूल मार्ग से परमेश्वर को जानकर उत्तम ज्ञान से उसका सेवन करते हैं, वैसे ही जगदीश्वर सब को उपासनीय अर्थात् सेवन करने के योग्य है, वैसे ज्ञान के विना ईश्वर की उपासना कभी नहीं हो सकती क्योंकि विज्ञान ही उसकी अवधि है।

**- महर्षि दयानन्द, यजुर्वेद, भावार्थ ८.४१**

# वैचारिक क्रान्ति के लिए सत्यार्थ प्रकाश पढ़ें।

# स्वामी दयानन्द और आर्यसमाज

-महात्मा गांधी

*(यह लेख अपने प्रकाशन के समय चर्चा का केन्द्र रहा है। आज जब [illegible] के अपराध के पश्चात् उसी प्रकार के विचार इधर-उधर सुनने को मिलते हैं तो यह उचित है कि उन शंकाओं पर दृष्टिपात कर लिया जाय। इसके पाठक को अपने निष्कर्ष निकालने में सहायता मिलती है। यह प्रसंग पं. [illegible] ने आर्य (मासिक) लाहौर के अंक [illegible] फरवरी सन् १९२४ के भाग ६ अंक ८ से महात्मा गांधी के लेख और पं. चमूपति द्वारा दिये गये समाधान सहित उद्धृत कर प्रस्तुत किया है। आशा है पाठक इससे लाभान्वित होंगे। -सम्पादक)*

'यंग इंडिया', दिनांक २९ मई १९२४ में महात्मा गांधी ने हिन्दू-मुस्लिम मनमुटाव पर अपने विचार प्रकट किये हैं। उसी लेख में महात्मा ने ऋषि दयानन्द और आर्यसमाज को दोषी ठहराया है। उनके लेख का वह भाग जिस में आर्यसमाज और उसके प्रवर्तक पर चोटें की हैं, नीचे उद्धृत किया जाता है-

स्वामी श्रद्धानन्द जी पर भी आक्षेप किया जाता है। मैं यह जानता हूँ कि उनके व्याख्यान भड़काने वाले होते हैं, परन्तु वे हिन्दू-मुस्लिम एकता में भी विश्वास करते हैं। दुर्भाग्य से उनका यह विश्वास है कि किसी दिन सारे मुसलमान आर्य बन जायेंगे जिस प्रकार कि सम्भवतः बहुत से मुसलमान यह समझते हैं कि किसी दिन सारे गैर-मुसलमान इस्लाम को स्वीकार कर लेंगे। श्रद्धानन्दजी निर्भीक हैं। उन्होंने अकेले ही एक निर्जन जंगल में आलीशान विश्वविद्यालय की स्थापना की। उनका अपनी शक्ति तथा उद्देश्य में विश्वास है, परन्तु वे जल्दबाज हैं और शीघ्रता से क्रोध के आवेश में आ जाते हैं। उन्होंने आर्यसमाजिक स्वभाव विरासत में लिये हैं। स्वामी दयानन्द सरस्वती के लिये मेरे दिल में बड़ा सम्मान है। मैं समझता हूँ कि उन्होंने हिन्दू-धर्म की बड़ी सेवा की है। उनकी वीरता में कोई सन्देह नहीं किया जा सकता, परन्तु उन्होंने हिन्दू-धर्म को तंग बना दिया है। मैंने आर्यसमाजियों की बाइबिल सत्यार्थप्रकाश को पढ़ा है। जबकि मैं यरवदा जेल में था तब मेरे मित्र ने मेरे पास इसकी तीन प्रतियाँ भेजी थीं। मैंने इस प्रकार के महान् सुधारक के हाथ से लिखी, इससे अधिक निराशाजनक और कोई पुस्तक नहीं पढ़ी। उन्होंने इस बात का दावा किया है कि वह सच के प्रतिपादक हैं, परन्तु उन्होंने अनजाने जैन धर्म, बौद्ध धर्म, ईसाई मत तथा इस्लाम को अशुद्ध जाना है। उन्होंने संसार भर के एक अत्यन्त विशाल और उदार धर्म को संकुचित बना दिया है। मूर्तिपूजा के विरुद्ध होते हुए भी उन्होंने एक सूक्ष्म मूर्तिपूजा चलाई है, क्योंकि उन्होंने वेद अक्षर को है और सब विद्याओं का होना वेद में बताया है। आर्यसमाज की उत्पत्ति का कारण सत्यार्थप्रकाश की शिक्षायें नहीं हैं, परन्तु इसके प्रवर्तक का उत्तम चरित्र है। जहाँ कहीं भी आर्यसमाजियों को देखो वहीं जीवन दृष्टिगोचर होता, परन्तु दृष्टि के संकुचित और झगड़ालू होने के कारण से वे और मतों के लोगों से लड़ाई ठान लेते हैं और जब कोई और लड़ने को नहीं होता तो आपस में लड़ पड़ते हैं। उनको आपस में लड़ते देखा है। श्रद्धानन्दजी में इस भाव की पर्याप्त मात्रा है, परन्तु इन सब दोषों के होते हुए भी वह इस योग्य हैं कि उन के लिए शुभकामना करें। यह सम्भव है कि मेरे इस लेख से आर्यसमाजियों को क्रोध आयेगा, परन्तु मैं किसी पर आक्षेप करने के लिए नहीं लिख रहा हूँ। मेरा समाजियों से प्रेम है क्योंकि उनमें से बहुत से मेरे सहयोगी हैं। जब दक्षिण अफ्रीका में था तब भी स्वामीजी से मेरा प्रेम था, परन्तु अब मेरा उनसे पास का परिचय हो गया है परन्तु मेरा उनसे प्रेम कम नहीं हुआ। ये सब बातें मैंने प्रेम भाव से लिखी हैं।

**शुद्धि और तबलीग**

शुद्धि करने का वर्तमान ढंग हिन्दू-मुस्लिम एकता को बिगाड़ने का एक प्रधान कारण है। मेरी सम्मति में हिन्दू-धर्म में कहीं भी ऐसी शुद्धि का विधान नहीं है-जैसी ईसाइयों और उनसे कम मुसलमानों ने समझी है। मैं समझता

हूँ कि इस प्रकार के प्रचार का ढंग आर्यसमाज ने ईसाइयों से लिया है। यह वर्तमान ढंग मुझे अपील नहीं करता। इससे लाभ की अपेक्षा हानि ही अधिक हुई है। एक आर्यसमाज का प्रचारक कभी इतना बड़ा प्रसन्न नहीं होता, जितना दूसरे धर्मों की निन्दा करने से। मेरी हिन्दू प्रकृति मुझ से कहती है कि सब धर्म थोड़े बहुत सच्चे हैं। सब का स्रोत एक ही परमात्मा है, परन्तु क्योंकि उनके आने का साधन अपूर्ण मनुष्य है इसलिये सब धर्म अपूर्ण हैं। वास्तविक शुद्धि यही है कि प्रत्येक मनुष्य अपने-अपने धर्म में पूर्णता प्राप्त करे। यदि धर्म परिवर्तन से आदमी में कोई उच्चता पैदा न हो तो इस प्रकार के धर्म-परिवर्तन से कोई लाभ नहीं। हमें इससे क्या लाभ होगा कि यदि हम अन्य मतावलम्बियों को अपने धर्म में लायें जबकि हमारे धर्म के बहुत से अनुयायी अपने कार्यों से परमात्मा की सता से इन्कार कर रहे हैं। चिकित्सक पहिले अपने आपको स्वस्थ करे यह एक नित्य सच्चाई है। यदि आर्यसमाजी शुद्धि के लिये अपनी अन्तरात्मा से आवाज पाते हैँ तो विशेष उन्हें इसके जारी रखने में कोई संकोच न करना चाहिये। इस प्रकार की आवाज के लिए समय की तथा अनुभव के कारण कोई बाधा नहीं हो सकती। यदि अपनी आत्मा की आवाज को सुन कर कोई आर्यसमाजी या मुसलमान अपने धर्म का प्रचार करता है और उसके प्रचार करने से यदि हिन्दू-मुस्लिम ऐक्य में विघ्न पड़े तो इसकी परवाह नहीं करनी चाहिये। इस प्रकार के आन्दोलनों को रोका नहीं जा सकता। केवल उनके आधार में सच्चाई होनी चाहिये। यदि मलकाने हिन्दू धर्म में आना चाहते हैं, तो इसका उनको पूरा अधिकार है, परन्तु ऐसा कोई भी कार्य नहीं किया जाना चाहिये जिससे दूसरे धर्मों को हानि पहुँचे। इस प्रकार के कार्यों का समूह रूप से विरोध करना चाहिये। मुझे पता लगा है कि मुसलमान और आर्यसमाजी दोनों ही स्त्रियों को भगाकर अपने धर्मों में लाने का उद्योग करते हैं।

# आर्यसमाज और महात्मा गाँधी

**-पं. चमूपति एम.ए.**

'यंग इण्डिया' में प्रकाशित महात्मा गाँधी के लेख का वह अंश जिसमें ऋषि दयानन्द और आर्यसमाज का उल्लेख है, गत पृष्ठों में उद्धृत कर दिया गया है। उसके देखने से पाठकों को अवगत हो जायेगा कि महात्मा जी को निम्नलिखित विषयों पर एतराज है:-

१. स्वामी श्रद्धानन्द के व्याख्यानों पर और उनके इस विश्वास पर कि हर एक मुसलमान आर्य बनाया जा सकता है।

२. स्वामी श्रद्धानन्द की जल्दबाजी और शीघ्र रुष्ट हो जाने की प्रकृति पर जो उन्हें आर्यसमाज से दायभाग में मिली है।

३. स्वामी दयानन्द की शिक्षा पर जिन्होंने भूमण्डल के एक विशाल और उदारतम धर्म को संकुचित बना दिया है और अनजाने जैन धर्म, इस्लाम, ईसाई धर्म और खुद हिन्दू धर्म की मिथ्या व्याख्या की है।

४. सत्यार्थप्रकाश पर, जो एक सुधारक की निराशाजनक कृति है।

५. वेदों के अक्षरश: सत्य माने जाने और सम्पूर्ण विद्याओं का कोष होने पर, जिसे वे एक सूक्ष्म प्रकार की मूर्तिपूजा मानते हैं।

फिर शुद्धि-आन्दोलन पर टिप्पणी करते हुए महात्मा जी लिखते हैं:-

६. हिन्दू धर्म में शुद्धि का विधान नहीं।

७. आर्यसमाज ने अपनी प्रचार प्रणाली में ईसाइयों का अनुकरण किया है जिससे लाभ के स्थान पर हानि हुई है।

८. वास्तवकि शुद्धि तो यह है कि प्रत्येक नर-नारी अपने धर्म में रहकर पूर्णता प्राप्त करे।

९. यदि आर्यसमाज का शुद्धि का भाव अन्तरात्मा की आवाज है तो उसे रोका नहीं जा सकता। उस पर समय की कैद नहीं हो सकती और ना ही प्रतिकूल अनुभव के कारण उसे बन्द किया जा सकता है।

१०. मुझे कहा गया है कि आर्यसमाजी और मुसलमान औरतों को बहका ले जाते हैं और उन्हें अपने मत में प्रविष्ट

कराने का यत्न करते हैं।

**स्वामी श्रद्धानन्दजी के व्याख्यान** - हम आज यत्न करेंगे कि इनमें से हर एक आक्षेप का जो आर्यसमाज और उसके प्रवर्तक पर लगाने का यत्न किया गया है, ठंडे हृदय से उत्तर दें। श्री स्वामी श्रद्धानन्दजी के व्याख्यान कैसे होते हैं उनके सम्बन्ध में इस लेख में विचार करने की आवश्यकता नहीं। महात्माजी ने स्वामी जी की वक्तृताओं से कोई वाक्य उद्धृत नहीं किए, जिनके आधार पर किए गए आक्षेप का समर्थन या निराकरण किया जा सके। मौलाना मोहम्मद अली की वक्तृता से, जो उन्होंने काँग्रेस के सभापति की हैसियत से दी थी, एक भाग महात्मा ने मौलाना के सामने रख दिया कि यह भाग आक्षेपयुक्त है, मौलाना ने अपनी अशुद्धि को स्वीकार किया। यद्यपि स्वीकृति सर्वसाधारण में नहीं हुई तो भी महात्मा जी सन्तुष्ट हो गए कि मौलाना का व्यवहार दोषयुक्त नहीं। श्री स्वामीजी पर महात्मा जी की यह कृपा न सही कि उनसे एकान्त में बातचीत कर लें, कम से कम पत्र में ही उनके कुछ वाक्य उद्धृत कर देते, स्वामीजी उनका उत्तर दे देते तो हम भी अपनी सम्मति प्रकट करते। इस समय महात्माजी का यह आक्षेप विचार का विषय नहीं हो सकता कि श्री स्वामी जी की वक्तृताएँ असन्तोष पैदा करती हैं।

क्या प्रत्येक मुसलमान आर्य बनाया जा सकता है? हाँ! स्वामीजी का यह विश्वास कि हर एक मुसलमान आर्य बनाया जा सकता है सारे आर्यसमाज का विश्वास है। बनाया जा सके या न, यत्न आवश्यक है और वह धार्मिक कारणों से, राजनैतिक कारणों से नहीं। स्वराज्य प्राप्त हो सकता है यदि मुसलमान आर्य धर्म को स्वीकार न भी करें! हाँ! उन्हें आर्यों के साथ मिलकर रहना आना चाहिये। भारतीय नागरिकता के कर्त्तव्य सीखने चाहिएँ, अपने पड़ोसियों पर हाथ नहीं डालना चाहिए। यदि इस्लाम यह शिक्षा दे सके तो पर्याप्त है, नहीं तो यह शिक्षा भी उन्हें आर्य धर्म से लेनी होगी अथवा महात्मा गाँधी ही उन्हें समझा दें। केवल इसी आवश्यकता के लिए हम उन्हें आर्यसमाज का सभासद बनाना नहीं चाहते।

कुछ हो, इस बात पर विश्वास होना कि हर एक मुसलमान आर्य बन सकेगा दौर्भाग्य का निशान क्यों है?- यदि मौलाना मोहम्मद अली प्रतिदिन यह प्रार्थना कर सकते हैं कि महात्मा गांधी मुसलमान हो जायें तो स्वामी श्रद्धानन्द जी क्यों यह विश्वास नहीं रख सकते कि हर एक मुसलमान आर्य बन जायेगा?

आर्यसमाज का बच्चा-बच्चा ही इसी विश्वास के साथ जीता है कि केवल मुसलमान ही नहीं किन्तु समस्त संसार एक दिन आर्य बन जायेगा। श्रीकृष्ण ने कहा है-''तेरा अधिकार काम करने का है फल के लिए आग्रह करने का नहीं।'' श्री कृष्ण का यह कहना आर्यसमाजियों की कार्यप्रणाली का सुनहरा नियम है। हम यत्न करते जाते हैं उसमें सफलता वा असफलता देना न देना परमात्मा का काम है।

हम वैदिक धर्म को परमात्मा का धर्म समझते हैं। वेद कहता है-**इन्द्रं वर्धन्तोऽ अमुरः कृण्वन्तो विश्वमार्यम्।** परमात्म का राज्य बढ़ाओ, आतुनि से, अधैर्य से इस कार्य में कदम बढ़ाओ। प्रश्न हो सकता है कैसे बढ़ाएँ?-वेद कहता है-सारे संसार को आर्य बना कर। हम वेद की इस आज्ञा से बद्ध हैं-वह आर्य नहीं जिस का सिर वेद की आज्ञाओं के सामने रात दिन झुका न रहता हो। हमें शान्ति हराम है, हमें सुख हराम है, नींद हराम है, यदि हम रात-दिन यही न सोचा करें कि संसार आर्य हो जाय। मौलाना मोहम्मद अली ने काकीनाड़ा में भाषण करते हुए शुद्धि की यही व्याख्या की थी और वह व्याख्या ठीक है। उन्होंने शिकायत की थी कि हिन्दू धर्म प्रचारक धर्म नहीं है उन्होंने कहा था कि ''अगर आज जबकि मेरे हिन्दू भाइयों की सरगर्मियों में तबलीगी जोश के निशानात पाये जाते हैं मैं उनकी अपने धर्म फैलाने की कोशिशों से नाराज हूँ, तो ताज्जुब है।'' मौलाना मोहम्मद अली स्वामी श्रद्धानन्दजी के उक्त विश्वास से रुष्ट नहीं हो सकते, हाँ! महात्मा गाँधी के लिए रुष्टता का कारण है। क्या सचमुच यह दुर्भाग्य होगा कि मौलाना मोहम्मद अली जो महात्मा गाँधी के मित्र हैं आर्य बन जायें और वह मित्रता जो अपनी वर्तमान अवस्था में कहने सुनने की मित्रता है रहने सहने की, मेल-मिलाप की, दिल की और दीन की मित्रता बन जाय।

**हिन्दू धर्म में शुद्धि** - महात्मा गाँधी का विचार यह है कि हिन्दू धर्म में शुद्धि नहीं। क्या यही हिन्दू धर्म की

उदारता और विशालता है? हम ऊपर कह आए हैं कि वेद की इस विषय में स्पष्ट आज्ञा है। देवल स्मृति में शुद्धि की इस विधि का पूरा विवरण दिया गया है। हिन्दू से अहिन्दू होने पर जिससे कोई व्यक्ति फिर हिन्दू बनाया जा सकता है। भविष्य पुराण में कण्व ऋषि का वर्णन आया है कि वह मिश्र देश में गये और हजारों मिश्रियों को अपना अनुयायी बना कर अपने धर्म में प्रविष्ट किया। जो-जो जिस-जिस वर्ण के योग्य था उसे वही वर्ण दिया गया। अभी यदुनाथ सरकार ने जो वर्तमान समय के उच्चतम ऐतिहासिकों में से एक है शिवाजी की जीवनी से एक घटना का उल्लेख किया है कि उनके Master of the house नेता जी पालकर को औरङ्गजेब ने मुसलमान बना लिया था, १० (दस) साल तक मुसलमान रहे। पंजाब और अन्य सूबों में काम करते रहे। बाद में वह शिवाजी के पास आवे और उनकी शुद्धि की गई। इस लेख का समर्थन हॉलैंड के कोठीदारों के एक पत्र से होता है जो उन्होंने सूरत से लिखा था। अत: शुद्धि प्रथम तो वेद के आदेश से आवश्यक हुई, फिर स्मृति ने वह विधि भी बता दी जिससे शुद्धि होती है, इतिहास ने इस बात की साक्षी दी कि शुद्धि की जाती रही है। यदि अब भी महात्मा जी का यही विश्वास है कि हिन्दू धर्म में शुद्धि का विधान नहीं तो इसका इलाज सिवाय इसके क्या हो सकता है कि महात्मा जी से प्रार्थना की जाय कि वह हिन्दू धर्म की व्याख्या करें अर्थात् बतायें कि वह कौनसा हिन्दू धर्म है जिसमें शुद्धि की आज्ञा नहीं?

**हिन्दू धर्म को किसने संकुचित किया?** - गत हिन्दू सभा की बैठक में सनातन धर्म के पण्डितों की उपस्थिति में शुद्धि का प्रस्ताव पास हुआ। अहिन्दू हिन्दू बनाया जा सकता है-यह घोषणा हिन्दू धर्म के प्रतिष्ठित पण्डितों की ओर से की जा चुकी है।

भिन्न-भिन्न मठों के शंकराचार्यों ने व्यवस्था दे दी है कि आज के ही नहीं पाँच-पाँच सौ साल के पतित हुए लोगों की सन्तान भी यदि आज वह चाहे तो उसे आर्य बनाया जा सकता है। आखिर वह हिन्दू धर्म कौन-सा है जो शंकराचार्यों का नहीं, हिन्दू सभा का नहीं, वेद का नहीं, स्मृति का नहीं, पुराण का नहीं, छत्रपति शिवाजी का नहीं-महात्माजी का है? क्या कोई ऐसा ही हिन्दू धर्म है जिसे स्वामी दयानन्द की शिक्षा ने संकुचित बना दिया? इस संकोच के दो अर्थ हो सकते हैं-'एक विचारों का संकोच' दूसरा 'क्षेत्र का संकोच'। श्री दयानन्द ने हिन्दू धर्म के विचारों को विस्तृत किया है वा संकुचित? इसके क्षेत्र को घटाया है वा बढ़ाया? वह हिन्दू धर्म जो पहिले केवल हिन्दुओं की सन्तानों का ही दायभाग था, उसका दरवाजा ऋषि ने मनुष्य मात्र के लिये खोल दिया। वह हिन्दू धर्म जो पहिले चौके और चूल्हे में बन्द था, जिसकी दृष्टि में अहिन्दू पतित थे अपवित्र थे-इसलिये नहीं कि उनके आचरण अपवित्र हैं किन्तु इसलिये कि उनका जन्म हिन्दुओं के घर नहीं हुआ-वह हिन्दू धर्म जो बंगाल की खाड़ी और अरब के समुद्र के बाहर कदम रखने से भ्रष्ट हो जाता था, और भारतवर्ष की भी मस्जिदें, गिरजे, जैनियों, बौद्धों और पारसियों के मन्दिर, उनके रहने के मकान, नहीं-नहीं उनके बूढ़ों, बच्चों, औरतों और मर्दों के कान, स्वयं हिन्दू जनता के १/५ भाग के कान इस योग्य न थे कि इस धर्म की दिल को मोहित करने वाली दुंदुभि से पवित्र होते, उसे दयानन्द ने सारे संसार के लिये समान कर दिया है। यह वह संकोच है जिसे दयानन्द संसार के एक विशालतम और उदारतम धर्म में लाया है। वस्तुत: दयानन्द ने अत्याचार किया है। हाँ! हिन्दू धर्म विशाल था, उदार था क्योंकि हिन्दू धर्म का कोई लक्षण न था। कोई परमात्मा को मानो न मानो। वेद की प्रतिष्ठा करो न करो। जीवों की रक्षा करो या कुर्बानी, कुछ करो अपने आपको हिन्दू कहो। प्रत्येक कार्य हिन्दू कार्य है। प्रत्येक विचार हिन्दू विचार है। हाँ! अहिन्दू की सन्तान को अपवित्र समझो और उससे घृणा करो। दयानन्द ने ऐसे हिन्दू धर्म को संकुचित किया। उसके विचारों को भी संकुचित किया और क्षेत्र को भी। यदि झूठ को सच्चाई की परिधि से निकाल देना सच्चाई का क्षेत्र तंग करना है, यदि दुराचार को सदाचार के क्षेत्र से बाहर करना सदाचार का दम घोटना है तो दयानन्द वस्तुत: दोषी है। उसने हिन्दू धर्म के क्षेत्र को संकुचित किया, उसका दम घोटा, संकुचित करने के स्यात् यह अर्थ हों कि हिन्दू धर्म में भिन्न-भिन्न मतों की समालोचना करने की प्रणाली का आविष्कार किया गया है। स्वामी दयानन्द के आने से पहिले हिन्दू धर्म एक भक्त था जिस के विषय में निम्न कथा वर्णित की गई

है-एक दिन एक महात्मा खाना पका रहे थे। भजन भी करते जाते थे, तवे पर से रोटी भी उतारते जाते थे। उन्होंने एक रोटी उतारी ही थी कि कुत्ता झपटा और रोटी उठा कर ले गया। महात्मा ने उस रोटी को अभी चुपड़ा न था। महात्मा ने घी की प्याली उठाई और कुत्ते के पीछे भागे। प्याली आगे-आगे करते थे और कहते थे-''रूखी न खाइयो, प्रभु! रूखी न खाइयो।''

**उदार हिन्दू धर्म** - अहिन्दू होने में लाभ था, हिन्दू होने में नुकसान। अपने दलित भाइयों को ही देख लो। जब तक वह हिन्दू है हमारे साथ नहीं छू सकते। ज्यूं ही मुसलमान या ईसाई हुए उनकी छूत हट गई। यह हिन्दूओं की उदारता थी इनका घर पेश, भार पेश, घर का माल असबाब सब पेश, कोई कुछ कह जाए चूँ नहीं करनी, चोर को कम्बल दे आना कि कहीं वह असफलता से निराश न हो, यह हिन्दुओं का काम था। अपनों से लड़ते थे। हिन्दुओं के दर्शन पढ़ जाओ, शास्त्रार्थों से परिपूर्ण हैं, लेकिन हिन्दुओं के साथ पिछले आचार्यों के आगे अहिन्दुओं का प्रश्न न आया था। स्वामी दयानन्द के सामने यह नई कठिनता थी कि हिन्दुओं के मत-मतान्तरों के अतिरिक्त अहिन्दु मतों ने भी डेरे डाले हुए थे। ऋषि के आने से पहिले प्रत्येक अहिन्दू प्रत्येक हिन्दू का अतिथि था। खाने-पीने में उससे घृणा करनी लेकिन उसके मत पर अंगुली न उठानी, वह गाली दे, गलोच दे, वेदों की निन्दा करे, शास्त्रों की निन्दा करे, हमारे महापुरुषों की निन्दा करे, चुप रहना । ऋषि आया और उसने सबसे पहिले यह पाठ पढ़ाया कि चोर और अतिथि में भेद करो। स्वामी से पहिले हिन्दुओं की ओर से दूसरे मतों का उत्तर दिया जा रहा था किन्तु उसे जाति न सुनती थी, और वह उत्तर अश्लील था। यदि महात्मा सत्यार्थप्रकाश के साथ-साथ मुंशी इन्द्रमणि इत्यादि के लेखों का अध्ययन कर लेते तो उन्हें मालूम होता कि ऋषि ने अहिन्दू मतों के साथ नरमी से काम लिया है वा कठोरता से। ऋषि को न हिन्दू का पक्षपात था और न अहिन्दू का। सत्यार्थप्रकाश, जो महात्मा गांधी के लिये निराशाजनक सिद्ध हुई है, उसकी भूमिका में महर्षि लिखते हैं 'यद्यपि मैं आर्यावर्त देश में उत्पन्न हुआ और बसता हूँ तथापि जैसे इस देश के मत मतान्तरों की मिथ्या बातों का पक्षपात न कर याथातथ्य प्रकाश करता हूँ वैसे ही दूसरे देशस्थ वा मतोन्नति चाहने वालों के साथ भी वर्तता हूँ।' आगे चलकर फिर कहा है- 'जैसा मैं पुराण, जैनियों के ग्रन्थ, बाइबिल और कुरान को प्रथम ही बुरी दृष्टि से न देख कर उनमें गुणों का ग्रहण और दोषों का त्याग करता हूँ वैसा सबको करना चाहिए।' ऋषि के सामने हिन्दू जाति पर अन्य मतों की मार हो रही थी, हमले हो रहे थे, परन्तु यह चुप थी। कुछ मनचले ऐसे हिन्दू भी थे जो पत्थर का उत्तर पत्थर से और मुक्के का उत्तर मुक्के से दे रहे थे। दूसरी ओर अन्य मत थे जो अपने को सच्चा और आर्य धर्म को झूठा बता रहे थे।

यदि ऋषि पक्षपात करते तो अन्य मतों के प्रचारकों की तरह हिन्दुओं की बात-बात का समर्थन करते, अहिन्दुओं की भलाइयों को भी बुरा कहते, परन्तु ऐसा करना उनके उच्च मनुष्यभाव के प्रतिकूल था।

यदि अन्य मतों में शुद्ध सच्चाई होती और हिन्दू असत्य के ठेकेदार होते तो ऋषि उन्हें प्रेरित करते कि हिन्दू मत को छोड़ दो और अहिन्दू हो जाओ। ऋषि ने सब मतों का अध्ययन किया और इस परिणाम पर पहुँचे कि हर मत में सत्य भी है और असत्य भी। ऋषि ने विवाह न किया। वह ब्रह्मचारी रहे। एक ही धुन सवार रही। ३० वर्ष की आयु तक लगातार अध्ययन किया जिससे उन्हें विश्वास हुआ कि वर्तमान हिन्दू धर्म में संशोधन की आवश्यकता है, वर्तमान इस्लाम में संशोधन की आवश्यकता है। वर्तमान ईसाई मत में संशोधन की आवश्यकता है। महात्मा गाँधी ने भी जेल में इन मतों का अध्ययन किया है-आखिर कितना समय! फिर इस में क्या देखा है? महात्मा इस अध्ययन से किस परिणाम पर पहुँचे हैं? महात्मा कहते हैं, ''मेरी हिन्दू प्रकृति मुझे बताती है कि हर मजहब थोड़ा बहुत सच्चा है।'' इन का सारा लेख पढ़ जाओ ऐसा मालूम होता है कि उनकी दृष्टि में यदि कोई कत्ल करने योग्य मजहब है तो हिन्दुओं का, क्योंकि हिन्दुओं की पवित्र पुस्तक वेद तक का उपहास कर दिया गया है। अहिन्दू मतों ने संसार को शान्ति दी। इस्लाम और शान्ति? इन दो भावों को महात्मा ही एक स्थान पर रख सकते हैं? साधारणजनों की शक्ति में यह चमत्कार नहीं। महात्मा ने

वेद को पढ़ा भी है?

**जल्दबाज़** - श्री स्वामी श्रद्धानन्द जल्दबाज़ हों- आर्यसमाज जल्दबाज़ हो, शायद ऋषि दयानन्द भी जल्दबाज़ हों, किन्तु उनमें से किसी यह जल्दबाज़ी नहीं की कि एक पुस्तक को देखा ही नहीं और उसके प्रतिकूल सम्मति उद्घोषित करने लग गए हों। महात्मा गाँधी को जल्दबाज़ कौन कहे? वह महात्मा हैं। महात्मा जल्दी नहीं तिलमिलाए- उन्होंने तो स्वामी श्रद्धानन्दजी के कुछ स्वभावों को जो उनके विचार में आक्षिप्य हैं, आर्यसमाज का दायभाग बताने में बड़े सोच विचार, बड़े धैर्य, बड़ी शान्ति से काम लिया है। आर्य समाज पर ही बस नहीं आर्यसमाज के प्रवर्तक पर भी अत्यन्त निडरता से हाथ साफ किया है। वेद तक इन के आक्षेपों से बच न सके। कौन कहे महात्माजी तिलमिला गए हैं।

कुछ हो! अपने विषय पर रहना चाहिए। स्वामी दयानन्द ने अन्य मत-मतान्तरों के गुणों को स्वीकार किया और बुराइयों की समालोचना की। सत्यार्थप्रकाश के अन्त में भी स्वामी जी लिखते हैं-''जो-जो बात सबके सामने माननीय है उसको अर्थात् जैसे सत्य बोलना सब के सामने अच्छा और मिथ्या बोलना बुरा, ऐसे सिद्धान्तों को स्वीकार करता हूँ और जो परस्पर मत मतान्तरों के विरुद्ध झगड़े हैं उनको मैं पसन्द नहीं करता क्योंकि इन्हीं मतवालों ने अपने मतों का प्रचार कर मनुष्यों को फंसा परस्पर शत्रु बना दिया है।''

ऋषि को मत-मतान्तरों के झगड़े पसन्द न थे। उन्हें शान्ति की खोज थी किन्तु शान्ति को झूठ के दामों पर खरीद नहीं कर सकते थे। ऋषि ने पक्षपात को अपने पास फटकने तक न दिया। दस समुल्लासों में वह लिखा जो आपको पसन्द था और जो सबके मानने योग्य था। ये सच्चाइयाँ हिन्दुओं को मल्कियत नहीं, जैसे वेद की प्राचीन शिक्षा को हिन्दुओं के वर्तमान रीति-रिवाजों ने बिगाड़ दिया था, वैसे ही अन्य मतमतान्तर भी वेद ही से निकले थे किन्तु उन्होंने उस पवित्र शिक्षा को अपनी मौलिक शुद्ध अवस्था में न रहने दिया था। ऋषि ने दस समुल्लासों में सब मत मतान्तरों की सांझी सच्चाइयों का वर्णन किया। वेद सब मतान्तरों का सांझा स्रोत है। उसी का प्रमाण दिया। मतान्तरों के प्रमाण पेश करना व्यर्थ में बात को तूल देना होता। मनुष्यकृत प्रमाणों में केवल मनुस्मृति आदि आर्ष ग्रन्थों के ही प्रमाण दिये क्योंकि मनुस्मृति सब से पहली धर्म पद्धति है जिससे दूसरे धर्म-शास्त्रों का प्रादुर्भाव हुआ।

इससे ऋषि को यह दिखाना भी अभीष्ट था कि अन्य मनुष्यकृत ग्रन्थों का अध्ययन भी किस दृष्टि से किया जाय? जैसे मनुस्मृति की परख वेद की कसौटी पर की गई है वैसी ही कुरान और इञ्जील आदि की भी होनी चाहिये। उनके जो हिस्से वेदानुकूल हों वे ठीक हैं जो विरुद्ध हों वे अशुद्ध हैं।

**अनजाने में मिथ्याकथन** - महात्मा कहते हैं ऋषि ने अनजाने में इन मतान्तरों के विषय में मिथ्या कथन किया है। अनजाने में मिथ्या कथन से महात्मा का तात्पर्य क्या है? क्या ऋषि ने इन मतमतान्तरों का भाव अशुद्ध समझा? यह सम्भव है। अन्ततोगत्वा ऋषि भी मनुष्य थे। दूसरा यह कि समझा तो ठीक किन्तु स्वभाव से बाधित होकर उनको अशुद्ध रूप में पेश किया, यह बात ऋषि के स्वभाव से इतनी ही दूर थी जितनी कि महात्मा गाँधी के स्वभाव से मत-मतान्तरों की सत्यासत्य निर्णायक समालोचना। ऋषि को यदि अहिन्दू मतों की धज्जियाँ उड़ानी होती तो उनसे पहले ऐसी पुस्तकें विद्यमान थीं। उनमें से किसी एक का प्रचार करते। सबसे पहिले ऋषि ने हिन्दू मत की बुराइयों का वर्णन किया। यह समुल्लास सत्यार्थप्रकाश का सबसे लम्बा समुल्लास है। जैसे महात्मा गाँधी को हिन्दुओं से विशेष प्यार है। हिन्दुओं को कारण निष्कारण दोषी ठहराते हैं। उन्हीं को झाड़ते हैं, दूसरों को नहीं। ऋषि भी हिन्दू घराने में पैदा हुए थे। हिन्दुओं के रीतिरिवाज देखा करते थे। उनकी त्रुटियों से अधिक परिचित थे, इसलिए उनकी पुस्तकों की अधिक समीक्षा की। अन्य मतमतान्तरों को नमूने के तौर पर थोड़ा-थोड़ा परखा। महात्मा इसे मिथ्या वर्णन बताते हैं और कहते हैं कि अनजाने से हो गया होगा। महात्मा के लेख का बड़ा भाग हिन्दु-मुस्लिम झगड़ों के विषय में मिथ्याकथन है। मुसलमानों के अत्याचारों की उनके पास शिकायतें गई हैं। इस डर से कि कहीं ये शिकायतें सत्य सिद्ध न हो जायें, महात्माजी ने उनके विषय में खोज करने की आवश्यकता नहीं समझी। एक

भी घटना ऐसी नहीं लिखी जिसे सिद्ध या सत्य कहा जा सके। यही खोज न करना ही अनजाने की मिथ्यावादिता है, स्वामी दयानन्द ने ऐसी अनजाने की मिथ्यावादिता नहीं की।

ऋषि ने जो किया, इसा का परिणाम यह है कि सब मतमतान्तरों ने अपना संशोधन किया है। कुरान के भाष्य बदल गये। जिस आयत में औरतों की उजरत (उजूरहुन्न) देकर उनसे व्यभिचार करने की शिक्षा थी, जिसके आधार पर आज भी ईरानी खुला 'मत्ता' करते हैं, मजहब के नाम पर सतीत्व का विक्रय होता है, आज उस आयत का मतलब बदल गया है। 'उजूरहुन्न' के नए अर्थ हैं हक्कमहर (स्त्रीधन)। ये अर्थ केवल नये भाष्य में आते हैं, पुराने भाष्यों में नहीं।

ऋषि का 'मिथ्या वर्णन' भारत ही मे रहा और इस का प्रभाव यह है कि इस्लाम शुद्ध हो रहा है। परमात्मा इसे ईरान में ले जावे। यहाँ की औरतों पर से भी इस्लामी अत्याचार (शाप) हट जायेगा। महात्मा कुछ कहें, संसार भर की औरतों के रोम-रोम से ऋषि के उपकारों के लिए धन्यवाद की ध्वनि उठ रही है। स्थानाभाव अन्य मतों के उदाहरण उद्धृत करने में बाधक है।

**सत्यवादिता का प्रभाव** - अब जरा महात्मा गाँधी के सत्य वर्णन का प्रभाव देखना- ख्वाजा हसन निज़ामी की 'दावत इस्लाम' से गैर मुस्लिमों के अन्त:पुर सुरक्षित नहीं। लज्जा और सतीत्व सुरक्षित नहीं। नवयुवकों का सदाचार खतरे में है। महात्मा की ''सत्यवादिता'' यह है कि उस महात्मा का नाम तक नहीं लेते। संकतों में बात करते हैं। उस हज़रत का नाम रखा है-रसूल के महान् सन्देश का अशुद्ध अनुवादक। रियासत हैदराबाद में इस अशुद्धानुवाद से प्रतिपादित हुई 'शुद्ध' प्रचार प्रणाली पर काम होना शुरू हो गया है। दिल्ली से समाचार आ रहे हैं कि वहाँ वह इस्लामी नीति अपना फल दिखा रही है। भला यह अशुद्ध अनुवाद कैसे हुआ? एक भी मुसलमान है? कोई मौलाना? कोई प्रचारक? कोई राजनैतिक नेता? जिसने इस अशुद्ध अनुवादक के विरुद्ध आवाज उठाई है। कहा हो कि यह इस्लाम का मन्तव्य नहीं। सब देख रहे हैं और दिल ही दिल में खुश हो रहे हैं कि इस्लाम अपने वास्तविक रूप में फैल रहा है। यह है अरबी रसूल का महान् सन्देश जिसने तड़पती दुनिया को शान्ति प्रदान की है।

यदि यह सत्यवादिता है तो ऐसी लाखों सत्यवादिताएँ ऋषि की एक ''असत्यवादिता'' पर न्योछावर है, जिसने स्त्री जाति की रक्षा की, जिसने केवल हिन्दू स्त्रियों का ही नहीं किन्तु मुसलमान महिलाओं का भी मान रख लिया।

**शुद्धि** - महात्मा का कथन है कि प्रत्येक नर-नारी अपने धर्म में पूर्णता प्राप्त करे यह सच्ची शुद्धि है। एक मुसलमान अवश्य मुसलमान रहे, अगर उसे आर्य बनने में अपनी आत्मा का कल्याण नजर आवे तो उसे सुना दिया जाए कि महात्मा गाँधी अपने विशालतम और उदारतम धर्म में तुझे दाखिल नहीं होने देते। इस्लाम के कुर्बानी के सिद्धान्त को ले लो। महात्मा अहिंसा धर्म के प्रचारक हैं। उनकी दृष्टि में किसी पशु को सताना सबसे बड़ा अपराध है। दूसरी ओर एक धर्म है जो निरपराध जानवरों का वध करना न केवल विहित किन्तु आवश्यक बतलाता है, धार्मिक कर्त्तव्य ठहराता है। एक मुसलमान है, उसे अहिंसा का सिद्धान्त पसन्द आता है, वह क्या करे? कुर्बानी न करे तो वह मुसलमान नहीं। महात्मा के पास आए तो उनका उपदेश ही यह हुआ कि अपने धर्म में पूर्णता प्राप्त करो, अर्थात् खूब 'कुर्बानी' करो। आखिर यह कैसा तर्क है।

महात्मन्! आँखें मीच लेने का नाम सत्यवादिता नहीं। दुनिया में मजहब हैं। हाँ, मजहब हैं जो दुराचार पर बल देते हैं, बुरे से बुरे आचरण से मनुष्यों का उद्धार बतलाते हैं। इनमें पूर्णता प्राप्त करें-यह अच्छी शुद्धि है।

क्या सत्यार्थप्रकाश इसलिए निराशाजनक है कि ऐसी शुद्धि का विधान नहीं करता? संसार के लोगों के सामने एक धर्म-पद्धति रखता है जिसके मानने और आचरण में लीन होने से ही आत्मा का कल्याण होता है। सत्यार्थप्रकाश की दृष्टि में वाममार्ग की पराकाष्ठा शुद्धि नहीं। इस्लाम की पराकष्ठा शुद्धि नहीं। सचाई की पराकाष्ठा ही शुद्धि है। सदाचार की पराकाष्ठा ही शुद्धि की पराकाष्ठा है। वैदिक धर्म की पराकाष्ठा ही शुद्धि की पराकाष्ठा है।

**अन्तरात्मा की आवाज** - महात्मा ने एक बात बड़े पते की कही है। लिखते हैं-शुद्धि यदि आर्यसमाजियों की अन्तरात्मा की आवाज है तो उसे रोका न जाएगा। महात्मा को हम कैसे विश्वास कराएँ कि शुद्धि हमारे अन्तरात्मा की

आवाज है? महात्मा किसी आर्यसामजी का दिल चीर कर देखें तो पता लगे कि उसमें किन आंकड़ों का दरिया ठाठें मार रहा है। सत्यार्थप्रकाश आर्यसमाजी का हृदय है। इससे महात्मा को निराशा हुई। वेद आर्यसमाजी का प्राण है- महात्मा ने उसे 'बुत' कहा। तोड़ा इसलिए नहीं कि महात्मा 'मूर्तिभञ्जक' नहीं। अब और क्या प्रमाण है जो महात्मा के आगे प्रस्तुत करें? लेखराम की लाश? जिसने शुद्धि की छुरी पर अपना कलेजा रखा, कटार खा ली और उफ न की। मारने वाले को मारना तो दूर रहा, उसके लिए एक अपशब्द भी न कहा। तुलसीराम का खून? जो अहिंसा धर्म के अवतारों, जैनियों के हाथों बलिदान हो गया। रामचन्द्र का ठिठुरा हुआ शरीर? जिसे माघ मास की ठिठुराती शाम को लाठियों की बौछार ने सर्वदा के लिए चुप करा दिया। ये सब शुद्धि के मतवाले थे। यदि उनकी तड़पती लाशें बोलें और अपनी आवाज महात्मा गाँधी के कानों तक पहुँचाएँ तो महात्मा को पता लगे कि उनकी तड़प शुद्धि की उत्कण्ठा की तड़प है। उनकी मृत्यु शुद्धि का जीवन है। यही लोग आर्यसमाज की अन्तरात्मा हैं। जो उनकी साक्षी है वही आर्यसमाज की साक्षी है।

एक बात शेष रह गई है। महात्मा गाँधी शुद्धि की आज्ञा दे सकते हैं पर कैसे? आर्य धर्म की चार कसौटियाँ हैं-सबसे मुख्य वेद, फिर स्मृति, फिर सदाचार। ये तीनों महात्मा गाँधी की अदालत में प्रामाणिक नहीं। चौथी और सबसे छोटी कसौटी है 'स्वस्य च प्रियमात्मन:' इसी को दूसरे शब्दों में अपने अन्तरात्मा की आवाज कह सकते हैं। इसी के आधार पर महात्मा जी शुद्धि की आज्ञा दिये देते हैं इतना ही सही-फिर गनीमत है। अब आक्षेप है तो शुद्धि के ढंग पर। इसमें हमें कोई आपत्ति नहीं। हम ढंग बदल लेंगे, जब महात्माजी वर्तमान ढंग से कोई उत्तम ढंग पेश करेंगे तो हम उसी का अनुसरण करेंगे।

**ईसाइयों की नकल** - पर प्रश्न यह है कि वर्तमान ढंग में दोष क्या है? महात्मा जी फरमाते हैं कि यह ईसाइयों के ढंग की नकल है। ईसाइयों के ढंग में क्या दोष है-यह नहीं बताया। क्या कोई काम इसलिए भी दूषित हो सकता है कि वह ईसाइयों का है? लो! महात्मा जी खुद फैसला फरमायें। स्वामी दयानन्द का हृदय संकुचित हुआ या महात्मा गाँधी का? स्वामी जी तो लिखते हैं कि मैं सब मतों के गुण ग्रहण करता और बुराइयाँ छोड़ता हूँ। पर यहाँ तो काई चीज दूषित ही इसीलिए है कि वह ईसाइयों की है। महात्मा गाँधी को ईसाइयों से भी न्याय का बर्ताव करना चाहिए। वे भी तो परमात्मा के पुत्र हैं, केवल मुसलमान नहीं। क्या जो दोष ईसाइयों के प्रचार में है वे द्वेष आर्यसमाज के प्रचार में हैं भी! सिद्ध करना होगा! दावा बे दलील वे शहादत मानने योग्य नहीं।

**वेद विहीन हिन्दू** - महात्मा का कथन है कि शुद्धि की कसौटी सदाचार होना चाहिए। हम महात्मा के इस कथन की प्रशंसा करते हैं, परन्तु स्वयं सदाचार की कसौटी क्या है? शुद्धि के औचित्य अनौचित्य पर विचार करते हुए हमने निवेदन किया था कि जिस शुद्धि की आत्मा वेद में है, स्मृति में है, जिसके उदाहरण पुराण में हैं, और जिसके क्रियारूप में आने की साक्षी इतिहास देता है, वह महात्मा की दृष्टि में उचित नहीं। महात्मा की व्यवस्था अपनी होती तो हानि न थी। महात्मा कहते हैं कि शुद्धि का हिन्दू मत में विधान नहीं। हमने पूछा था कि किस हिन्दू मत में?

महात्माजी की आशा सत्यार्थप्रकाश ने पूरी नहीं की। क्या वेद करते हैं? महात्मा का कथन है कि वेद के प्रत्येक शब्द पर विश्वास रखना एक सूक्ष्म प्रकार की मूर्तिपूजा है। यह खूब रही! आखिर वेद का अपराध क्या है? यही कि आप की माँग पूरी नहीं करता। आप किसी अहिन्दू को अपना धर्मभाई नहीं बनाना चाहते और वेद बनाता है। अब सदाचार के विषय में भी कठिनता है। इसकी कसौटी क्या है?

हमें स्वामी श्रद्धानन्द की चिन्ता नहीं, आर्यसमाज की चिन्ता नहीं, स्वामी दयानन्द की चिन्ता नहीं। ये न रहे तो क्या? इनका नाम मिट गया तो क्या? महात्मा तो वेद को ही मिटाने पर कमर कसे हुए हैं, ले देकर आर्य जाति की यही पूँजी रह गई है। महात्मा को वह भी एक आँख नहीं भाती। हिन्दू-मुस्लिम संगठन की वेदी पर सब कुछ कुर्बान करते। दयानन्द का सिर हाजिर! आर्यसमाज की जान हाजिर! लेकिन परमात्मा का वास्ता! एक वेद की बलि न चढ़ाना। किसी की भी माँग हो- यह पूरी न होगी। ब्रह्मा से लेकर दयानन्द पर्यन्त सब ऋषियों ने वेद को परम प्रमाण

माना है। हिन्दुओं के दर्शनों में, साहित्य में, कलाओं में सब तरह के मतभेद लेकिन वेद के आगे जो कोई भी आया है उसने सिर झुका दिया है। स्मृतियाँ वेद के आगे सिर झुकाती हैं तो इतिहास वेद की पूजा के गीत गाते हैं।

आश्चर्य यह है कि महात्मा ने वेद को पढ़ा ही नहीं। क्या उसके पढ़ने में भी मूर्तिपूजा का डर है? आख़िर वह हिन्दू मज़हब कौन सा है जिसमें वेद को ही तिलाञ्जलि दे दी जाय।

मुसलमानों के कुरान को भी 'बुत' कह देते। हिन्दू वेद छोड़ते, मुसलमान कुरान को जवाब देते- और इस अश्रद्धा व विश्वासहीनता का नाम होता हिन्दू-मुस्लिम संगठन, परन्तु नहीं। इस हिन्दू-मुस्लिम संगठन में तो हिन्दुओं को देना ही देना है और मुसलमानों को लेना ही लेना। हिन्दुओं की आख़िरी पूँजी वेद है, इस पर भी महात्मा के किसी मित्र की नज़र होगी।

दोष! महादोष!! परन्तु झूठा।

हाँ! एक दोष बताया और वह ईसाइयों का नहीं, मुसलमानों और आर्यसमाजियों का। वह क्या? वह यह कि वे दोनों औरतों को बहका कर ले जाते और उन्हें शुद्ध करने का यत्न करते हैं। यह झूठ है जो महात्मा के किसी भक्त ने महात्मा से कहा है। यह झूठ उस भक्तिसे कहीं बड़ा है, जो महात्मा के लिए महात्मा के उस भक्त के हृदय में है। महात्मा ने उस पर विश्वास करके उसे और भी बड़ा बना दिया है। हिन्दुओं पर इतनी आपत्तियाँ तोड़ी ही थीं, कहे सुने के आधार पर काल्पनिक अत्याचारों का दोष लगाया ही था। 'मुझसे कहा गया है' की आखिर कोई हद्द। कोई उदाहरण दिया होता, कोई घटना पेश की होती । आर्यसमाजी पापी हैं, दोषी हैं, अपराधी हैं। एक बाल ब्रह्मचारी का नाम जपते हैं और उनमें से अक्सर में ब्रह्मचर्य नाम को नहीं आदित्य के चेले हैं और उनमें अक्सर तेजोहीन हैं। लाख निर्बलताओं के शिकार होंगे: लेकिन औरतें बहकाने का इल्जाम! यह इनसे इतना ही दूर है जितना महात्मा से पड़ताल का परिश्रम। आर्यों की जल्दबाजी इसी में है कि वे जरा से अपराध पर बड़े से बड़े मनुष्य को आर्यसमाज से बाहर कर देते हें। जरा जरा सी बात पर तिलमिला उठते हैं। परमात्मा करे इस इल्जाम से और तिलमिला उठें और बाल ब्रह्मचारी के समाज को वस्तुत: ब्रह्मचारियों का समाज बनायें।

**अन्तिम निवेदन** - महात्मन्! अन्त में आप से एक निवेदन है। आज के हिन्दू दो बरस पहिले के हिन्दू नहीं हैं। वे दिन गये जब यह रोटी उठा ले जाने वाले कुत्ते के पीछे घी की प्याली लेकर दौड़ते थे कि 'रूखी न खाइयो प्रभु। रूखी न खाइयो' उन्हें चोर ओर मेहमान में विवेक है। वेद और शास्त्र तो क्या छोडे, ये तो अब सांसारिक सम्पत्ति भी नहीं छोड़ने के। आखिर आप मुसलमानों को कब तक मेहमान समझेंगे। हम तो उन्हें अपना भाई जानते हैं। उन्हें भारत में बसते सदियाँ हो गईं। बच्चा घर संभालने के योग्य हुआ। मेहमान ने अपना घर बसा लिया । अब उनका हमारा बराबर का पड़ौस है, हम आपस में लड़ेंगे, झगड़ेंगे, हाथ मिलायेंगे और गले मिलेंगे। हमेशा कौन आतिथ्य कर सकता है? और जिसने प्रलय तक अतिथि रहने की कसम खा ली हो वह भी तो आदरणीय अतिथि नहीं। कवि ने कहा है-

'मक्खी बन कर पड़ा रहे वह अतिथि प्रतिष्ठा खोता है।' फिर अतिथि के भी तो कर्त्तव्य हैं। जितना शील गृहपति के लिए आवश्यक है उससे कम अतिथि के लिए नहीं। आप हिन्दुओं को कहते हैं कि तुम मुसलमानों पर छोड़ दो कि वे जो अधिकार चाहें तुम्हें दें। क्यों? इसलिये कि हिन्दुओं की संख्या अधिक है। बहुत अच्छा, पंजाब की अवस्था इससे ठीक उलटी है। जरा यहाँ के मुसलमानों से कह दीजिए कि तुम अपने अधिकारों से हाथ उठा लो और हिन्दुओं को फैसला करने दो कि तुम्हें क्या मिले और उन्हें क्या? मुस्लिम लीग से पूछिए, वह क्या उत्तर देती है? लीग का तो प्रस्ताव ही है कि यहाँ हमें अधिक अधिकार इसलिए चाहियें कि हम अधिक हैं और दूसरे प्रांतों में इसलिए कि हम वहाँ कम हैं। ना!! क्या भोलापन है। ये हैं परमात्मा के सरल सूधे बच्चे!

मगर नहीं, हम तो यहां भी न्याय चाहते हैं और वहाँ भी। आप के शील से डर इसलिये होता है कि अब आप धर्म तक की बलि देने को तैयार हो गये हैं। यह हम न होने देंगे। आपका हिन्दू धर्म जो हो, हमारा तो वेद का, शास्त्र का, ऋषियों और मुनियों का आर्य धर्म है।

# वैदिक पुस्तकालय अजमेर
# द्वारा प्रकाशित व उपलब्ध नये संस्करण

**१. सत्यार्थ प्रकाश में क्या है?** **लेखक - प्रो. धर्मवीर,** **प्रकाशक**- परोपकारिणी सभा, अजमेर,
**पृष्ठ संख्या**- ३२ **मूल्य** - रु. १५/-

प्रस्तुत पुस्तक डॉ. धर्मवीर जी के युवापन की रचना है। इस पुस्तक को पं. भारतेन्द्रनाथ जी (महात्मा वेदभिक्षु) ने डॉ. धर्मवीर जी से आग्रहपूर्वक लिखवाया था। पहली बार इसे सन् १९७५ में महात्मा वेदभिक्षु जी ने ही प्रकाशित किया था। एक लम्बे अन्तराल के बाद परोपकारिणी सभा ने इसका पुन:प्रकाशन किया है। इस पुस्तक को पढ़कर नये से नया व्यक्ति भी सत्यार्थप्रकाश के महत्व को समझ सकता है अर्थात् यह पुस्तक आर्यसमाज के प्रचार में सहायक सिद्ध हो सकती है। आर्य महानुभावों से अनुरोध है कि इसे अधिक से अधिक संख्या में खरीदकर नई पीढ़ी तथा नये लोगों को वितरित करें तथा प्रकाशकों से भी निवेदन है कि अधिक से अधिक संख्या में इसे मंगायें ताकि लोग इसे खरीद सकें। इस ग्रन्थ को पढ़ने से ऋषि दयानन्द के अमरग्रन्थ सत्यार्थप्रकाश को पढ़ने की प्रेरणा मिलती है। सत्यार्थप्रकाश की समस्त विषयवस्तु को इस ग्रन्थ में समाहित किया गया है। पाठक इसे पढ़कर लाभ उठायेंगे, ऐसा हमारा विश्वास है।

**२. महर्षि दयानन्द का पत्र-व्यवहार ( दो भाग में )**
**मूल्य - रु. ८००/- पृष्ठ संख्या - प्रथम व द्वितीय भाग-६९६+६९६**
**महर्षि दयानन्द का महत्त्वपूर्ण पत्र-व्यवहार मूल्य - रु. ४००/- पृष्ठ संख्या - ६१६**

ऐतिहासिक महत्त्व का ग्रन्थ है। इस संस्करण की यह विशेषता है कि पत्र और उसका उत्तर साथ-साथ दिये गए हैं। आर्य जाति और आर्यावर्त्त के उत्थान की महती आकांक्षा ऋषिवर के पत्रों में स्पष्ट झलकती है। माननीय डॉ. वेदपाल जी द्वारा सम्पादित यह ग्रन्थ पठनीय एवं संग्रहणीय है। साज-सज्जा और मुद्रण भी उत्तम है। समाप्त होने से पहले- पहले क्रय कर लेवें तो अच्छा रहेगा।

**३. 'नवयुग की आहट',महर्षि दयानन्द सरस्वती का जीवन-चरित**
**मूल्य - रु. ६०/- पृष्ठ संख्या- १९२**

१०० से अधिक उपशीर्षकों एवं १३ अध्यायों में लिखा गया ऋषि का यह अनुपम जीवन चरित है। लेखक हैं- ऋषि मिशन के दीवाने, आर्यजाति के प्रहरी, दिलजले आर्य साहित्यकार प्रा. राजेन्द्र जिज्ञासु। पुस्तक में आप जान पायेंगे कि ऋषि का पाखण्ड-खण्डन, सामाजिक दोषों के निराकरण, स्त्री-शिक्षा, अछूतोद्धार, वेदोद्धार, सामाजिक पुनर्जागरण, राष्ट्र-उद्धार के क्षेत्र में क्या योगदान है तथा उनके समकालीन और परवर्ती महापुरुष उनके विषय में क्या कहते हैं।

**४. इतिहास की साक्षी: लेखक- प्रा. राजेन्द्र जिज्ञासु मूल्य - रु. ५०/- पृष्ठ संख्या - ९६**

९६ पृष्ठों की इस पुस्तक में विद्वान् लेखक ने महर्षि दयानन्द सरस्वती एवं पं. श्रद्धाराम फिल्लौरी के सम्बन्ध में तथ्यात्मक जानकारी दी है। श्रद्धाराम फिल्लौरी के हाथ के लिखे पत्र की एवं अन्य ऐतिहासिक दस्तावेजों की फोटो कापियाँ इसमें दी हैं, जो अन्यत्र दुर्लभ हैं।

**५. असली महात्मा ( हिन्दी ) मूल्य - रु. २००/- पृष्ठ संख्या - २४७**

यह पुस्तक मूलरूप से तेलुगु में लिखी गई है। लेखक श्री एम.वी.आर. शास्त्री ने जिस शोधपूर्ण ढंग से और जिस सरसता से इस पुस्तक को लिखा है, उससे दस्तावेजों में रुचि रखने वालों और उपन्यास में रुचि रखने वालों के लिये भी यह एक अतुलनीय ग्रन्थ है। हिन्दी में अनुवाद करते समय श्री जे.एल. रेड्डी ने लेखक के मूल भावों को जिस दक्षता से संजोया है, उससे हिन्दी पाठकों को ये ऐतिहासिक दृष्टि वाला ग्रन्थ किसी उपन्यास से कम नहीं लगेगा।

---

## वैदिक पुस्तकालय, अजमेर से क्रय की जाने वाली
## पुस्तकों की राशि ऑनलाइन जमा कराने हेतु

खाता धारक का नाम - **वैदिक पुस्तकालय, अजमेर।**
बैंक का नाम - **पंजाब नेशनल बैंक, कचहरी रोड, अजमेर।**
बैंक बचत खाता **(Savings)** संख्या - **0008000100067176**
**IFSC - PUNB0000800**

# लोकोत्तर धर्मवीर-६

तपेन्द्र वेदालंकार आई.ए.एस. ( से.नि. )

०५-१०-२०१६ की प्रातः यज्ञ करने के लिए घर के बाहर यज्ञशाला में आये तो हल्की वर्षा हो रही थी, पेड़ नहाये-धोये खड़े थे, प्रकाश में चमकती वर्षा की बून्दें यज्ञशाला से मोतियों की तरह गिर कर टूट रही थीं, हल्की ठण्डी हवा थोड़ी तेजी से चल रही थी, जैसे कहीं जाने की जल्दी हो। पता नहीं किसलिए सड़क साफ-सुथरी, धुली-धुली थी। आसमान में घने बादल थे, काले भी, सफेद भी। कभी-कभी बिजली कड़क-कड़क कर चमक-चमक कर डरावनी चांदनी बिखेर देती थी। धीरे-धीरे समय बीतता गया, लगभग दोपहर को इतने जोर की बिजली कड़की, जितनी जिन्दगी में इससे पहले कभी नहीं सुनी थी। बाद में पता चला, कॉलोनी के मकान में बिजली गिरी थी तथा सारा सामान जलकर राख हो गया था। एक फोन आया, परोपकारिणी सभा के संयुक्त मन्त्री श्री दिनेश शर्मा का। सोचा, जरूर कोई अच्छा समाचार है सभा से। पर सारी उत्सुकता धरी रह गयाी, जब उन्होंने बताया कि धर्मवीर जी की तबियत बहुत खराब है, उन्हें आई.सी.यू. में भर्ती किया गया है। मैं व श्रीमती कुसुम बाला तुरन्त जैसे थे, अजमेर के लिए निकल पड़े। रास्ते में इतना तूफान आया कि गाड़ी का आगे बढ़ना ही मुश्किल हो रहा था, जैसे तूफान हमें रोक रहा था, कोई अवसर छीनने के लिए। इतनी तेज वर्षा थी कि गाड़ी के वाइपर जवाब दे रहे थे, कुछ दिखायी नहीं पड़ रहा था। मन में जल्दी अजमेर पहुँचने का भाव था अतः रुके नहीं, धीरे-मध्यम चलते रहे। रास्ते में सभा के न्यासी श्री वीरेन्द्र आर्य का फोन आया। मन डर से ठहर सा गया। वे रोहतक से बोल रहे थे, कुसुम जी से बात हुई, वे भी हमें शीघ्र पहुँचने के लिए कह रहे थे। रास्ते से ही अजमेर के प्रशासनिक अधिकारियों से बात हुई। अजमेर के समीप आकर वर्षा व तूफान थम गया-शान्ति हो गयी।

अजमेर में एकाधिक पोस्टिंग रही थी, अनेकों बार अजमेर की उसी सड़क से अजमेर में प्रवेश किया था, परन्तु आज जैसी मनोभावना कभी महसूस नहीं की थी। बुद्धि पर मन भारी हो-हो जा रहा था। अस्पताल पहुँचे तो जैसे कदम आगे बढना नहीं चाह रहे थे, ठिठक रहे थे। जैसे-तैसे ऊपर की मंजिल पर पहुँचे तो आई.सी.यू. के वेटिंग रूम में आचार्य सत्यजित् जी, ओममुनि जी के साथ-साथ कई वानप्रस्थी, माताएँ, ब्रह्मचारी जो अपने घर-परिवार का बन्धन भी छोड़ चुके थे, घर-परिवार जिनको नहीं बाँध सका था- वे स्तब्ध बैठे थे। श्रीमती ज्योत्स्ना 'धर्मवीर', छोटी पुत्री निमिषा व दामाद श्री त्रिदीप जी तो जैसे होते हुए भी वहाँ नहीं थे। किसी को शायद यह समझ नहीं आ रहा था कि ऐसा क्या हो गया जो अस्पताल आते ही धर्मवीर जी को तुरन्त आई.सी.यू. में ले लिया गया।

अस्पताल के प्रबन्धक से चर्चा हो गयी थी तथा मिलने वालों के सम्बन्ध में दो लोगों का बन्धन भी शिथिल हो गया था, फिर भी आई.सी.यू. की व्यवस्था को ध्यान में रखते हुए यथासम्भव दो-दो व्यक्ति ही अन्दर जा रहे थे, जिससे उपचार में व्यवधान न हो। धर्मवीर जी से मिलने गये तो विश्वास ही नहीं हुआ। धर्मवीर जी पलंग पर लेटे थे, पर वह उनके कमरे का पलंग नहीं था, अस्पताल का था। कमरे में जहाँ चारों ओर किताबें ही किताबें बिखरी रहती थीं, यहाँ अस्पताल की छोटी-बड़ी मशीनें ही मशीनें थीं। जहाँ लिखे-अधलिखे कागज बिखरे रहते थे वहाँ अब तरह-तरह के इक्विपमेन्ट्स की नलियाँ ही नलियाँ फैली हुई थीं। जिस हाथ में पकड़ी कलम धुरन्धरों को धराशायी करती थी, वही हाथ अब सुइयों से बिंधे हुए थे। जिस मुँह से निकले एक-एक शब्द को सुनने के लिए आर्यजनता इन्तजार करती थी, उसी मुँह को बीच-बीच में ऑक्सीजन लगाकर बन्द किया जा रहा था। जिसके धाराप्रवाह ओजस्वी भाषण से सब हतप्रभ रह जाते थे, उसी को स्पष्ट बोलने में परेशानी हो रही थी। जिसके पास विद्वानों का आवागमन लगा रहता था, उसके पास एक के बाद एक डॉक्टरों व नर्सिंग स्टाफ की आवाजाही हो रही थी। सब कुछ बदला हुआ था।

उपचार करने वाले डॉक्टर आश्वस्त थे कि उपचार सही है व स्थिति में बिगाड़ नहीं है। बीच-बीच में काफी सुधार भी होता था। दिन छिप चुका था। डॉक्टरों ने बुलाया तो श्रीमती ज्योत्स्ना जी, निमिषा, श्री त्रिदीप व मैं मिलने अन्दर गये। जो डॉक्टर अब तक आश्वस्त कर रहा था,

अब उसके स्वर बदल गये थे, कहने लगा कि इस प्रकार के मरीज ९८ प्रतिशत बचते नहीं हैं। ये सब थोड़ा जी करने लगे। मैंने डॉक्टर से कहा कि हमारा मरीज ९८ प्रतिशत वाले मरीजों में नहीं है, आप उपचार कीजिए, इन्हें कुछ नहीं होगा। ये बचेंगे। हमने पूछा कि कहीं अन्य रैफर आदि करना चाहेगे क्या?

डॉक्टर बोले, किशनगढ़ तक भी नहीं जा सकते। वर्षा हो चुकी थी, अजमेर में हवाई अड्डा भी नहीं था, जयपुर तक लाने की बात तो दूर-डॉक्टर कह रहे थे, किशनगढ़ तक भी नहीं जा सकते। यह समय विचलित करने वाला था। हम सब धर्मवीर जी के पास गये, सबको कहा-रोना नहीं, पर दिल पर वश किसका रहता है ऐसे में। धर्मवीर जी ने श्रीमती ज्योत्स्ना जी को ढाढस बँधाया। उस अवस्था में भी व्रत अनुसार संस्कृत में बोलकर अपनी पुत्री को सान्त्वना दी। **धर्मवीर धर्म को नहीं भूला।**

विचार-विमर्श किया गया तथा अन्य साधनों की ओर देखा गया। अन्यत्र ले जाया जाना सम्भव नहीं था अत: जयपुर, जोधपुर, बैंगलौर, दिल्ली आदि के विशेषज्ञ डॉक्टरों से बात की गयी, उपचार करने वाले डॉक्टर से बात करायी गयी। श्री त्रिदीप जी के पारिवारिक डॉक्टर तथा बैंगलौर के धर्मवीर जी के श्रद्धालु डॉक्टर से लगातार बात हो रही थी। स्थिति से सभा के सभासदों को भी अवगत कराया गया। धर्मवीर जी के पैरामीटर्स थोड़े ठीक होने लगे। अस्पताल के तथा परिवार के डॉक्टरों के मुताबिक अब धर्मवीर जी की स्थिति में कुछ सुधार था। सबने थोड़ी राहत की सांस ली तथा किसी तरह जल्दी प्रात: होने की प्रतीक्षा करने लगे जिससे शिफ्टिंग आदि अन्य विकल्पों पर विचार किया जा सके। लेकिन यह रात्रि तो बड़ी क्रूर निकली, उसने सुबह होने का इन्तजार ही नहीं किया। धर्मवीर जी की स्थिति बिगड़ने लगी, वेन्टीलेटर पर ले रखा था, दवाइयों पर दवाइयाँ दीं, लेकिन सब बे-असर हो रहा था। जिस धर्मवीर को जीते जी कोई छू नहीं सकता था, अन्त समय उसकी छाती पर वार पर वार किये जाते रहे, जिससे किसी तरह श्वास चलती रहे, लौट आवे-परन्तु रात्रि में प्रकाश की किरण न आनी थी, न आयी। अंधियारा दूर करने वाला प्रकाश-स्तम्भ खड़ा रह गया-प्रकाश की किरणें कहीं विलीन हो गयी थीं। प्राणी व अप्राणी स्तब्ध थे। इस अप्रत्याशित के लिए तैयार नहीं थे, यह दु:ख असमय जो आन पड़ा था।

उनकी देह अन्तिम दर्शन के लिए 'सरस्वती भवन' ऋषि उद्यान में रखी गयी। जिसने सुना वही ऋषि उद्यान की ओर बढ़ने लगा। सबने अपनी व्यथा आपस में बाँटी। ऋषि उद्यान से उनकी अन्तिम यात्रा चली तो सभी की आँखें नम थीं। भीड़ इतनी कि मुझे तो कन्धा देने के लिए सरस्वती-भवन में आगे जाने का स्थान ही नहीं मिला। अन्तिम-यात्रा के वाहन में मैं बैठ गया क्योंकि उनका साथ फिर कभी तो मिलना नहीं था। अजमेरवासियों ने उन्हें अतिशय सम्मान दिया, लोग कह रहे थे, अजमेर में ऐसी अन्तिम-यात्रा कभी देखी नहीं। मैं अपने पिता जी की मृत्यु पर रोया नहीं था, परन्तु यहाँ मेरी आँखों के आँसू थम नहीं रहे थे, सारी साधना धरी रह गयी थी। अन्तिम-यात्रा-वाहन के सामने एक मारुति वैन चल रही थी जिसमें बैठे ब्रह्मचारी वेदपाठ कर रहे थे, उस पर पीछे की ओर मुस्कुराते हुए धर्मवीर जी का बड़ा फोटो लगा हुआ था, जैसे ही उस पर निगाह पड़ती तो अपने आप को रोक नहीं पाता। उनकी मुस्कुराहट के पीछे एक राज छिपा था। सेवानिवृत होने के दिन ही मैं स्थायी रूप से रहने का मन बनाकर ऋषि उद्यान में आ गया था। उन दिनों धर्मवीर जी से खूब चर्चा हुई थी। मैंने कहा, यहाँ रहने का एक फायदा यह होगा कि आप जैसे विद्वानों के हाथों अन्तिम संस्कार होगा। पहले तो थोड़ा डाँटा, फिर मुस्कुराकर बोले- देखते हैं, कौन किसका संस्कार करता है। यह वही मुस्कुराहट थी, जैसे वे मुझे याद दिला रहे हों।

तीन वर्ष पूर्व ऋषि मेले पर भोजन के समय मेरे व मेरे परिवार के अक्षम्य अपमान को संभवत: तत्समय सात्विक वृत्ति न होने से सहन नहीं कर पाया था तथा हम अपने घर जयपुर आ गये थे। अगले वर्ष सभा के ट्रस्टी श्री पं. भगवानसहाय जी का देहान्त हो गया। वे साधु थे-असल में साधु। उनकी तीये की बैठक ऋषि मेले के पहले दिन थी। हम ऋषि उद्यान गये तो ध्वजारोहण हो चुका था तथा आचार्य धर्मवीर जी का उद्बोधन हो रहा था। हम लोग पेड़ों के नीचे खड़ें हो गये। धर्मवीर जी अन्य लोगों के साथ आये, नमस्ते हुई, बोले-अगली बार कोई मरेगा और तुम ऋषि मेले में आओगे। श्रीमती ज्योत्स्ना जी,

हमने नाराजगी व्यक्त की। बस मुस्कुरा दिये। एक से अधिक बार पिछले एक वर्ष में वे कह चुके थे, क्या पता कब बुलावा आ जावे, जितना भगवान् करा रहा है, काम कर लेते हैं, शरीर का क्या पता? उनकी ऐसी बातों पर नाराजगी व्यक्त करने पर वे चिरपरिचित अन्दाज में मुस्कुरा देते थे व बात खत्म हो जाती है। बस उनकी यही मुस्कुराहट अन्तिम-यात्रा में परेशान कर रही थी।

जहाँ महर्षि का अन्तिम संस्कार हुआ था, उसी मलूसर श्मशान में धर्मवीर जी की पार्थिव देह को अग्नि के सुपुर्द कर दिया गया। उनकी अस्थियों को ऋषि-उद्यान में एक स्थान पर दबा दिया गया। दो-तीन दिन बाद शान्ति-यज्ञ व श्रद्धाञ्जलि सभा भी हो गयी, परन्तु सब कुछ इतना जल्दी हो गया था कि किसी को विश्वास ही नहीं हो रहा था कि ध्वजारोहण में सिंह गर्जना अब सुनायी नहीं देगी, यज्ञशाला पर उनका शान्ति उपदेश स्वयं शान्त हो जावेगा, ऋषि मेले के मञ्च पर उनका तार्किक भाषण अब नहीं होगा। ऋषि उद्यान की प्रत्येक वस्तु में मुखरित होने वाला धर्मवीर अब स्वयं अतीत हो जावेगा।

परन्तु धर्मवीर कभी अतीत नहीं होते, वे सदा वर्तमान रहते हैं-अपने उपदेशों से, अपने चरित्र से, अपने कार्यों से, अपने चिन्तन से, अपने यश से, अपनी विद्वत्ता से, अपने आदर्शों से, अपने लेखन से, अपने त्याग से।

विषम परिस्थितियों में भी उन्होंने अपने पारिवारिक कर्त्तव्य का निर्वहन किया। **पारिवारिक कर्त्तव्यों पर तरजीह देकर उन्होंने सामाजिक कर्त्तव्यों को निष्काम भाव से निभाया। रही आर्य समाज की बात तो रुग्ण अवस्था में भी उन्होंने प्रचार कार्य नहीं छोड़ा बल्कि दुनिया छोड़ दी। परोपकारिणी सभा में उनके प्राण बसते थे, सभा की बहुविध उन्नति में उन्होंने पूरा जीवन लगा दिया। धर्म की प्रतिमूर्ति धर्मवीर सभी क्षेत्रों में नये आयाम स्थापित कर गया, एक ऐसी रेखा खींच गया, जिसको केवल धर्मवीर ही छू सकेगा, अन्य नहीं।**

**विद्वत्ता में, गुरुता में, पत्रकारिता में, नैतिक मूल्यों में, त्याग में, तपस्या में, ऋषि-भक्ति में, प्रवचन में, प्रचार में, प्रसार में, सभी क्षेत्रों में धर्मवीर अप्रतिम थे, अद्वितीय थे। वे सचमुच लोकोत्तर थे।**

इनका अलौकिक व्यक्तित्व चिरकाल तक हम सबको प्रेरित करता रहेगा।

## एक आहुति
## अपने आचार्य के लिए.....

ऋषि दयानन्द की उत्तराधिकारिणी परोपकारिणी सभा की तन, मन, धन से सेवा करने वाले, उसे अपनी मातृवत् समझने वाले और यहाँ तक कि अपना जीवन समर्पित कर देने वाले डॉ. धर्मवीर आज अपना समस्त भार आर्य जनता अर्थात् अपने उत्तराधिकारियों पर छोड़ गये हैं। उन्होंने ऋषि के स्वप्नों को अपना कर्त्तव्य समझकर सभा को गगनचुंबी ऊँचाइयों तक पहुँचाया। अनेक नये प्रकल्प चलाये यथा-वैदिक गुरुकुल, गौशाला, आश्रम, अतिथियों के ठहरने व खान-पान की नि:शुल्क व्यवस्था आदि। उन्होंने जो-जो कार्य छेड़े उनकी आवश्यकताओं की पूर्ति में कभी न्यूनता न आने दी। परोपकारिणी सभा ऐसे पुत्र को प्राप्त कर गौरव का अनुभव करती है और बिछुड़कर शोकग्रस्त होने का भी। उनके द्वारा शुरु किये कार्य कभी शिथिल न पड़ें, इस कारण **सभा ने डॉ. धर्मवीर जी की स्मृति में एक करोड़ रु. की स्थिर निधि बनाने का संकल्प लिया है,** जिससे कि धन धर्म के काम आ सके। इसमें सन्देह नहीं कि ये समस्त कार्य आर्य जनता के सहयोग से ही प्रारम्भ हो सके हैं और सहयोग से ही चल भी रहे हैं। इसलिये इसमें भी सन्देह नहीं कि सभा के इस संकल्प को आर्य जनता शीघ्र पूर्णता की ओर पहुँचा देगी और शायद उससे भी कहीं बढ़कर। यज्ञ तो हवि माँगता है। बिना हवि के यज्ञ की कल्पना भी क्या? बस देरी तो सूचित होने की है। हवि बनना तो आर्यों के खून में है, तन से, मन से अथवा धन से।

आप अपना दान चैक, ड्राफ्ट या सभा के खाते में सीधे भी भेज सकते हैं। कृपया, राशि भेजने के पश्चात् सभा में दूरभाष या पत्र द्वारा अवश्य सूचित कर दें।

**- मन्त्री**

ओ३म्

# परोपकारिणी सभा

दयानन्द आश्रम, केसरगंज, अजमेर (राज.) पिन. ३०५००१ दूरभाष– ०१४५–२४६०१६४

## वेदगोष्ठी–२०१७

मान्यवर सादर नमस्ते।

आशा करता हूँ कि आप स्वस्थ सानन्द होंगे। आपको सुविदित है कि सद्भावी विद्वानों के सहयोग से सदा की भांति इस वर्ष भी अन्तर्राष्ट्रीय दयानन्द वेदपीठ, दिल्ली तथा अनुसंधान विभाग परोपकारिणी सभा, अजमेर के संयुक्त तत्त्वावधान में ऋषि मेले के अवसर पर वेदगोष्ठी का आयोजन किया जा रहा है। इस गोष्ठी में देश के अनेक भागों से पधारे प्रख्यात वैदिक विद्वान् निर्धारित विषयों पर अपने शोधपूर्ण विचार प्रस्तुत करते हैं। इनमें से चुने हुए शोध–पत्र परोपकारी व वेदपीठ की शोध–पत्रिका के माध्यम से प्रकाशित किये जाते हैं। जिससे जो लोग गोष्ठी में नहीं आ सकते वे भी लाभान्वित होते हैं। विद्वानों को भी इस विषय पर अधिक विचार करने का अवसर मिलता है। गत २८ वर्षों से गोष्ठी का आयोजन निरन्तर किया जा रहा है। अब तक निम्नलिखित बिन्दुओं पर विचार किया जा चुका है:–

| | |
|---|---|
| **१. ऋषि दयानन्द की वेदभाष्य शैली।** | **१२ नवम्बर, १९८८** |
| **२. वेद और कर्मकाण्डीय विनियोग।** | **०५ नवम्बर, १९८९** |
| **३. अथर्ववेद समस्या और समाधान।** | **२७ नवम्बर, १९९०** |
| **४. वेद और विदेशी विद्वान्।** | **१६ नवम्बर, १९९१** |
| **५. वैदिक आख्यानों का वास्तविक स्वरूप।** | **०१ नवम्बर, १९९२** |
| **६. वेदों के दार्शनिक विचार।** | **२८ नवम्बर, १९९३** |
| **७. सोम का वैदिक स्वरूप।** | **१२ नवम्बर, १९९४** |
| **८. पर्यावरण समस्या का वैदिक समाधान।** | **०३ नवम्बर, १९९५** |
| **९. वैदिक समाज व्यवस्था।** | **०१ नवम्बर, १९९६** |
| **१०. वेद और राष्ट्र।** | **२४ अक्टूबर, १९९७** |
| **११. वेद और विज्ञान।** | **०९ अक्टूबर, १९९८** |
| **१२. वेद और ज्योतिष।** | **१० नवम्बर, १९९९** |
| **१३. वेद और पदार्थ विज्ञान** | **०३ नवम्बर, २०००** |
| **१४. वेद और निरुक्त** | **१८ नवम्बर २००१** |
| **१५. वेद में इतिहास नहीं** | **०१ नवम्बर २००२** |
| **१६. वेद में कृषि व वनस्पति विज्ञान** | **३१ अक्टूबर २००३** |
| **१७. वेद में शिल्प** | **१९ नवम्बर २००४** |
| **१८. वेदों में अध्यात्म** | **११ नवम्बर, २००५** |
| **१९. वेदों में राजनीतिक चिन्तन** | **२७ नवम्बर, २००६** |
| **२०. ''वेद सब सत्य विद्याओं की पुस्तक है''** | **१६ नवम्बर, २००७** |
| **२१. वैदिक समाज विज्ञान** | **०५ नवम्बर, २००८** |
| **२२. सत्यार्थप्रकाश का ७ वाँ समुल्लास व वेद** | **२३ अक्टूबर, २००९** |
| **२३. सत्यार्थप्रकाश का ८ वाँ समुल्लास व वेद** | **१२ नवम्बर, २०१०** |
| **२४. सत्यार्थप्रकाश का ९ वाँ समुल्लास व वेद** | **०४ नवम्बर, २०११** |
| **२५. महर्षिदयानन्दाभिमत मन्तव्यः वैदिक परिप्रेक्ष्य** | **१६ नवम्बर, २०१२** |
| **२६. वेद और सत्यार्थप्रकाश का १२वाँ समुल्लास** | **८ नवम्बर, २०१३** |
| **२७.भारतीय मत सम्प्रदाय और वेद** | **३१ अक्टू. १,२ नव., २०१४** |
| **२८.भारतीय मत सम्प्रदाय और वेद** | **२०,२१,२२ नव., २०१५** |
| **२९.दयानन्द दर्शन की वेदमूलकता** | **४,५,६ नव., २०१६** |
| **३०. वेदों में शिक्षा के सिद्धान्त** | **२७,२८,२९ अक्टू., २०१७** |

# अतिथि यज्ञ के होता बनें

**महर्षि दयानन्द सरस्वती की उत्तराधिकारिणी परोपकारिणी सभा आर्य जगत् की एकमात्र ऐसी संस्था है जो सामूहिक सहयोग से ऋषि द्वारा निर्धारित लक्ष्यों की पूर्ति हेतु कृत संकल्प है।**

**सभा निरंतर प्रगति के पथ पर अग्रसर है। निरंतर अबाध गति से ऋषि उद्यान को आकर्षक एवं जन उपयोगी बनाने हेतु नव निर्माण करा रही है, वेद प्रचार पूरे देश में संचालित कर रही है, वेदों का एवं ऋषि ग्रंथों का प्रकाशन निरंतर जारी है।**

***प्रातः एवं सायं दैनिक यज्ञ***– प्रवचन, वेद–पाठ, उपनिषद्, दर्शनादि शास्त्रों की कथा द्वारा वैदिक धर्म का कार्य नियमित रूप से आश्रम में चलता है। ***गुरुकुल***– आर्ष पद्धति से संचालित गुरुकुल में पढ़ रहे ब्रह्मचारी जो साधना एवं समाज सुधार का लक्ष्य लेकर अध्ययनरत हैं उनकी सभी आवश्यकताओं की पूर्ति निःशुल्क की जाती है। ***अतिथि सेवा***– अतिथियों को यथोचित सुविधा प्रदान करने हेतु सभा पूर्णरूपेण प्रयासरत है एवं सभी सुविधाएँ आवास, प्रातराश, भोजन की व्यवस्था निःशुल्क की जाती है। ***गोशाला***– गोशाला में चालीस के लगभग पशु हैं। इससे अधिक का स्थान नहीं है। आश्रमवासियों को गोशाला में उत्पादित दुग्ध का निःशुल्क वितरण किया जाता है। ***वानप्रस्थ एवं संन्यास आश्रम***– वानप्रस्थ एवं संन्यास आश्रम में रहकर साधनारत वानप्रस्थियों एवं संन्यासियों की सभी प्राथमिक आवश्यकताओं की पूर्ति सभा द्वारा निःशुल्क की जाती है। स्वाध्याय एवं साधना की व्यवस्था है। ***विशाल पुस्तकालय***– इसमें दुर्लभ ग्रंथों का संग्रह है, सभा द्वारा शोधकर्ता छात्रों को शोध कार्य हेतु ग्रंथ निःशुल्क प्रदान किए जाते हैं जिनका लाभ स्वाध्यायशील व्यक्ति भी उठा सकते हैं। ***व्यायामशाला***– योग्य शिक्षक द्वारा नगर के युवाओं को ऋषि उद्यान में निःशुल्क व्यायाम प्रशिक्षण दिया जाता है। सभा द्वारा नियुक्त व्यायाम शिक्षक आसपास के गांवों में भी आर्यवीर दल का प्रशिक्षण शिविरों में प्रदान करते हैं।

ये सभी क्रियाकलाप आपके पावन उदार सहयोग से ही संभव हैं। जैसा कि सर्वविदित है कि सभा का आधार ही आकाशीय दानवृत्ति है। आपको प्रतिदिन अतिथि मिलना संभव नहीं फिर अतिथि यज्ञ कैसे किया जाय इसका उपाय है, कुछ राशि प्रतिदिन अतिथि यज्ञ के नाम से निकाल ली जाये और उसको एकत्र कर अतिथि सत्कार में गुरुकुल में भोजन आदि के सहयोग में दे दी जाय।

सभा के धार्मिक क्रियाकलापों एवं आवासीय स्थल ऋषि उद्यान में उपर्युक्त पावन क्रियाकलाप लम्बे समय तक अबाध चलते रहें इसके लिए सभा की योजना है कि प्रतिदिन १० रुपये अथवा प्रतिवर्ष ५ हजार की राशि प्रदान करने वाले उदार यशस्वी दानदाताओं का नाम अतिथि यज्ञ के स्थायी सदस्यों में अंकित किया जाता है ऐसे सज्जनों के नाम का परोपकारी में प्रकाशन भी किया जाता है।

***अनेक 'अतिथि यज्ञ के होता' सदस्यों का आग्रह है, निश्चित तिथि जन्मदिन, विवाह वर्षगांठ या विशेष अवसर पर वे अपनी ओर से संस्था में भोजन कराना चाहते हैं। ऐसे महानुभावों से निवेदन है कि वे अतिथि यज्ञ के होता के रूप में एक दिन के भोजन व्यय की राशि लगभग पाँच हजार एक सौ रुपये भेजते हुए इच्छित दिन का विवरण सूचित करेंगे तो उसका उल्लेख आश्रम के सूचना पट्ट पर किया जा सकेगा।***

यह अल्प राशि आप दैनिक संचय घट में जमा भी कर सकते हैं, वर्ष में लोग अरबों रुपए आग में पटाखे जलाकर व्यय करते हैं, असावधानी से बिजली जलती छोड़ इसे गंवा देते हैं आदि ऐसी छोटी–छोटी असावधानियों को रोक कर हम उसकी बचत राशि इस पावन कृत्य हेतु सभा को वर्ष में आसानी से दे सकते हैं।

सभा शिविरों के आयोजन द्वारा जन सामान्य को ऋषियों की जीवन प्रणाली सिखा रही है। आप इस योजना में स्थायी सदस्य बनकर ऋषि का संकल्प *संसार का उपकार* की पूर्ति में एक स्तम्भ बनकर सभा को सम्बल प्रदान कर सकते हैं।

यदि अपने सामर्थ्य के अनुसार राशि को न्यूनाधिक करना चाहें तो आपकी स्वतन्त्रता है अधिक से अधिक लोग परोपकारिणी सभा से जुड़ सकें, आप ऐसा करके ऋषि दयानन्द के कार्यों को आगे बढ़ाने में सहायक होंगे इसलिए ऐसी राशि निश्चित की है। आप से प्रार्थना है अपना नाम पता और संकल्प लिखकर अवगत करायें और अतिथि यज्ञ के होता बनें। अपनी राशि प्रतिमाह अथवा सुविधानुसार मनीआर्डर/डीडी/चैक द्वारा अथवा स्वयं उपस्थित होकर कार्यालय में जमा करा सकते हैं। आपका दान ८०जी (आयकर की धारा) के अंतर्गत कर मुक्त होगा।

अतः आपसे निवेदन है कि आप भी अतिथि यज्ञ के होता बनिये। जिन महानुभावों ने हमारा निवेदन स्वीकार कर यज्ञ में अपनी आहुति दी है, उनके नाम यहाँ प्रकाशित किये जा रहे हैं।

## अतिथि यज्ञ के होता

**( ०१ से १५ सितम्बर २०१७ तक )**

१. श्री किशोर काबरा, ऋषि उद्यान, अजमेर २. देवमुनि, ऋषि उद्यान, अजमेर ३. श्रीमती उर्मिला उपाध्याय, ऋषि उद्यान, अजमेर ४. डॉ. बद्रीप्रसाद पंचोली, अजमेर ५. श्री अरुण सेन, जयपुर ६. श्री वृद्धिचन्द गुप्त, जयपुर ७. श्री ईश्वरदयाल माथुर, जयपुर ८. श्री माँगीलाल गोयल, अजमेर ९. सुश्री तूलिका साहू १०. श्री एस.के. कोहली, दिल्ली ११. श्री कमल किशोर भार्गव, रामगढ़, जैसलमेर १२. श्री अवनीश कपूर, नई दिल्ली १३. स्वामी विष्णु चैतन्य महाराज, गंगोत्री १४. श्रीमती संध्यापाल, रुड़की, हरिद्वार १५. श्री विजय सिंह गहलोत व श्रीमती कंचन गहलोत, ऋषि उद्यान, अजमेर १६. श्रीमती कौशल्या, बीकानेर १७. श्रीमती सरला मेहता, अजमेर १८. श्री घनश्याम भाई, सूरत १९. स्वामी देवेन्द्रानन्द, ऋषि उद्यान, अजमेर २०. श्रीमती तरुणा गहलोत, अजमेर।

**– परोपकारिणी सभा, अजमेर।**

## गोभक्तों से निवेदन

ऋषि-उद्यान में परमार्थ हेतु गौशाला संचालित है। गौशाला की गौवों के दूध का वितरण सभी गुरुकुलवासियों, संन्यासियों एवं आगन्तुक अतिथियों में निःशुल्क किया जाता है। आप सभी गो-भक्तों एवं उदारमना दानदाताओं से सभा का निवेदन है कि गौवों को उत्तम चारा मिले, इसके लिए जो भी सज्जन चारा दान देना चाहें उनका स्वागत है। यदि आप दूरस्थ प्रदेश के हैं तो कृपया चारे हेतु अनुमानित राशि सभा को ड्राफ्ट/चैक/नगद भेज सकते हैं। यशस्वी दानदाताओं के नाम परोपकारी पत्रिका में प्रकाशित किए जाएँगे। आपका दान गौवों के संवर्धन में सहायक होगा।

## ऋषि-उद्यान में संचालित गौशाला के दानदाता

**( ०१ से १५ सितम्बर २०१७ तक )**

१. श्री किशोर काबरा, ऋषि उद्यान, अजमेर २. श्रीमती उर्मिला उपाध्याय, ऋषि उद्यान, अजमेर ३. डॉ. बद्रीप्रसाद पंचोली, अजमेर ४. श्री माँगीलाल निराला, अट्टा, पानीपत ५. श्रीमती सन्तोष परिहार, अजमेर ६. श्री वृद्धिचन्द गुप्त, जयपुर ७. श्री ओमप्रकाश पारीक, अहमदाबाद ८. श्री एस.के. कोहली, दिल्ली ९. श्री नीरज राठौड़, हरदोई, जालौन १०. श्री आदित्य, रोहतक ११. श्री विजय सिंह गहलोत व श्रीमती कंचन गहलोत, ऋषि उद्यान, अजमेर १२. श्री कैलाश शर्मा, अजमेर १३. श्रीमती कौशल्या, बीकानेर १४. श्री ओमप्रकाश, दिल्ली १५. श्री रामजी लाल अरोड़ा, अजमेर १६. श्रीमती सन्तोष अरोड़ा, अजमेर १७. श्री विराज गुप्ता, जयपुर १८. श्रीमती चन्द्रा खण्डेलवाल, हल्द्वानी १९. श्रीमती सीमा, ऋषि उद्यान, अजमेर २०. श्री शशिभूषण, नई दिल्ली २१. श्रीमती प्रेमलता शर्मा, अजमेर २२. श्री अलादीन, अजमेर २३. श्री पंकज पाराशर, अजमेर २४. ब्र. उत्तम, ऋषि उद्यान, अजमेर २५. श्री आदर्श भल्ला, दिल्ली २६. मीमांसा, सोनीपत २७. श्री मोहित शर्मा, मेरठ २८. श्री ओमपाल सिंह राघव, अलीगढ़ २९. श्री विनोद भाई, सूरत ३०. श्री महेन्द्र प्रसाद, पलवल ३१. श्री उमेश चन्द गुप्ता, भरतपुर ३२. श्रीमती सन्तोष प्रजापत, झाँसी ३३. सुश्री दीपमाला राजावत, अजमेर ३४. श्री रामरतन विजयवर्गीय, अजमेर ३५. श्री पूर्णाराम, बीकानेर ३६. श्रीमती कान्ति देवी व श्री चन्द्रशेखर, अजमेर ३७. श्रीमती तरुणा गहलोत, अजमेर ३८. श्री ब्रजभूषण गुप्ता, पंचकूला।

**– परोपकारिणी सभा, अजमेर।**

---

जो विद्वान् लोग परोपकार बुद्धि से विद्या का विस्तार करने, सुगन्धि, पुष्टि, मधुरता रोगनाशक गुणयुक्त पदार्थों का यथायोग्य मेल अग्नि के बीच में उनका होम कर शुद्ध वायु, वर्षा का जल वा ओषधियों का सेवन करके शरीर को आरोग्य करते हैं वे इस संसार में अत्यन्त प्रशंसा के योग्य होते हैं।

**– महर्षि दयानन्द, यजुर्वेद, भावार्थ ८.५८**

जैसे पवन सब को सुख देता हुआ सब के रहने का स्थान हो रहा है वैसे ही विद्वान् को होना चाहिये।

**–महर्षि दयानन्द, यजुर्वेद, भावार्थ ५.४१**

# शङ्का समाधान - १०

**डॉ. वेदपाल, मेरठ**

**शङ्का-१.** हवन की सामग्री कैसी और कितने प्रकार की होनी चाहिए?

२. समिधा-सामग्री व घृत की क्रमशः कितनी-कितनी मात्रा उपयुक्त होनी चाहिए?

३. यज्ञपात्र किस धातु के सबसे अच्छे होते हैं?

**वन्दना शास्त्री, कन्या गुरुकुल दाधिया।**

**समाधान-१- हवन सामग्री**- हवन सामग्री से अभिप्राय है-हव्य। जिस पदार्थ को अग्नि में हुत किया जाता है वह पदार्थ हव्य है। यज्ञ का मुख्य हव्य दुग्ध तथा दुग्ध से निर्मित पदार्थ दही-घृत-पनीर आदि हैं। इस विषय में वैदेह जनक तथा याज्ञवल्क्य का एक रोचक संवाद शतपथ ब्राह्मण ११.३.१.२-३ में उपलब्ध है-

**''तद् हैतद् जनको वैदेहो याज्ञवल्क्यं पप्रच्छ-वेत्थाग्निहोत्रं याज्ञवल्क्या ३ इति वेद सम्राडिति किमिति पयऽएवेति।**

**यत्पयो न स्यात्। केन जुहुयाऽइति ब्रीहियवाभ्यामिति यद् ब्रीहियवौ न स्यातां केन जुहुयाऽइति याऽअन्याऽओषधयऽ इति....।''**

यहां मुख्य हव्य पय-दूध, उसकी अनुपलब्धि पर ब्रीहियव तथा इनके अभाव में अन्य ओषधियों को प्रतिपादित किया गया है।

यज्ञों के प्रतिपादक श्रौत एवं गृह्यसूत्रों में हव्य के रूप में घृत, आमिक्षा=पनीर, ब्रीहि-यव से निर्मित चरु पुरोडाश वर्णित हैं। गार्हपत्य अग्नि को (कुछ अंश) गार्हपत्यागार से बाहर रखकर किसी स्थाली (भगौना, कुकर आदि) में जल अथवा दूध में ब्रीहि-चावल डालकर पकाई गई हवि चरु है। पकने पर इसके ऊपर घृत अभिधारित करते हैं। यव=जौ अथवा ब्रीहि=चावल को पीसकर उसके आटे से बनाई विशेष प्रकार की रोटी, जिसे तवे के स्थान पर मिट्टी के टुकड़ों (अग्नि के अंगारों पर इन टुकड़ों को विशिष्ट क्रम से रखा जाता है।) पर सेंकी गई-अधपकी रोटी-पुरोडाश है। जिस देवता को हवि दी जाती है उसके लिए निर्धारित कपाल पर यह पुरोडाश बनाया जाता है। जैसे-**विष्णु के पुरोडाश तीन कपाल (श.प. ५.२.४.१) नवकपाल (आश्व. श्रौ. १०.३०.१२, बौधा. श्रौ. २३.२.१८) तथा अग्नि के लिए अष्टाकपाल (श.प. २.४.२.८) पर बनाते हैं।**

**गोभिल गृह्य सूत्र १.७.१९-२० में -''बर्हिषि स्थालीपाकमासाधेध्ममभ्याधायाज्यं संस्कु रुते सर्पिस्तैलन्दधिपयो यवागूं वा।''** यहाँ हव्य के रूप में सर्पि=घृत के साथ तैल का भी उल्लेख है, वैसे श्रौत अथवा नित्य यज्ञों के हव्य रूप में गोभिल से अन्यत्र तैल का वर्णन हमारी दृष्टि में नहीं है। गोभिल का यह वर्णन दर्शपौर्णमास के सन्दर्भ में है, जबकि दर्शपौर्णमास सभी इष्टियों की प्रकृति है।

गोभिल ने वैश्वदेवविधि प्रसंग में पक्व यव=ब्रीहि की आहुति देने के साथ ही अपक्व (अर्थात् अन्न के रूप में ही) अन्न की आहुति का भी विधान किया है। यदि अन्न अपक्व हो तो उसे धोकर हव्य के रूप में उपयोग में लेना चाहिए। तद्यथा-

**''अथ हविष्यस्यान्नस्याग्नौ जुहुयात् कृतस्य वाऽकृतस्य वा। अकृतञ्चेत् प्रक्षाल्य जुहुयात् प्रोदकं कृत्वा''-(गोभिल गृ. १.३.६-७)**

यदि दही, पय अथवा यवागू (यवागू चावल से चरु की तरह ही पकाया जाता है किन्तु चरु कुछ खीर की तरह गाढ़ा रहता है और यवागू में जल की मात्रा अधिक रहने से वह द्रव की तरह पतला पेय पदार्थ की तरह रहता है।) को हव्य के रूप में प्रयोग करना हो तब इन्हें कांस्य पात्र या चरुस्थाली में रखकर इनसे (कांस्य पात्र/चरुस्थाली से) अथवा स्रुवा से (इनकी आहुति अन्न की आहुतियों की तरह हाथ से न देकर) आहुति दे। तद्यथा-

**''अथ यदि दधिपयो यवागूं वा, कंसेन वा चरुस्थाल्या वा स्रुवेण वै वा।''-(गोभिल गृ. १.३.८)**

जहाँ पर हव्य विशेष का स्पष्ट निर्देश न हो, वहाँ आज्य=घृत की आहुति देनी चाहिए। तद्यथा-

**क-''आज्यं जुहुयाद् हविषोऽनादेशे''-(खादिर गृ.**

२.२.१५ )

**ख-''घृतमाज्ये लिङ्गात्''-( कात्या. श्रौ. १.८.३६ )**

**ग-''आज्यमुद्वास्योत्पूयावेक्ष्य प्रोक्षणीश्च पूर्ववदुपयंमनान् कुशानादाय समिधोऽभ्याधाय पर्युक्ष्य जुहुयात्। एष एव विधिर्यत्र क्वचिद्धोमः।'' ( पारस्कर गृ. १.१.४-५ )**

कात्यायन ने अग्निहोत्र के हव्य के रूप में यवागू के साथ सान्नाय्य (दूध व दधि का मिश्रित रूप) का भी प्रतिपादन किया है। तद्यथा-

**''यवाग्वाऽग्निहोत्रहोमः सन्नयतस्तां रात्रिम्।''-( कात्या. श्रौ. ४.२.१७ )**

सूत्रकारों ने काम्ययज्ञों के हव्य का भी प्रतिपादन किया है। उसे वहीं देखना चाहिए।

महर्षि दयानन्द ने होम के द्रव्य-हव्य का वर्णन निम्नवत् किया है-

(**प्रथम-सुगन्धित**) कस्तूरी, केशर, अगर, तगर, श्वेत चन्दन, इलायची, जायफल, जावित्री आदि (**द्वितीय-पुष्टिकारक**) घृत, दूध, फल, कन्द, अन्न, चावल, गेहूँ, उड़द आदि (**तीसरे-मिष्ट**) शक्कर, सहत, छुआरे, दाख आदि (**चौथे-रोगनाशक**) सोमलता अर्थात् गिलोय आदि ओषधियाँ। -(संस्कारविधि, सामान्य प्रकरणम्)

महर्षि द्वारा विहित हव्य सूत्रकारों द्वारा प्रतिपादित हव्य की अपेक्षा व्यापक एवं परिष्कृत है। महर्षि की दृष्टि में हव्य को चार गुणों से युक्त होना चाहिए। इसलिए महर्षि हव्य का विस्तार करते हुए केसर, कस्तूरी, जायफल, जावित्री, शहद आदि को सम्मिलित करते हैं। महर्षि के यज्ञ सम्पादन का प्रयोजन जलवायु की शुद्धि द्वारा पर्यावरण का शोधन-संरक्षण (द्रष्टव्य-पञ्च-महायज्ञविधि) भी है। इसलिए रोगनाशक पदार्थ भी महर्षि ने हव्य के रूप में स्वीकार किए हैं।

**२. समिधा-सामग्री-घृत-** समिधा-सामग्री-घृत की मात्रा के सन्दर्भ में निम्न तथ्य ध्यान देने योग्य हैं-

**क-ञिइन्धी दीप्तौ ( रुधादि. ) धातु से सम् उपसर्ग पूर्वक समित्/समिधा शब्द निष्पन्न होता है। तथा-'इषियुधीन्धिदसिश्याधूसूभ्यो मक्' ( उणादि १.१४५ ) से मक् प्रत्यय होने पर-इध्यते दीप्यते इति इध्मः समित्। यास्कीय निर्वचन है-'इध्मः समिन्धनात्'-( निरुक्त ८.४ )**

समिधा का प्रयोजन अग्नि को प्रदीप्त रखना है, जिससे हुत पदार्थ घृत व सामग्री/हव्य का भली-भांति रूपान्तरण हो सके। अगली आहुति से पूर्व पहले दी गई आहुति गैस में रूपान्तरित होकर वायुमण्डल में प्रविष्ट हो जाए, जिससे श्वास द्वारा प्राणिमात्र लाभान्वित हो सकेंगे। अतः समिधा की मात्रा हुत होने वाले हव्य तथा आहुति देने वाले व्यक्ति (यजमान-क्योंकि आजकल प्रायः देखने में आता है कि छोटे से हवनकुण्ड पर एक यजमान घी की आहुति देता है तथा आठ-दस व्यक्ति सामग्री फेंकते [समर्पण-प्रदान की अपेक्षा फेंकना शब्द ही वहां चरितार्थ होता है] हैं।) की संख्या के अनुपात में न्यूनाधिक होगी।

**समिधा** के सन्दर्भ में यह ध्यातव्य है कि-यह इस प्रकार के वृक्ष की हो जो यज्ञ के उद्देश्य की पूर्ति में सहायक हो सके। वातावरण को दूषित करने वाले नीम आदि की समिधा का निषेध है। साथ ही कीड़ा लगी हुई, मलिन देशोत्पन्न तथा अपवित्र पदार्थों से दूषित समिधा भी त्याज्य है। मोटी-मोटी लकड़ियाँ, फाड़कर बनाई गई छिलका रहित समिधा भी अनुपयोगी है।

चन्दन, पलाश, खदिर, अश्वत्थ, शमी, गूलर, देवदारु, आम आदि की समिधा विशेष उपयोगी हैं। कर्मप्रदीप ८.१७-१८ में समिधा का स्वरूप निम्नवत् है-

**नाङ्गुष्ठादधिका ग्राह्या समित् स्थूलतया क्वचित्।**
**न वियुक्ता त्वचा चैव न सकीटा न पाटिता।।**
**प्रादेशान्नाधिका नोना तथा न स्यात् द्विशाखिका।**
**न सपर्णा न निर्वीर्या होमेषु च विजानता।।**

**गृह्यासंग्रह** १.३२ में उत्कृष्ट समिधा का स्वरूप है-

**अकृशा चैव न स्थूला अशाखा चाऽपलाशिनी।**
**सक्षीरा नाधिका न्यूनाः समिधः सर्वकामदा।।**

वृक्ष की त्वचा में औषधीय गुणों का बाहुल्य रहता है। इसलिए इसे वृक्ष का तेज कहा गया है-**'तेजो ह वा एतद्वनस्पतीनां यद् बाह्य शकलः'।**

अतः समिधा अङ्गुष्ठ प्रमाण मोटी, शाखा एवं पत्तों से रहित, छिलके सहित, वेदी के परिमाण में कटी हुई इतनी

मात्रा में चयन करनी-लगानी चाहिएं, जिससे यज्ञवेदी में इतना तापांश रहे कि घृत व हव्य पड़ते ही गैस में रूपान्तरित हो जाए। यह समिधा की उचित मात्रा कही जा सकती है।

**ख-सामग्री**- सामग्री के पदार्थों का वर्णन इसी लेख में ऊपर किया जा चुका है। यहाँ सामग्री का अभिप्राय घृतातिरिक्त शुष्क पदार्थों के मिश्रण से तैयार हव्य से है। आहुति देते समय सामग्री की मात्रा घृत की मात्रा के बराबर अथवा उससे कुछ अधिक ही व्यावहारिक दृष्टि से उचित होगी। जैसे-एक व्यक्ति घर पर यज्ञ कर रहा है, उसके घृत की आहुति ६ ग्राम की है, तब सामग्री की मात्रा भी ६-८ ग्राम होनी चाहिए। वर्तमान में प्रचलित सामग्री श्रौत एवं स्मार्त यज्ञों में कहीं भी वर्णित नहीं है। इसलिए इसका विवेचन भी वहाँ नहीं है। वहाँ का हव्य इससे पूर्णत: पृथक् है।

इसलिए यज्ञ दैनिक हो अथवा बृहद् (पारायण आदि), यह ध्यान रखकर सामग्री की मात्रा निर्धारित करें कि वेदी का तापांश इतना हो कि आहुति समर्पित करते ही रूपान्तरित/भस्म हो जाए न कि वातावरण धुएं से भर जाए।

**ग-घृत- घृत शब्द 'घृ सेचने' (भ्वादि.) 'घृ क्षरण दीप्त्यो:' (जुहो.) 'घृ प्रस्त्रवणे, स्त्रावणे इत्येके' (चुरादि.) धातु से क्त प्रत्यय होकर निष्पन्न होता है, सेचन, दीप्ति, प्रस्त्रवण इसके गुण हैं। दीप्ति गुण के कारण 'आयुर्वै घृतम्' तक कहा गया है। सुश्रुत सूत्रस्थान ४५.९६-१११ में इसके गुण वर्णित हैं।** आयुप्रद, स्मृति, बुद्धिवर्धक, ओज-तेज प्रदायक, नेत्रों के लिए हितकारक, पित्त-विष-कृमिनाशक आदि इसके मुख्य गुण हैं। स्यात् इसी कारण घृत यज्ञ का मुख्य द्रव्य है।

महर्षि दयानन्द नित्य अग्निहोत्र (प्रत्येक व्यक्ति द्वारा अथवा प्रत्येक गृहस्थ के यहाँ दैनिक होने वाला यज्ञ) के लिए प्रति आहुति छ: माशा (६ ग्राम) न्यूनतम तथा अधिकतम एक छटांक (५८ ग्राम) निर्धारित करते हैं। इस प्रकार दैनिक यज्ञ में लगभग सौ ग्राम घृत की मात्रा होगी। वर्तमान की तरह बड़े-बड़े यज्ञकुण्ड बनाकर पार्कों में किए जाने वाले यज्ञ (जिनमें आठ-दस व्यक्ति सूखी सामग्री का मिश्रण यज्ञकुण्ड में फेंकते हैं।) के लिए यह निर्देश नहीं है। उसके लिए घृत की मात्रा आहुति-दाताओं को दृष्टिगत कर निर्धारित करनी चाहिए।

**३. यज्ञपात्र**-यज्ञपात्र विषयक महर्षि का निर्देश है-''सन्ध्योपासन करने के पश्चात् अग्निहोत्र का समय है। उसके लिए सोना, चाँदी, ताँबा, लोहा व मिट्टी का कुण्ड बनवा लेना चाहिए।.....एक चमसा..... सो भी सोना, चाँदी वा पलाशादि लकड़ी का हो। एक आज्यस्थाली अर्थात् घृतादि सामग्री रखने का पात्र सोना, चाँदी का वा पूर्वोक्त लकड़ी का बनवा लेवे।''

(पञ्चमहायज्ञविधि:)

एतदतिरिक्त संस्कारविधि आदि में भी महर्षि ने उक्त धातु एवं काष्ठ को यज्ञपात्रों के उपादान द्रव्य के रूप में वर्णित किया है। सोना, चांदी श्रेष्ठ होते हुए भी महंगे होने के कारण सामान्य जन के सामर्थ्य से बाहर हैं। तांबा कृमिनाशक गुण तथा क्रय सामर्थ्य सीमा में होने के कारण अन्य धातुज पात्रों से श्रेष्ठ है।

**यद्यपि कांसे के पात्र (गोभिल गृ. १.३.८) भी कहे गए हैं, किन्तु-''कांस्याऽय: सीस त्रपु पित्तलपात्रैर्नाचामेत्''-(यज्ञपार्श्व) इनमें आचमन का निषेध भी प्राप्त होता है। पैठीनसी स्मृति में भी सीसा, लोहा, पीतल ''सीसकायरीति पात्राण्ययज्ञियानि'' के पात्रों को अयज्ञिय कहा है।**

अत: यज्ञपात्र सोना, चाँदी, ताँबा, पलाश, खदिर, विकंकत आदि वृक्ष की लकड़ी के बनाने चाहिए। इनमें भी उत्तरोत्तर गुण न्यूनता से हैं।

---

मनुष्यों को चाहिये कि अपने पुरुषार्थ से सुवर्ण आदि धन को इकट्ठा कर घोड़े आदि उत्तम पशुओं को रक्खें क्योंकि जब तक इस सामग्री को नहीं रखते तब तक गृहाश्रमरूपी यज्ञ परिपूर्ण नहीं कर सकते इसलिये सदा पुरुषार्थ से गृहाश्रम की उन्नति करते रहें।

**- महर्षि दयानन्द, यजुर्वेद, भावार्थ ८.६३**

मनुष्यों को चाहिये कि सदा यज्ञ का आरम्भ और समाप्ति को करें और संसार के जीव को अत्यन्त सुख पहुँचावें।

**-महर्षि दयानन्द, यजुर्वेद, भावार्थ ८.६२**

# ऋषि मेला – २०१७
# स्थान – ऋषि उद्यान, पुष्कर मार्ग, अजमेर
# कार्यक्रम

## शुक्रवार, दिनांक २७ अक्टूबर, २०१७

०५.०० से ०६.३० तक – सूक्ष्म क्रियाएँ–आसन–
प्राणायाम–ध्यान–सन्ध्या

०७.०० से ०९.०० तक – यज्ञ, वेदपाठ।

०९.०० से ०९.३० तक – वेद प्रवचन
**ब्रह्मा** –पं. सत्यानन्द वेदवागीश

०९.३० से १०.०० तक – प्रातराश

१०.०० से ११.०० तक – **ध्वजारोहण व उद्घाटन सत्र**

११.०० से १२.३० तक – **समाज–सुधार–दशा और दिशा**

१२.३० से १४.०० तक – भोजन, विश्राम

१४.०० से १७.०० तक –**राष्ट्र निर्माण में आर्यसमाज की भूमिका**
**भजन–प्रवचन–सम्मान**

१८.०० से २०.०० तक – यज्ञ, सन्ध्या व भोजन

२०.०० से २२.०० तक – **धर्म निरपेक्षता तथा मत–मतान्तर पर विचार – भजन–प्रवचन**

## शनिवार, दिनांक २८ अक्टूबर, २०१७

०५.०० से ०६.३० तक – सूक्ष्म क्रियाएँ–आसन–
प्राणायाम–ध्यान–सन्ध्या

०७.०० से ०९.०० तक – यज्ञ, वेदपाठ।

०९.०० से ०९.३० तक – वेद–प्रवचन
**ब्रह्मा** – पं. सत्यानन्द वेदवागीश

०९.३० से १०.०० तक – प्रातराश

१०.०० से १२.३० तक – **शिक्षा का महत्त्व और चुनौतियाँ**
**भजन–प्रवचन–सम्मान**

१२.३० से १४.०० तक – भोजन व विश्राम

१४.०० से १७.०० तक – **२१वीं सदी और महर्षि दयानन्द**
**भजन–प्रवचन**

१८.०० से २०.०० तक – यज्ञ–सन्ध्या व भोजन

२०.०० से २२.०० तक – **आचार्य धर्मवीर–वेद–प्रचार सम्मेलन, भजन–प्रवचन**

## रविवार, दिनांक २९ अक्टूबर, २०१७

०५.०० से ०६.३० तक – सूक्ष्म क्रियाएँ–आसन–
प्राणायाम–ध्यान–सन्ध्या

०७.०० से ०९.३० तक – यज्ञ, वेदपाठ, **पूर्णाहुति**,

०९.३० से १०.०० तक – वेद–प्रवचन
**ब्रह्मा**–पं. सत्यानन्द वेदवागीश

१०.०० से १०.३० तक – प्रातराश

१०.३० से १२.३० तक – **राष्ट्रनिर्माण में युवाओं की भूमिका**
**भजन–प्रवचन**

१२.३० से १४.०० तक – भोजन व विश्राम

१४.०० से १७.०० तक – **स्वामी श्रद्धानन्द संन्यास एवं गुरुकुलों की प्रासंगिकता**
**भजन एवं प्रवचन**

१८.०० से २०.०० तक – यज्ञ–सन्ध्या व भोजन

२०.०० से २२.०० तक – **धन्यवाद व समापन सत्र**

## वेद–गोष्ठी

**विषय : वेदों में शिक्षा के सिद्धान्त**

२७ अक्टूबर : उद्घाटन सत्र – ११.०० से १२.३० तक
: द्वितीय सत्र – १४.३० से १७.०० तक

२८ अक्टूबर : तृतीय सत्र – १०.०० से १२.३० तक
: चतुर्थ सत्र – १४.३० से १७.०० तक

२९ अक्टूबर : समापन सत्र

**कार्यक्रम में आवश्यकतानुसार परिवर्तन संभव है।**

# संस्था - समाचार

**ऋषि मेले की जोर-शोर से तैयारियाँ** - परोपकारिणी सभा के मन्त्री श्री ओम्मुनि जी की अध्यक्षता में १७ सितम्बर रविवार को प्रात:काल यज्ञ के पश्चात् परोपकारिणी सभा के अधिकारियों, सदस्यों और कर्मचारियों, कार्यकत्ताओं, आर्यवीरों, ऋषि उद्यान में रहने वाले सभी संन्यासी-वानप्रस्थी एवं साधक-साधिकाओं की बैठक बुलाई गई। बैठक का संयोजन श्री वासुदेव आर्य जी ने किया। इस बैठक में सभी महत्त्वपूर्ण विषयों पर गहन विचार-विमर्श के बाद विभिन्न कार्यों का उत्तरदायित्व अलग-अलग समितियाँ बनाकर वितरित किया गया।

**सभा द्वारा प्रकाशन कार्य**- परोपकारिणी सभा के वैदिक साहित्य प्रकाशन एवं विक्रय विभाग द्वारा महर्षि दयानन्द कृत चार पुस्तकों का बढ़िया कागज एवं नई साज-सज्जा के साथ पुन: प्रकाशन किया गया है। वैदिक नित्यकर्म विधि- २५ रुपये, महर्षि द्वारा लिखित वेदाङ्ग प्रकाश के अन्तर्गत व्याकरण ग्रन्थ:- पारिभाषिक- ४० रुपये, नामिक- ५० रुपये, अव्ययार्थ: - १५ रुपये।

**अतिथि**- महर्षि दयानन्द चित्र दीर्घा एवं वस्तु प्रदर्शनी देखने, विद्वानों-संन्यासियों से मिलने, यज्ञ-प्रवचन से लाभ लेने, भ्रमण तथा प्रचार हेतु ब्रह्मचारी, संन्यासी, वानप्रस्थी, विद्वान्, गृहस्थ स्त्री-पुरुष-बच्चे आते रहते हैं। पिछले पन्द्रह दिनों में दिल्ली, जयपुर, बयाना, मुजफ्फरनगर, पुष्कर, ग्वालियर, रोजड़, मेरठ, बांसवाड़ा, भरतपुर, मुम्बई, होशंगाबाद आदि स्थानों से कुल २३ अतिथि ऋषि उद्यान आये। आगन्तुक अतिथियों में दयानन्द सेवाश्रम संघ से आचार्य जीववर्धन शास्त्री जी ऋषि उद्यान पधारे।

रविवारीय सायंकालीन प्रवचन में कन्या गुरुकुल, शिवगंज की **आचार्या डॉ. सूर्यादेवी चतुर्वेदा जी** ने कहा कि वेद ज्ञान-विज्ञान का आधार कहा जाता है। यह बात हम परम्परा से सुनते चले आ रहे हैं। यज्ञ में हम जिस मन्त्र से पाँच घी की आहुति देते हैं, उसमें प्रार्थना है कि हम ब्रह्मवर्चस् से युक्त होवें। चारों वेदों में 'नदी' वाचक शब्द ३७ बार आये हैं। उनमें एक नाम सरस्वती भी है। सरस्वती का अर्थ- जल, विद्युत, सूर्य की किरणें, नदी, वाणी, नस-नाड़ियाँ आदि होता है। प्रकरण के अनुकूल अर्थ लिये जाते हैं। जैसे नदी अपने किनारों को तोड़ते हुए बहती है, वैसे ही ज्ञान अपने आसपास के अज्ञान को नष्ट करता है। इसलिये हम ज्ञान-विज्ञान से युक्त होकर बलवान् बने और और अविद्या आदि दु:ख के कारणों को दूर करें।

प्रात:कालीन प्रवचन में **आचार्य सत्यजित् जी** ने कहा कि परमात्मा हमें बन्धन में रखना नहीं चाहता। उसने हमें शरीर और इन्द्रियाँ बाँधने के लिये नहीं, अपितु मुक्ति प्राप्त करने के लिए दिये हैं।

प्रात:कालीन प्रवचन में ब्रह्मचारियों के अनुरोध पर **स्वामी मुक्तानन्द जी** ने संकल्प-पाठ में पढ़े जाने वाले शब्दों की व्याख्या की। **आचार्य सोमदेव जी** के आध्यात्मिक व्याख्यान हुए। सायंकालीन सत्र में **उपाचार्य सत्येन्द्र जी** ने ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका पर विस्तार से चर्चा की। शनिवार सायंकालीन सत्र में श्री आर्येश्वर जी ने अपने विचार प्रस्तुत किये। रविवारीय प्रात:कालीन सत्संग में **ब्र. रमण जी** ने भजन सुनाया- 'दाता तेरे सुमिरन का वरदान जो मिल जाये.....।' **ब्र. रोशन जी** ने भजन सुनाया- 'तेरी पनाह में हमें रखना.....'।

# विशेष सूचना

परोपकारी-पत्रिका के सभी पाठकों एवं आर्यजनों से निवेदन है कि डॉ. धर्मवीर जी से सम्बन्धित कोई पत्र, चित्र, ऑडियो, वीडियो आदि आपके पास हों तो कृपया हमें सूचित करें।

डॉ. धर्मवीर जी के जीवन पर प्रकाशित होने वाली स्मारिका के लिए जिन भी महानुभावों के पास उनसे सम्बन्धित कोई भी संस्मरण, विचार या कविता आदि हों, वे भी अतिशीघ्र सभा को भेजने का कष्ट करें, ताकि आपके लेख स्मारिका में प्रकाशित किये जा सकें।

**सम्पर्क सूत्र- ०९४६०४२११८३, ०१४५-२४६०१६४**

**ई-मेल-psabhaa@gmail.com**

**परोपकारिणी सभा, दयानन्द आश्रम, केसरगंज, अजमेर-३०५००१ ( राज. )**

# आर्यजगत् के समाचार

**१. वेद-प्रचार व सामवेद पारायण यज्ञ सम्पन्न**- आर्यसमाज अजमेर में वेद प्रचार सप्ताह तथा सामवेद पारायण यज्ञ दिनांक ७ से १० सितम्बर २०१७ तक हर्षोल्लास के साथ सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर डॉ. विष्णुमित्र वेदार्थी (बिजनौर), भजनोपदेशक श्री सहदेव बेधड़क-शिकोहपुर, बागपत तथा यज्ञ की ब्रह्मा डॉ. सूर्यादेवी चतुर्वेदा-आचार्या कन्या गुरुकुल शिवगंज, सिरोही, राज. तथा वेदपाठी गुरुकुल की ब्रह्मचारिणियों का आगमन हुआ।

**२. प्रवेश प्रारम्भ**- गुरुकुल महाविद्यालय ज्वालापुर, हरिद्वार, उत्तराखण्ड में एम.ए. संस्कृत-२ वर्ष, योगाचार्य-२ वर्ष, पी.जी. डिप्लोमा योग-१ वर्ष, संस्कृत की पूर्व मध्यमा एवं उत्तर मध्यमा, शास्त्री एवं आचार्य परीक्षा तथा बी.एड. आदि पाठ्यक्रम संचालित हैं। कक्षा ६ से १० तक की मान्यता उत्तराखण्ड विद्यालयी शिक्षा परिषद्, रामनगर नैनीताल द्वारा प्राप्त है। ब्रह्मचारी छात्रों को आवासीय व्यवस्था के अन्तर्गत छात्रावास में ही रहना होगा। कक्षा ६ से शास्त्री, आचार्य (आवासीय) कक्षाओं के लिए प्रवेश शुल्क रु. ५१००/- देना होगा। इसके अतिरिक्त भोजन व्यय रु. १५००/- मासिक, पुस्तकें, ड्रैस, बिस्तर आदि का वार्षिक प्रबन्ध अभिभावक को करना होगा। आवास एवं शिक्षा नि:शुल्क प्रदान की जाती है। **सम्पर्क**- ०९२१९४०६०७४, ०९२१९४०६०७७

**३. यजुर्वेद पारायण यज्ञ**- आर्यसमाज कालांवाली, हरियाणा द्वारा १५ से १९ सितम्बर २०१७ तक यजुर्वेद पारायण यज्ञ का आयोजन किया गया। यज्ञ के ब्रह्मा स्वामी विदेह योगी-कुरुक्षेत्र, वेदपाठी अमित, तुषार ब्रह्ममिथिलम हिसार से व भजनोपदेशक पं. उपेन्द्र-चण्डीगढ़ से थे। प्रधान श्री सुरतसिंह पूनिया ने आभार व्यक्त किया।

**४. समिति का गठन**- आर्यसमाज के प्रचार-प्रसार हेतु 'वेद प्रचार एवं समाज कल्याण समिति' कल्याण नगर, मेरठ के नाम से संस्था का रजिस्ट्रेशन कराया गया। संस्था महर्षि दयानन्द सरस्वती के बताये हुये मार्ग पर चलते हुये, अपने समस्त कार्यों को गति प्रदान करेगी। इस संस्था के समस्त सिद्धान्त, नियम, उपनियम आर्यसमाज के अनुसार ही होंगे।

**५. अभिनन्दन समारोह सम्पन्न**- महर्षि दयानन्द शिक्षण केन्द्र झज्जर में स्व. महाराम जी की पुण्यतिथि के अवसर पर यज्ञ-भजन-प्रवचन-अभिनन्दन समारोह का अयोजन किया गया। मुख्य अतिथि डॉ. होशियार सिंह रहे।

**६. सम्मान समारोह मनाया**- दि. १० सितम्बर २०१७ को आर्यसमाज राजगढ़, अलवर, राज. में पं. नारायण सहाय दीक्षित स्मृति न्यास की ओर से उनके १०१वें जन्मदिवस के अवसर पर एक भव्य समारोह का आयोजन किया गया। इस अवसर पर ८० वर्ष की आयु से अधिक वृद्धजनों को एवं विशिष्ट कार्यकर्त्ताओं को शाल ओढ़ाकर सम्मानित किया, साथ ही वैदिक परिवारों के २५ मेधावी छात्र-छात्राओं को जिन्होंने बोर्ड परीक्षा में ५० प्रतिशत से अधिक अंक प्राप्त किये, उन्हें नकद पारितोषिक प्रदान किया।

### चुनाव समाचार

**७. आर्यसमाज बिजयनगर, अजमेर, राज.** के चुनाव में **संरक्षक**- श्री कन्हैयालाल अनन्त, **प्रधान**- श्री कृष्णगोपाल आर्य, **मन्त्री**- श्री जगदीश प्रसाद, **कोषाध्यक्ष**- श्री कैलाशचन्द्र को चुना गया।

**८. आर्यसमाज नकुड़, जि. सहारनपुर, उ.प्र.** के चुनाव में **प्रधान**- श्री अभयसिंह सैनी, **मन्त्री**- श्री भूपेन्द्र कुमार सिंघल, **कोषाध्यक्ष**- डॉ. शिव कुमार को चुना गया।

### शोक समाचार

**९**. आर्यसमाज के सक्रिय कार्यकर्ता, परोपकारिणी सभा के अनन्य सहयोगी **श्री सूरजमल त्यागी** का देहावसान ६ सितम्बर को हो गया। प्रधानाध्यापक के रूप में आप जहाँ भी रहते, ऋषि दयानन्द का चित्र अवश्य लगाते थे। आपने अपनी वसीयत में लिखा था कि मेरी मृत्यु पर कोई रोये नहीं और देहान्त के तीसरे दिन बाद मेरे लिये कुछ ना किया जाये। इससे ऋषि के प्रति आपकी श्रद्धा स्पष्ट परिलक्षित होती है। श्री सूरजमल जी की श्रद्धाञ्जलि सभा में परोपकारिणी सभा के मन्त्री श्री ओममुनि जी वानप्रस्थी ने उनके प्रति श्रद्धा-सुमन अर्पित किये।

**१०**. दि. १६ सितम्बर २०१७ को हिसार, हरियाणा में ६५ वर्षीय **श्री उमरावसिंह आर्य** का देहान्त हो गया। उनके गले में कैन्सर था। अन्तिम संस्कार सायंकाल को वैदिक रीति से पूर्ण हुआ।

**११**. वेद गुरुकुलम् निगम् नीडम पिडिचेड, तेलंगाना के संचालक आचार्य उदयन के पिता **श्री लक्ष्मीनारायण** का दस दिन की अस्वस्थता के पश्चात् दि. १८ सितम्बर २०१७ को देहान्त हो गया।

**१२.** दि. ०८ सितम्बर २०१७ को आर्यसमाज मन्दिर खलीलाबाद, जि. सन्त कबीर नगर के संरक्षक व पूर्व प्रधान **श्री सुन्दरप्रसाद आर्य** का निधन हो गया। आर्यजी का अन्त्येष्टि संस्कार आचार्य ब्रह्मदेव शास्त्री-गुरुकुल टंकारा के पौरोहित्य में सम्पन्न हुआ।

**परोपकारी परिवार की ओर से हार्दिक श्रद्धाञ्जलि।**

**पृष्ठ संख्या ८ का शेष भाग .....**

नजरों से बाहर है। यदि मेरी दृष्टि में रहे, मेरी सीमा में रहे तो मुझे पता रहता है, मैं जान सकता हूँ। दुनिया में ऐसी कौन सी चीज है जो ईश्वर की सीमा से, दृष्टि से बाहर है? उसे अपने से कुछ बाहर देखने की जरूरत हो तो आँख लगानी पड़ेगी। योगदर्शनकार ने जब यह कहा कि योगी अन्दर परमात्मा को देखना चाहता है तो फिर एक आँख तो लगानी ही पड़ेगी न, नहीं तो परमात्मा दिखेगा कैसे? क्योंकि दिखने का सामर्थ्य किसमें है? आँख में। नहीं तो **'तदा द्रष्टुः स्वरूपेऽवस्थानम्'** का क्या अर्थ करोगे? जब जीवात्मा अपने अन्दर देखेगा तो परमात्मा दिखाई देगा, पर बिना आँख के कैसे देखेगा? तब बात समझ में आती है कि देखने का सामर्थ्य आँख में नहीं है, आत्मा में है और आत्मा अपने सामर्थ्य को भौतिक पदार्थों में संक्रमित करता है। जैसे कोई व्यक्ति साधनों में अपने ज्ञान, बुद्धि को संक्रमित करता है तब वे उपकरण अपने आप चलते हुए दिखाई देते हैं। अपने आप तो वो चलते नहीं हैं, आप चलाते हो।

उपकरण आपकी विशेषता नहीं है, आपकी दुर्बलता है। हम समझते हैं कि कार शायद हमारे लिये विशेषता है। गलत है। ये हमारे न चलने की क्षमता का परिचय है। मैं चश्मा लगाता हूँ, यह मेरी विशेषता थोड़े ही है। ये मेरी आँख की कम दृष्टि का प्रमाण है तो जितने मेरे साधन हैं, ये साधन मेरी विशेषता नहीं हैं, ये मेरी योग्यता नहीं हैं, ये मेरी अधिकता नहीं हैं, ये मेरी दुर्बलता के परिचायक हैं। मैं हाथ के बिना नहीं कर सकता, क्योंकि जहाँ हाथ पहुँचता है, वहाँ मैं नहीं हूँ। यदि वहाँ मैं होता तो मुझे हाथ की आवश्यकता ही नहीं पड़ती। शरीर के अन्दर की जो क्रियाएँ होती हैं, उनमें आप कौन से हाथ काम में लेते हो? ये सोचना कि बिना हाथ के क्रिया नहीं हो सकती, ये हम अपने को देखकर सोचते हैं। मूल चीज सामर्थ्य है, चैतन्य है, अस्तित्व है, उपस्थिति है। जहाँ मेरी उपस्थिति है, वहाँ मुझे दूसरे की आवश्यकता नहीं है, चाहे जड़ हो या चेतन। जहाँ मैं नहीं हूँ, वहाँ मुझे दूसरा व्यक्ति चाहिये। एक बार एक व्यक्ति से मैंने पूछा कि दो आदमी मिल कर एक आदमी से ज्यादा बलवान् होते हैं कि नहीं होते हैं? और दो के मुकाबले में चार आदमी ज्यादा बलवान् होते हैं कि नहीं होते हैं? चार के मुकाबले में सौ ज्यादा बलवान् होते हैं कि नहीं होते हैं? वह बोले, जी होते हैं। मैंने कहा कि एक के मुकाबले में दो भगवान् हुए तो बलवान् हुए कि नहीं हुए? भाई, एक आदमी से दो आदमी का धन, बल, ज्ञान सब कुछ बड़ा होगा न? और यदि भगवान् भी दो हो जाएं तो ताकत दोगुनी हो जाएगी।

## लेखकों से निवेदन

परोपकारी में उन लेखों, कविताओं, रचनाओं को स्थान दिया जाता है, जो **मौलिक व अप्रकाशित** हों। अतः सभी लेखकों से निवेदन है कि वे अपनी उन्हीं रचनाओं को भेजें जो मौलिक व अप्रकाशित हों।

अनेक लेखक मौलिक व अप्रकाशित रचना तो भेजते हैं, किन्तु उसे एक साथ **अनेक पत्रिकाओं को भेजते हैं।** अतः लेखकों से यह भी निवेदन है कि वे कृपया परोपकारी को वे ही रचना भेजें, जो अन्य पत्रिकाओं के लिए न भेजी हों। परोपकारी में छपने के बाद यदि अन्यत्र भेजना चाहें तो यह उनकी इच्छा पर निर्भर करता है।

कृपया लेख के अन्त में अपना **पूरा पता व चल-दूरभाष संख्या अवश्य लिखें।** लेख के स्वीकृत-अस्वीकृत होने की सूचना चल-दूरभाष पर संक्षिप्त संदेश द्वारा प्रेषित कर दी जायेगी। **परोपकारिणी सभा द्वारा रचनाओं के लिए किसी प्रकार का भुगतान नहीं किया जाता है।**

रचयिता अपनी रचना की एक प्रति कृपया अपने पास रखकर भेजें, क्योंकि **अस्वीकृत रचनायें डाक द्वारा लौटाई नहीं जाती हैं।** स्वीकृत रचना परोपकारी के किसी आगामी अङ्क में देखी जा सकती है। रचना के प्रकाशन में छः माह या अधिक समय भी लग सकता है, अतः कृपया तब तक रचना को अन्यत्र न भेजें। **-संपादक**